विचार दृष्टि

वर्ष : 3 अंक : 8 जुलाई–सितम्बर : 2001 रुपये : 15

भारत-पाक शिखर वार्ता

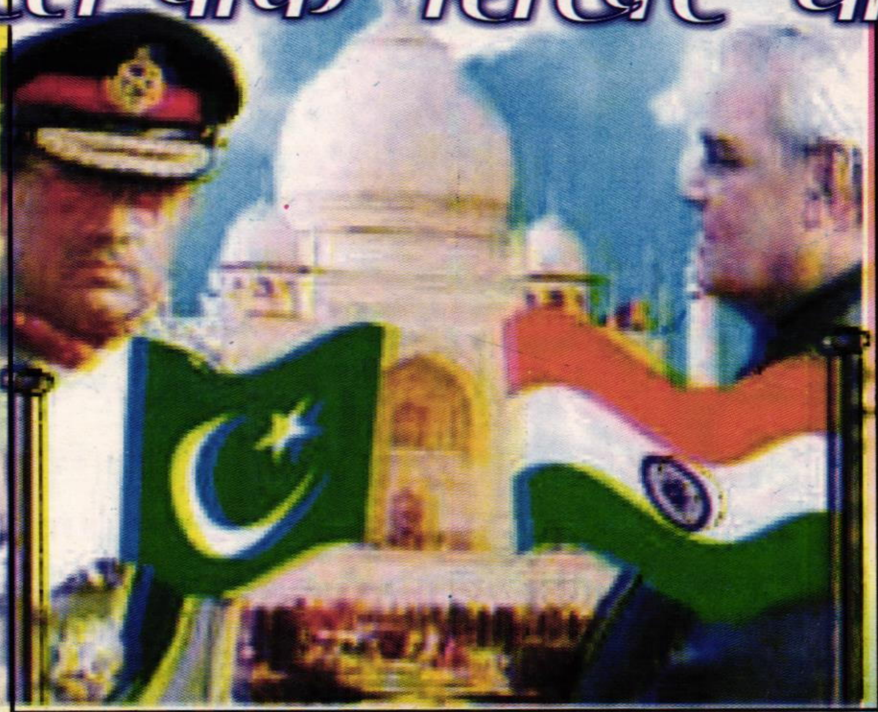

जयललिता की वहशियाना हरकतें

- नेपाल के शाही परिवार की हत्या की गुत्थी अनसुलझी
- देवयानी : एक प्रेमिका जो बदकिस्मत निकली
- कबीर की 600 वीं जयन्ती पर विशेष
- 'गदर' के बहाने धर्मान्ध मानसिकता का क्षुद्र इज़हार
- दलितों को सामाजिक नेतृत्व की जरूरत

New Millennium

With

an excellent technical training

at

KUMARTEC COMPUTERS

in the field of

Assembled PC at very reasonable price of Rs. 14,400

Free Interent Browsing for all Advance Courses

Software Training - Dos, Unix, Windows'95, '98, '2000. Accounting Packages - Tally, Easty Languages - C, C++, Orcle, Java etc.

Hardware Training - Card Level Assembling, Fault Finding, Installation, Networking in pear to pear and Client Server Based (NT, Novell)

Cyber cafe, Colour Printing, Designing, E-mail, DTP, Book Publishing, Screen Printing, Data Punching

Contact : U-208, SHAKARPUR, BEHIND BANK OF BARODA, VIKAS MARG, DELHI-92 ☎ : 2230652

E-mail : ranjansudhir@hotmaillcom

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित त्रैमासिकी)

वर्ष-3 जुलाई-सितम्बर, 2001 अंक-8

-----पत्रिका परिवार -----

सम्पादक व प्रकाशकः सिद्धेश्वर

कार्यकारी सम्पादक : डॉ. शिवनारायण

सह सम्पादक : कामेश्वर मानव

सहा.सम्पादकः मनोज कुमार

सम्पादन सहायक : अंजलि

विधि सलाहकारः न्यायमूर्ति श्री बी.एल.यादव

शब्द संयोजक : शशि भूषण

साज-सज्जा : दिलीप कुमार सिन्हा

मुख्य प्रकाशकीय कार्यालय : दिल्ली

ई.-50, एफ.एफ.सी., झंडेवालान

रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली-110055

अन्य कार्यालय : विज्ञापन व प्रसार

दिल्ली : सुधीर रंजन, प्रबंध सम्पादक

कुमारटेक कम्प्यूटर्स, यू.-207, शकरपुर,

दिल्ली-92, ☎: 2230652

ब्यूरो प्रमुख

मुम्बई : वीरेन्द्र यांज्ञिक ☎: 8897962

कलकता : जितेन्द्र धीर

चेन्नई : डॉ. मधु धवन

तिरूवनन्तपुरम : डा. रति सकसेना

बंगलोर : पी.एस.चन्द्रशेखर, ☎:6568867

हैदराबाद : डॉ. ऋषभदेव शर्मा

भुवनेश्वर : शशि भूषण मिश्रा

प्रशासकीय कार्यालय :

'दृष्टि' 6, विचार विहार, यू - 207, शकरपुर

विकास मार्ग , दिल्ली -110092

, फोन -011-2230652, फैक्स -011-2225118

संपादकीय व पत्राचार कार्यालय :

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1 दूरभाष : 0612-228519

E-mail-ranjansudhir@hotmail.com

मुद्रकः प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड

एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया,फेज-2, नई दिल्ली-20

मुख्य वितरक :

कुमार बुक सेन्टर, ए०-67, क्रिश्चन

कॉलोनी, पटेल चेस्ट, नई दिल्ली

दूरभाषः 7666084 (P.P.)

मूल्य : एक प्रति 15 रुपये

आजीवन सदस्य : 1000 रुपये

रचना और रचनाकार

	पृष्ठ
पाठकीय पन्ना :	2
संपादकीय :	3
आवरण कथाः	
शिखरवार्ता के सकारात्मक पहलू	5
विचार-प्रवाह :	7
भारत-नेपाल सम्बन्धों का स्वरूपः मेदिनी राय	
समाज :	
दलितों को सामजिक नेतृत्व की जरूरत -मोहनदास नैमिशराय	8
अर्थव्यवस्थाः	13
आर्थिक उदारीकरण और हमारी सम्प्रभुता	
मुद्दाः	17
'गदर' के बहाने धर्मान्ध मानसिकता	
राजनीतिक दृष्टिः	18
दलों की नजर उ० प्र० के चुनाव पर	
समाचार-विश्लेषणः	19
ममता जी कहीं की नहीं..................	19
कई समस्याओं से जूझते जार्ज	20
आन्ध्रप्रदेशः	25
पृथक तेलंगाना आन्दोलन..........	25
क्षमा कीजिए मैं माँगकर नहीं पढ़ता	26
गांव-ज्वारः	27
मात्रात्मक प्रतिबन्ध/कृषि मजदूरों को पेंसन	27
साक्षात्कारः	28
डाकुओं की रूह तक कांप जाती है.......	28
श्रद्धांजलिः	
- डा. जगदीश गुप्त का महाप्रयाण	29
साहित्यः	30
कबीर का समय और समाज-डॉ० शंकर प्रसाद	
मैंने यहां वहां खुले आँगन में कुछ फूल उगाएं है........	
कबीर की खोज.............	34
साहित्य-सम्मेलन लूट-खसोट का अड्डा	
शब्दों के कठघरे में खड़े बेकसूर मुजरिम से एक जिरह... नचिकेता.	38
सम्मान : शहनाई सम्राट को भारत-रत्न	40
कहानी :	
मजहब नहीं सिखाता........कृष्ण कुमार राय	41
कहानी एक हवेली की : उर्मिला शुक्ल	44
शख्सियतः	46
रामेश्वर नाथ तिवारी....डॉ० सुरेन्द्र जमुआर	
सेहत-सलाहः	47
लापरवाही भी दृष्टिहीनता का कारण	47
याददाश्त बढ़ाई जा सकती है	48
मछली की अनूठी दवा-डॉ० राजेन्द्र गौतम	49
गतिविधियाँ............................	50
विज्ञान-जगतः	
कम्प्यूटर क्रांति और...........-वासुदेवन	53
काव्य-कुँजः	54
ग़लीच में ज़िन्दा रहने की कला	
कला-संस्कृतिः	
विकासोन्मुखी शिक्षा में नाटकों की भूमिका	56
फिल्मावलोकनः	57
देश-विदेशः	58
शाही परिवार की हत्या..........	59
नेपाल में बढ़ते माओवादी.......	60
देवयानीः एक बदकिस्मत प्रेमिका	61
खेल-खिलाड़ीः	63

पत्रिका-परामर्शी

1. पदमश्री डॉ. श्यामसिंह 'शशि', दिल्ली
2. प्रो. रामबुझावन सिंह, पटना
3. श्री जियालाल आर्य, पटना
4. गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव, अहमदाबाद
5. डॉ बाल शौरि रेड्डी, चेन्नई
6. श्री जे.एन.पी.सिन्हा, दिल्ली
7. कविवर गोपी वल्लभ सहाय, पटना
8. श्री बांकेनन्दन प्रसाद सिन्हा, पटना

रचनाकार के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

सम्पादकीय प्रासंगिक

इस अंक का आवरण भी सुरूचिपूर्ण एवं मनोरम है! अंक का अंतरंग भी कई स्तरीय रचनाओं से समृद्ध है। आपका **'सम्पादकीय'** प्रासंगिक एवं आपकी लोकतांत्रिक चेतना की गंभीरता का अभिव्यंजक है! लेकिन एक बात स्पष्ट है कि संवैधानिक संस्थाओं के संकट के लिए हम सभी जवाबदेह हैं! हम दूसरों की नैतिकता के प्रति बहुत आग्रही हैं-लेकिन अपनी नैतिकता का कोई ख्याल नहीं! बिना संघर्ष से मिले लोकतंत्र की यही नियति होती है! पारम्परिक मूल्यों के प्रति युवापीढ़ी का दृष्टिकोण युवाओं के लिए ही नहीं, वयस्कों के लिए भी पठनीय निबंध है! **'बिहार की समकालीन कविता धारा'** समकालीन बिहारी कवियों की रचनाधर्मिता का एक संक्षिप्त, परन्तु प्रमाणिक दस्तावेज है। **डॉ० रेखा मिश्र** का शोधपरक निबंध **रीति कविता और अहम कविता का रचना विधान** परिचयात्मक ज्यादा- विश्लेषणपूर्ण कम है। मुक्तक सापेक्ष नहीं निरपेक्ष होता है। डॉ० राय की कहानी रोमांटिक अंदाज में घर-परिवार के द्वार पर संकट का दस्तक है। शेष रचनाएं भी उपयोगी हैं। स्तरीय संपादन के लिए बधाई!

प्रो०लखनलाल सिंह 'आरोही', बांका

स्वर्णकिरण पर अभिनंदन ग्रंथ

लमगोड़ा के विषय में आपने मेरा लेख **विचार दृष्टि** में प्रकाशित किया, इसके लिए आभारी हूँ। बिहार के ही अन्य प्राध्यापक-साहित्यकार हैं डॉ० स्वर्णकिरण उनसे आप परिचित न हों ऐसा हो ही नहीं सकता, क्योंकि वे साहित्य और अध्यापन दोनों ही क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर चुके हैं और अब भी कर रहे हैं। उनके **अभिनंदन ग्रंथ** के लिए उतरांचल की ओर से जो शुभाशंसा लिखने का मुझे अवसर मिला उसकी एक प्रति आपकी सेवा में भेज रहा हूँ। **विचार दृष्टि** का विचार अधिकाधिक क्षेत्रों से है। मुझे आशा है कि आप बिहार के इस सुप्रसिद्ध साहित्यकार को अपने मूल्यवान त्रैमासिकी के माध्यम से विस्तृत बनाने में योगदान देंगे।

बाबूराम वर्मा, देहरादून

सृजनात्मक कार्यों पर प्रकाश

नालन्दा जिले के हरनौत प्रखण्ड स्थित बसनियावाँ गावं में **नई राष्ट्रीय कृषि नीति** विषयक संगोष्ठी का रपट पढ़कर बड़ा संतोष मिला। कृषि तथा गांव से जुड़ी समस्याओं पर जब कभी चर्चा पढ़ने को मिलती है तो पढ़ने की इच्छा को बल मिलता है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक स्वयंसेवी संगठन कार्यरत हैं। **राष्ट्रीय विचार मंच** ने अपने कार्यकलापों को गांवों तक ले जाने का जो प्रयास किया है वह अनुकरणीय है तथा पत्रिका में **गांव-ज्वार** स्तम्भ देकर आपने सृजनात्मक कदम उठाया है जो स्तुत्य है।

श्याम नारायण, इलाहाबाद

पत्रिका के विभिन्न स्तम्भों में छपी रचनाओं पर आपके विचारों व प्रतिक्रियाओं का स्वागत होगा क्योंकि वे ही हमारे सम्बल हैं। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं। हमें इस पते पर लिखें-
पाठकीय पन्ना, विचार दृष्टि
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

भ्रष्टाचार पर प्रहार आवश्यक

विचार दृष्टि के अंक -7 में भारतीय राजनीति में बढ़ते भ्रष्टाचार पर जो सामग्रियां प्रस्तुत की गयी हैं वह आम जनमानस को तो कुरेदती ही हैं, साथ ही राजनीतिक के धुरंधर चालबाजों तथा घपलेबाजों पर प्रहार भी करती हैं। ऐसी रचनाओं तथा रपटों से प्रबुद्धजनों को भी एक अच्छी खासी मानसिक खुराक मिलती है। मेरी बधाई स्वीकार करें।

अभिषेक धुत्रे, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

जरा इनकी भी सुनें

1. मैं खुले दिमाग से भारत जा रहा हूँ। कश्मीर, सियाचिन या अन्य मुद्दों पर गुप्त समझौता नहीं होगा। **-पाक राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ**

2.हरितप्रदेश के निर्माण के लिए साम, दाम, दंड, भेद हर नीति पर अमल किया जाएगा।
-अजित सिंह, अध्यक्ष, राष्ट्रीय लोकदल

3.राजनीतिक दलों की गलत नीतियां ही देश के विभिन्न भागों में आतंकवादियों के पनपने का कारण है। भ्रष्ट एवं स्वार्थी राजनेताओं को सम्मान देना घातक है।
-मनिंदरजीत सिंह बिट्ठा

4. अटल और मुशर्रफ दोनों देशों के बीच की समस्याओं के समाधान के लिए संजीदा कोशिशें करें।**-संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान**

5. तमिलनाडु में संवैधानिक तंत्र बिल्कुल चरमरा गया है और यहां की स्थिति राष्ट्रपति के शासन लगाने लायक है।

- राजग संयोजक जार्ज फर्नांडीस

6. करुणानिधि तथा केन्द्र के दो मंत्रियों की गिरफ्तारी में कुछ भी गलत नहीं हुआ। तमिलनाडु सरकार ने सही कानूनी कार्रवाई की है।
- तमिलनाडु मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता

जयललिता ने लोकतंत्र को कलंकित किया

पिछले दिनों तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री और द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम के अध्यक्ष **एम० करुणानिधि**, उनके मंत्रिमंडल के दो पुराने सहयोगियों, पूर्व मुख्य सचिव के० ए० नाम्बियार, उनके सुपुत्र एम० के० स्टालिन, चेन्नई के मेयर तथा केन्द्रिय मंत्रिपरिषद के दो वर्तमान मंत्री **मुरासोली मारन** एवं **टी० आर० बालू** को जिस प्रकार बिना सम्मन के गिरफ्तार कर सबों को जेल भेजा गया वह जयललिता की तानाशाही और बर्बरता का परिचायक है। 12 करोड़ रुपये के फ्लाई ओवर घोटाले के सिलसिले में तमिलनाडु की वर्तमान सजायाफ्ता मुख्यमंत्री के इशारे पर वहाँ के पूर्व मुख्यमंत्री को उनके ओलिवर रोड स्थित निवास से रात के दो बजे **पुलिस** घसीट कर ले गयी तथा दोनों केन्द्रीय मंत्रियों को करुणानिधि की गिरफ्तारी में अड़ंगा डालने के आरोप में मारा-पीटा गया और उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा गया यह अपने ढंग की अनूठी और इस तरह की पहली घटना है। जयललिता ने अपनी सामंती मानसिकता और तानाशाही प्रवृति का परिचय अपने पिछले मुख्य मंत्रित्वकाल में भी दे चुकी है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह सत्ता के मद में चूर होकर स्वयं को तमिलनाडु की साम्राज्ञी बन बैठी है। बदले की भावना से की गई कार्रवाई से यह स्पष्ट है कि जयललिता ने लोकतांत्रिक तौर-तरीकों को पूरी तरह विस्मृत कर कानून को अपने हाथ में ले लिया है और जब कोई राज्य सरकार लोकतान्त्रिक मानदण्डों को ताक पर रखकर कार्य करे तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने में किसी तरह का संकोच नहीं किया जाना चाहिए।

माने-माने संविधानविद् **सुभाष कश्यप** की राय में संविधान के अनुच्छेद 257 में साफ कहा गया है कि **"राज्य की कार्यकारी शक्ति का इस्तेमाल इस तरह से किया जाना चाहिए कि उससे संघ की कार्यकारी शक्ति का उल्लंघन न हो। चूंकि दोनों केन्द्रीय मंत्री संघ की शक्ति के मूर्त रूप हैं इसलिए उनकी गिरफ्तारी से तो संघ की गरिमा ही खतरे में पड़ गई है।"** ऐसे में तमिलनाडु सरकार की मुख्यमंत्री **जयललिता** ने ऐसा करके लोकतंत्र को कलंकित किया है। आश्चर्य तो तब होता है जब कहा जाता है कि प्रधानमंत्री ने दूरभाष पर जयललिता से जानकारी हासिल करनी चाही तो कई प्रयास के बाद भी उसने बात नहीं की और इस पर भी तुर्रा यह कि जयललिता ने अपनी सरकार की इस बर्बर कार्रवाई को सही करार दिया है और अपनी मन्नत पूरी होने पर गुरुवयूर मंदिर में पूजा की तथा एक हाथी अर्पित किया। यही नहीं तमिलनाडु की राज्यपाल **फातिमा बीबी** का इस पूरे प्रकरण पर चुप्पी साधे रहना भी कम आश्चर्यजनक नहीं है। जबकि राज्यपाल का काम राज्य के महत्वपूर्ण घटनाक्रमों के बारे में केन्द्र को अवगत कराते रहने का है किन्तु राज्यपाल ने खासतौर से तब भी केन्द्र को अवगत कराना जरूरी नहीं समझा जबकि दो केन्द्रीय मंत्रियों को बेवजह उत्पीड़ित और गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। इस सन्दर्भ में यहाँ यह कहना अनुचित नहीं होगा कि एक सजायाफ्ता जयललिता को आनन-फानन में वहाँ की राज्यपाल फातिमा बीबी ने मुख्यमंत्री का आमंत्रण देकर उन्हें 14 मई को शपथ दिलाया गया जिसे चुनाव आयोग ने विधान सभा का चुनाव लड़ने से अयोग्य घोषित किया था। राज्यपाल ने संविधान के अक्षरों को देखा किन्तु उसकी आत्मा को नजरअंदाज कर गयीं। देश की जनता को उसी समय आश्चर्य हुआ था, और उन्हें संदिग्ध नजर से देखा जा रहा था।

भारत के प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति की नाराजगी से इस घटना की गंभीरता को समझा जा सकता है। पूर्व प्रधानमंत्री **विश्वनाथ प्रताप सिंह** तथा **चन्द्रशेखर** ने जयललिता सरकार के इस कदम को लोकतंत्र के सभी मूल्यों का उल्लंघन बताया है। प्राय: सभी प्रमुख राजनीतिक दलों ने भी गिरफ्तारी के तरीके की निन्दा करते हुए इसे बदले की कार्रवाई करार दिया है।

जयललिता के जंगलराज के परिणामस्वरूप तमिलनाडु में आपातकाल-सी स्थिति हो गई। डी०एम०के० के 24 हजार कार्यकर्त्ताओं की गिरफ्तारी हुई तथा 24 वर्षीय कार्यकर्ता पुमलाई ने करुणानिधि की गिरफ्तारी के विरोध में अपने थालर गांव में आग लगाकर आत्महत्या कर ली है। करुणानिधि की पत्नी दयालूआमल को हिरासत में लिया गया। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री के पद पर आसीन होने के कुछ ही बाद जयललिता ने अपने प्रमुख छह राजनीतिक विरोधियों को जेल में डाला था।

भारत के एक ऐसे राज्य, जहाँ एम० करुणानिधि ने कई वर्षों तक मुख्यमंत्री के पद पर रहकर तमिलनाडु प्रशासन को एक निश्चित दिशा और गति-प्रदान की, उसकी जब यह दशा उसी के राज्य के मुख्यमंत्री द्वारा हो सकती है तो आम नागरिक की तो बात ही मत पूछिए। तमिलनाडु की सजायाफ्ता मुख्यमंत्री जयललिता को यदि ऐसी

परिस्थिति में भी रोका नहीं गया तो परिणाम भयंकर होंगे **क्योंकि** जिस प्रकार उसने जनतान्त्रिक मूल्यों को अराजकता के एक दौर में धकेल दिया और राज्य की पूरी प्रशासनिक मशीनरी कबीलाई गिरोहों में तब्दील होती दिखाई दे रही है उससे तो जयललिता की तानाशाही के उस बदनुमा चेहरे की झलक मिलती है, जो हमारे आधी सदी पुराने और दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के पीछे दुबका रहता है। दुर्भाग्य से लोकतंत्र की इस तानाशाही विकृति का प्रतिकार करने में देश खुद को असमर्थ पा रहा है। कारण कि राजनीति की इस उच्छृंखलता ने सही और गलत का भेद मिटा दिया है और न्याय को न्याय नहीं रहने दिया है। करुणानिधि पर भी भ्रष्टाचार के आरोप हो सकते हैं, जिसके लिए उनके खिलाफ मामला चलना ही चाहिए, किन्तु इसके लिए जब कायदों को ताक पर रखा जाए, तो इसे राजनीतिक बदले का निकृष्टतम उदाहरण ही माना जाएगा। जयललिता ने तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री करुणानिधि से अपनी पुरानी दुश्मनी को साधने के लिए जिस राजनीतिक प्रतिशोध का सहारा लिया है वही कल हम देश के दूसरे हिस्सों में भी देख सकते हैं। यह कबीलाई जुनून हमारे लोकतन्त्र के लिए सबसे बड़ा खतरा साबित हो सकता है। इसलिए देश के सामने सबसे बड़ा सवाल यह है कि राजनीतिक सत्ता का यह शर्मनाक दुरुपयोग कैसे रुके और राजनेता तथा नौकरशाह का गठजोड़ कैसे खत्म हो। यह तय करने की चुनौती आज देश के सामने है।

देश के समक्ष खड़ी इस चुनौती का सामना सत्ता तथा विपक्ष में बैठे राजनेताओं को करना है। पर यहाँ तो कुर्सी की लालच में सारे सिद्धान्त और मूल्यों-मर्यादाओं को ताख पर रख दिया जा रहा है। कांग्रेस ने सजायाफ्ता जयललिता को मुख्यमंत्री के रूप में स्वीकार करके अपनी गैर जिम्मेदाराना राजनीति का परिचय देने में जो कमी बाकी रखी थी वह उसने राज्यपाल फातिमा बीबी को तमिलनाडु से वापस बुलाने के केन्द्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय तथा तमिलनाडु में राष्ट्रपति शासन लगाने का विरोध करके पूरी कर दी है। तमिलनाडु के घटनाक्रम को साधारण समझकर कांग्रेस ने लोकतान्त्रिक मूल्यों और संवैधानिक मर्यादाओं की धज्जियां उड़ाई है। ऐसा लगता है कि कांग्रेस न तो आपातकाल की मानसिकता से मुक्त हो पाई है और न तो अपनी पुरानी गलतियों से सबक लेने के लिए तैयार है। यह हाल है वैसी पार्टी का, जो कई दशक तक केन्द्र में सत्तासीन रही है। उसे आखिर इस पर तो विचार करना ही चाहिए कि मुख्यमंत्री की कुर्सी किसी को व्यक्तिगत दुश्मनी साधने के लिए नहीं बल्कि जनता की सेवा के लिए दी जाती है। समय का तकाजा है कि तमिलनाडु में जो घटनाएं घटी तथा सत्ता पर बैठे हुकमरान के आचरण दिखे उसकी तमाम राजनीतिक दलों को कूटनीतिक नफा-नुकसान से उपर उठकर निन्दा करनी चाहिए क्योंकि न्यायिक प्रक्रिया शालीनता के परित्याग की इज़ाज़त कभी नहीं देती।

बहरहाल **जार्ज फर्नांडीस** के नेतृत्व में गठित राजग के तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का मानना है कि संघीय व्यवस्था की रक्षा के लिए तमिलनाडु सरकार के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचता। प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य के अनुसार तमिलनाडु के सभी दलों का मत है कि वहाँ अनुच्छेद 356 लगाया जाना चाहिए किन्तु राज्यसभा में राजग का बहुमत न होने तथा कांग्रेस व अन्य विपक्षी दलों के विरोध के कारण वहाँ राष्ट्रपति शासन लगाना भी आसान नहीं। वैसे केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने तमिलनाडु में राष्ट्रपति शासन न लगाकर जयललिता सरकार को संविधान के अनुसार राज्य संचालन करने की चेतावनी दी। इधर, जयललिता ने भी अपनी कुर्सी हिलती देखकर तथा केन्द्र के साथ टकराव को टालते हुए दोनों केन्द्रीय मंत्रियों के खिलाफ लगाए गए आरोप वापस ले लिए। आखिरकार जयललिता ने करुणानिधि को भी चार दिन जेल में रखने के बाद मानवता की दुहाई देते हुए रिहा किया पर मामले जारी रहेंगे। जेल से बाहर आने पर संवाददाताओं को अपनी व्यथा का बयान देते वक्त करुणानिधि दो बार फूट-फूट कर रो पड़े। चलो, फिलहाल टकराव तो टला। लेकिन यह याद रखने लायक बात है कि कैसे किसी एक व्यक्ति की सनक देश को संवैधानिक संकट में डाल सकती है। संविधान का प्रारूप पेश करते समय **डॉ० भीमराव अम्बेडकर** ने कहा था कि **अगर इस नए संविधान के तहत स्थिति बिगड़े तो इसका कारण यह नहीं होगा कि संविधान खराब है, बल्कि यह कि इंसान बुरा है।** जो हो, तमिलनाडु की इस घटना ने यह साबित तो कर ही दिया है कि आजादी के बाद जनता के हितों की लगातार उपेक्षा कर रहे राजनेताओं ने नौकरशाहों तथा अपराधी व असामाजिक तत्वों से साठ-गांठ कर जो मकड़जाल बनाया है उसमें अब वे खूद फंसने लगे हैं। तमिलनाडु की पुलिस जिस दरिंदगी से करुणानिधि तथा दो केन्द्रीय मंत्रियों के साथ पेश आई आखिर यह सब उन्हीं राजनेताओं की तो देन है। पुलिस की वह लाठी जो आए दिन आमजन पर पड़ती है वह अब राजनेताओं पर भी गिरने लगी है। ऐसा लगता है कि पुलिस की नजर में **कानून सबके लिए अब एक-सा दिखने लगा है।**

sidheshwarprasad@hotmail.com

आगरे की शिखर वार्ता के सकारात्मक पहलू

विचार कार्यालय, नई दिल्ली

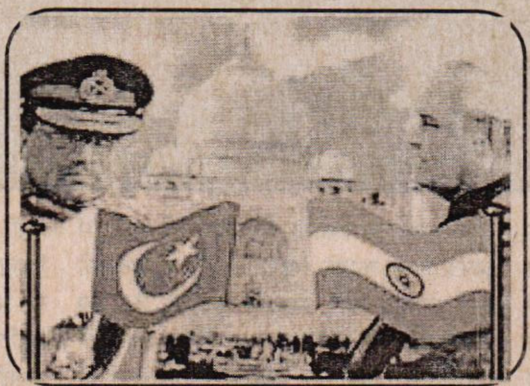

भारत के प्रधान मंत्री के आमंत्रण पर पाक के राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ के साथ कई मसलों पर 15 जुलाई को आगरा में प्रस्तावित वार्ता की अटकलें लगायी जा रही हैं। जनरल मुशर्रफ की भारत यात्रा और प्रधानमंत्री के साथ वार्ता से कोई सार्थक नतीजे निकल पाएंगे या नहीं यह तो आनेवाला समय बताएगा पर इतना अवश्य है कि इस शिखर वार्ता से परस्पर व्यापार के क्षेत्र में कुछ बड़ी उपलब्धियाँ हासिल हो सकती हैं, जिससे दोनों देशों को काफी फायदा होने की गुंजाईश है। इस वार्ता के पूर्व जहाँ पाक के जनरल मुशर्रफ ने अपने आभार पत्र के माध्यम से वार्ता में कश्मीर मुद्दे को केन्द्र में रखने का प्रस्ताव किया है, वहीं प्रधानमंत्री वाजपेयी ने पाकिस्तान के साथ समग्रता से बातचीत की पहल करके कश्मीर के मुद्दे को केन्द्र से हटा दिया है। लेकिन जब समग्रता से बात होगी तब कश्मीर अन्य मुद्दों में से एक होगा। हलाँकि यह भी सच है कि कश्मीर समस्या इतनी उलझी हुई है कि उसका हल इतना आसान नहीं। हाँ, वार्ता से एक वातावरण बन सकता है, कुछ गलफहमियाँ दूर हो सकती हैं। इतना ही नहीं बल्कि जो आतंकवादी संगठन कश्मीर में खुलकर खून-खराबा करने में लिप्त हैं उनकी धार भी मुशर्रफ के भारत आगमन से कुंद हो जाएगी। जैसे ही भारत पाक के बीच समझौते की प्रक्रिया प्रारम्भ होगी कश्मीर में आतंकवादियों का मनोबल टूटेगा और वे स्वत: बेअसर होते चले जाएंगे। मुशर्रफ के भारत की धरती पर कदम रखने के साथ ही आतंकवादियों के वे तमाम तर्क धराशायी हो जाएंगे जिसके आधार पर वे पिछले दस -बारह वर्षों से कश्मीरी जनमानस को बरगला रहे हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि कश्मीर की 90 लाख की आबादी में तीन हजार हथियार बन्द आतंकवादी हैं जिन्होंने कश्मीरी जनता की रातों की नींद और दिन का चैन छीन लिया है और हमारी 4 लाख फौज को उलझा रखा है।

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि भारत ने पाक को बिना शर्त बातचीत के लिए बुलाया है। इसलिए पाक को भी अपने अड़ियल रवैए से बाज़ आना चाहिए। दोनों देशों के बीच एक समझ विकसित होने से कश्मीर मुद्दे को भी देखने का एक अलग दृष्टिकोण विकसित होगा। इसलिए बातचीत के लिए एक दूसरे के प्रति नरमी और सहयोग का रवैया आवश्यक है। यही वह वक्त है जब पाकिस्तान को भारत से हाथ मिलाने का अच्छा अवसर मिला है। किन्तु पाकिस्तान के तन्त्र की बिडम्बना यह है कि वहाँ के जनमानस पर सैनिक तानाशाह का प्रभाव ज्यादा रहा है। वहाँ की जनता, अफसरशाही तथा न्यायपालिका आदि क्षेत्रों में सेना में कार्यरत अथवा सेवा निवृत सैनिक अधिकारियों की जबर्दस्त पकड़ है। सैनिक शासकों ने वहाँ के कट्टरपंथी साम्प्रदायिक ताकतों के साथ मिलकर भारत विरोधी कार्रवाइयों को ही प्रोत्साहित किया है। यही कारण है कि वहाँ भूट्टो अथवा शरीफ के वायदों का समादर नहीं हुआ और आज भी वहाँ के कट्टरपंथी भारत के विरोध में जहर उगल रहे हैं। स्वयं मुशर्रफ भी सैनिक सत्ता सम्भालने के बाद एक ओर जहाँ कश्मीर की आतंकवादी गतिविधियों को जहाद बताकर हवा दे रहे थे तो दूसरी ओर लगातार यह बयान देते आ रहे थे कि वे भारत के साथ कहीं भी किसी भी समय वार्ता करने को तैयार हैं। इसलिए भारत ने पाकिस्तान को वार्ता का आमंत्रण देकर न केवल मुशर्रफ की कुटनीति और मंसूबों पर पानी फेर दिया है बल्कि भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर फिर एक बार कुटनीति में पाकिस्तान को मात दे दी है। पाकिस्तान की लोकतान्त्रिक सरकार को बन्दूक के बल पर सत्ताच्यूत करके सैनिक शासन करने के बाद जिस विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी ने बड़े जोर-शोर से पाकिस्तान का बहिस्कार किया था वह सभी अब धीरे-धीरे वहाँ का यथार्थ समझकर वापस बातचीत और लेन-देन के रास्ते खोल रहे हैं।

इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि वार्ता करने के लिए भारत पर अमेरिका का दबाव था परन्तु हमसे ज्यादा दबाव पाकिस्तान के उपर रहा है। हमसब इस बात से अवगत हैं कि पाकिस्तान तो अमेरीका के रहमोकरम पर चल रहा है। अगर अमरीका उसे सहयोग नहीं करे तो वह दिवालिया हो जाएगा। पाकिस्तान पर 30 अरब डॉलर का विदेशी कर्ज है जबकि उसका विदेशी मुद्रा भंडार एक अरब डॉलर तक सीमित हो गया है। यह उम्मीद की जा रही है कि भारत पाक दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय मसलों पर बातचीत होगी। इसलिए जनरल मुशर्रफ की भारत यात्रा को पाकिस्तान के नाजुक आंतरिक हालातों के सन्दर्भ में परखा जाना अत्यन्त आवश्यक है। पाकिस्तान को इस संकट की घड़ी में यदि कहीं से कोई ठोस राहत मिल सकती है तो भारत के साथ सम्बन्ध सुधारना ही वह रास्ता है। भारत ने थोड़ी देर से ही सही लेकिन समय रहते जनरल मुशर्रफ को पाकिस्तान को सम्भालने में सहयोग दिया है। क्योंकि पाकिस्तान ने पाँच दशकों की भारत विरोधी राजनीति और अफगान युद्ध के बल पर जिन धार्मिक कट्टरपंथियों को खड़ा किया आज वही पाकिस्तान का राजनीतिक हथियार इस्लामी कट्टरपंथ स्वयं उसके नियंत्रण से बाहर हो चुका है। इसलिए वक्त का तकाजा है कि समय रहते वहाँ के शासक वार्ता की गम्भीरता को

> हाँ, वार्ता से एक वातावरण बन सकता है, कुछ गलतफहमियाँ दूर हो सकती हैं। इतना ही नहीं बल्कि जो आतंकवादी संगठन कश्मीर में खुलकर खून-खराबा करने में लिप्त हैं उनकी धार भी मुशर्रफ के भारत आगमन से कुंद हो जाएगी।

समझें। वैसे पाकिस्तान की आर्थिक सेहत और स्थिरता में निश्चय ही भारत के हित निहित हैं। भारत के प्रधानमंत्री ने स्थिति की नब्ज को एकदम सही पकड़ा है। सम्भवत: पाकिस्तान के वर्तमान शासक को भी यह समझने का प्रयास किया है कि पाक का भविष्य भारत के साथ टकराव में नहीं, सुलह में है। हलाँकि साम्प्रदायिक शक्तियाँ चाहे भारत की हो या पाकिस्तान की वे नहीं चाहतीं कि भारत और पाक के बीच दोस्ती का वातावरण बने और भारत-पाकिस्तान अपनी समस्याएं मिल बैठकर हल करें। दोनों देशों के कट्टरवादी संगठनों का एक मात्र उद्येश्य सम्बन्धों के विकास में किसी न किसी प्रकार का अवरोध खड़ा करना है। यही कारण है कि दोनों देशों की साम्प्रदायिक शक्तियाँ कश्मीर समस्या का निदान युद्ध में देखती हैं जबकि राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी कोई बात नहीं है। दोनों देशों की अधिकांश जनता शांति, सद्भाव और भाईचारा चाहती है। भारत-पाक सम्बन्धों की बड़ी समस्या कश्मीर है और इसका निदान निकाले बिना सामान्य सम्बन्धों की दिशा में नहीं बढ़ा जा सकता। इस दृष्टि से भारत-पाक की यह वार्ता पिछले 54 वर्षों के आपसी कटू सम्बन्धों के मद्दे नजर अच्छी खबर कही जाएगी।

पिछले दिनों वाजपेयी की ईरान यात्रा के दौरान ईरान से भारत तक पेट्रोलियम पाईप लाईन बिछाने का मसला प्रमुखता से उठा था। इस पाईप लाईन को भारत लाने के लिए पाकिस्तान से गुजरना होगा। यदि शिखर वार्ता में इस पाईप लाईन के बिछाने पर सहमति हो जाती है तो भारत पेट्रोलियम पदार्थों के आयात में भारी धनराशि की बचत तो होगी ही, साथ ही पाकिस्तान से पाईप लाईन गुजरने के कारण पाक को भी सालाना किराए के रूप में करीब 60 करोड़ डॉलर का लाभ होगा जो उसकी खस्ताहाल अर्थव्यवस्था के लिए काफी महत्वपूर्ण होगा। प्रस्तावित वार्ता से दोनों देश इस फायदे को पूरी तरह भुनाने की स्थिति में आ गए हैं। इसलिए इसका स्वागत किया जाना चाहिए।

पाक के पूर्ववती सैनिक शासकों फील्ड मार्शल अयूब खां, याह्या खां एवं जियाउल हक का अनुसरण कर जनरल मुशर्रफ ने भी भारत के साथ प्रस्तावित शिखर वार्ता के पहले संविधान सम्मत सर्वोच्च पाक के राष्ट्रपति पद का लबादा ओढ़ लिया है ताकि पाकिस्तान की जनता और विश्व समुदाय में भी उनकी स्वीकार्यता तानाशाह के रूप में नहीं बल्कि राष्ट्रनायक की बन जाए। यही नहीं उन्होंने पाक के राष्ट्रपति का पदभार ग्रहण करने के साथ ही सेना प्रमुख तथा मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में अपनी हनक कायम रख पाकिस्तान में सत्ता की सभी लगाम अपने हाथ में कर ली है। अब उनके हाथों में नागरिक और सैनिक दोनों ही सत्ता सिमट गयी है। अब सम्भवत: वहां के कतिपय आतंकवादी संगठन चाहे वह **लश्करे-तोएबा** हो या **जमायते इस्लामी** के विरोध को दबाने में वे पूरी तरह सक्षम हो गए हैं। अब शिखरवार्ता से कम से कम इस परिणाम की आशा तो की ही जा सकती है कि करगिल के बाद लाहौर यात्रा से उपजी भावना पर जो बर्फ जम गयी थी, वह पिघले। वैसे भी पाकिस्तान में हुए ताजे बदलाव से सकारात्मक संकेत मिलने लगे हैं। इधर भारत के प्रधानमंत्री ने भी भारत-पाक रिश्तों के सन्दर्भ में भावी रणनीति तय करने के लिए सर्वदलीय बैठक कर एक अच्छा संकेत दे रखा है।

> **यह सच है कि आधी सदी से भी अधिक समय से चली आ रही कश्मीर समस्या का निदान रातों रात इस शिखर वार्ता से नहीं निकल सकता किन्तु यह उम्मीद तो की ही जा सकती है कि घाटी के पाक प्रायोजित आतंकवाद, सीमा पर तनाव में कमी तथा मुक्त व्यापार जैसे मुद्दों पर कुछ न कुछ समझौते अवश्य होंगे।**

दोनों देशों के शासन प्रमुखों की अपनी-अपनी सीमाएं हैं और वे सीमाएं इतनी संकरी और पतली हैं कि दोनों में से कोई भी इधर-उधर कदम बढ़ाने की सोचेगा तो उनके लिए मुसीबतें पैदा होने की संभावनाएं सुनिश्चित हैं। इसलिए यह आशा की जानी चाहिए कि इस वार्ता के सुखद और समाधान कारक नतीजे निकलेंगे। वैसे भी दोनों देशों के बीच सम्पर्कों में 54 वर्षों से जारी ठहराव को तोड़ने का प्रयास अपने आप में एक उल्लेखनीय घटना है। भारत-पाक की समस्या के समाधान खोजने के लिए आखिर बातचीत तो करनी ही होगी और किसी भी बातचीत में विश्वास ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व होता है। दोनों देशों के शत्रुभाव की निस्सारता से उन्हें अविश्वास पर पार पाने का महत्व समझना होगा। इसलिए दोनों देशों को इसे मान्य करते हुए उसकी सफलता की कामना करनी चाहिए। भारत ने वक्त के साथ जो कदम उठाया है, उस पर उंगली उठाना न्यायोचित नहीं क्योंकि उसने अपने इस कदम से राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता दी है।

भारत-पाक शिखर वार्ता का समय जैसे-जैसे निकट आता जा रहा है राष्ट्रपति मुशर्रफ की मुश्किलें बढ़ती जा रही है। कुछ छोटी-मोटी राजनीतिक पार्टियों को छोड़ उनके द्वारा बुलाई गई बैठक में अन्य कोई दल शामिल नहीं हो पा रहा है। हलाँकि वे दल वार्ता के खिलाफ नहीं है। वे जनरल राष्ट्रपति मुशर्रफ की पात्रता का ही विरोध कर रहे हैं। दूसरी ओर वहाँ की सेना में आपसी मतभेद की सुगबुगाहट सुनाई पड़ रही है। प्रस्तावित शिखर वार्ता की सफलताओं के लिए कम से कम सौहार्दपूर्ण माहौल आवश्यक है। अब यह तो पाकिस्तान के अधिकारियों तथा वहाँ की जनता पर यह निर्भर करता है कि वे माहौल बिगाड़नेवालों से कितनी सतर्कता दिखाते हैं। जहाँ तक भारत का सवाल है यहाँ की सरकार तथा जनता पाक राष्ट्रपति मुशर्रफ के स्वागत की जोरदार तैयारी में लगी है और यहाँ यह आशा की जा रही है कि शिखर वार्ता के परिणाम स्वरूप दोनों देशों के संबंधों में काफी सुधार होगा।

यह सच है कि आधी सदी से भी अधिक समय से चली आ रही कश्मीर समस्या का निदान रातों-रात इस शिखर वार्ता से नहीं निकल सकता किन्तु यह उम्मीद तो की ही जा सकती है कि घाटी के पाक प्रायोजित आतंकवाद, सीमा पर तनाव में कमी तथा मुक्त व्यापार जैसे मुद्दों पर कुछ न कुछ समझौते अवश्य होंगे। सियाचिन ग्लेशियर से अपनी-अपनी व्यवस्था पर हो रहे प्रतिकूल प्रभाव में सुधार आ सकता है। सियाचिन में बड़ी संख्या में तैनात फौजों पर दोनों देशों का कम से कम पाँच-पाँच करोड़ रुपये औसतन प्रतिदिन जो खर्च हो रहे हैं वह तो नहीं होंगे। कुल मिलाकर प्रस्तावित शिखर वार्ता के अच्छे परिणाम निकलेंगे, ऐसी आशा की जानी चाहिए।

(इस आवरण कथा के लेखक सम्पादक स्वयं हैं।)

शाही परिवार की हत्या के बाद भारत-नेपाल संबंधों का स्वरूप क्या होगा?

❑ डॉ० मेदिनी राय

नेपाल के राजमहल **नारायण हिती** राजदरबार में विगत 1 जून की रात शाही परिवार की जघन्य हत्या के बाद नेपाल के सिंहासन पर **नरेश ज्ञानेन्द्र** विद्यमान हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि वे राजशाही के हिमायती हैं और दूसरी ओर जनता में उनकी स्वीकार्यता उनके अग्रज स्व० नरेश वीरेन्द्र की तरह नहीं हैं। फिर नेपाल में चीन समर्थक माओवादी जिस प्रकार देश के विभिन्न भागों में अपना प्रशासन स्थापित करते जा रहे हैं उस स्थिति में महाराजाधिराज और कोइराला सरकार में यदि सामंजस्य नहीं होता है तो प्रजातान्त्रिक सरकार की सफलता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा होना स्वाभावकि है।

वर्तमान परिस्थिति में एक और प्रश्न बार-बार उठाया जाने लगा है कि अब भारत-नेपाल सम्बधों का स्वरूप क्या होगा? हलॉकि यह सच है कि पिछले कई दशक से सरकार तथा जनता दोनों स्तर पर सांस्कृतिक, धर्मिक और सामाजिक सम्बधों में काफी सामीप्य और मजबूरी रही है किन्तु नेपाल में हुए हादसे ने भारत और यहाँ की जनता के लिए कई संदेश छोड़े हैं। वहां के घटनाक्रम के बाद और बीच-बीच में छिटपुट रूप से नजर आने वाले भारत विरोध को गभीरता से लेना होगा क्योंकि जहां वर्तमान नरेश ज्ञानेन्द्र चीन के समर्थक कहे जाते हैं वहीं चीनी समर्थक माओवादियों की गतिविधियां वहां तेज हो रही हैं। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के मालवीय शांतिशोध केन्द्र के निदेशक प्रो. प्रियशंकर उपाध्याय का मत है कि ऐसी घड़ी में न केवल भारतीय कूटनीति के नियताओं की बल्कि भारतीय संचार माध्यमों और वहां की सिविल सोसाइटी को भी नेपाल के सन्दर्भ में एक बहुत सतर्क, संयमित और सकारात्मक भूमिका निभानी होगी। यह कहने में हमें संकोच नहीं कि नेपाल के प्रति हमारा रवैया उतना संतुलित नहीं है जितना होना चाहिए। आम नेपाली जनता को कभी-कभी हमारा रवैया साम्राज्यवादी जैसा क्यों लगने लगता है। हमारे नेताओं तथा भारत के नागरिकों के बयान से नेपाल की जनता के मन में कभी कभार यह शंका उत्पन्न होने लगती है कि कहीं हम अपना आधिपत्य नेपाल पर तो नहीं करना चाहते। हम इस बात से अवगत हैं कि मौजूदा विश्व में जातीय समूहों के उभार का दौर चल रहा है, जहां हर कोई अपनी पहचान के लिए बेहद आग्रही है, हमें इसका ख्याल रखना चाहिए।

राजपरिवार हत्याकांड

दूसरी बात यह है कि भारत-नेपाल सम्बन्धों के स्वरूप पर विचार करते वक्त हमें यह भी देखना होगा कि चीन के साथ नेपाल का सम्बन्ध अच्छा है। इस दृष्टि से भरतीय कूटनीति को सतर्क रवैया अपनाना होगा खासकर तब जब पड़ोसी नेपाल में कुछ हादसा हो गया है। आज जब नेपाली जनता शोक से पीड़ित है, ऐसे समय में उसे यह भरोसा दिलाने की जरूरत है कि भारत की जनता और भारत सरकार अपनी शक्ति के अनुरूप नेपाल की मदद करने से पीछे नहीं हटेगी। वैसे नेपाल में संवैधानिक राजतंत्र और जबावदेह लोकतन्त्र का समर्थन भारत ने सदैव किया है जबकि नेपाल में माओवादी शक्तियाँ संवैधानिक राजशाही को कतई नहीं पसंद करती। भारत की जनता एवं यहाँ के शासक नेपाल की सार्वभौमिकता, क्षेत्रीय अखण्डता और राष्ट्रीयता का आदर एवं सम्मान करती आ रही है। नेपाल के आर्थिक-सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से सशक्त और स्थिर होने पर भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए भी लाभकारी होगा।

भारत-नेपाल सम्बन्धों को लेकर भारत की चिंता इसलिए भी बढ़ जाती है कि नेपाल के नए ज्ञानेन्द्र **राजतन्त्रवादी** माने जाते हैं और कुछ वर्ष पूर्व उन्होंने भारत-विरोधी बयान दिया था, दूसरे उनके बेटे **पारस** के सम्पर्क नेपाल के कैसिनों की दुनिया से बताए जाते हैं। इसलिए आने वाले दिनों में भारत को राजमहल की दुरभिसन्धियों पर कड़ी नजर रखनी होगी। वर्तमान नेपाली उथल-पुथल में भारत ने बहुत संयम और सतर्कता बरती है यह काबिले तारीफ है। त्रासदी के बाद बदलती स्थिति में नेपाल के समक्ष खड़ी चुनौतियों में भारत को हर सम्भव सहयोग प्रदान करना होगा क्योंकि राजनीतिक अस्थिरता का माहौल नेपाल को बहुत नुकसान पहुँचा सकता है और दूसरी ओर भारतीय राष्ट्रीय हितों से नेपाल के जरिए या नेपाली भूमि पर किसी भी प्रकार का खिलवाड़ दोनों देशों के सम्बन्धों में ऐंसे व्यवधान ला सकता है जो दोनों के हितों के विरूद्ध चला जाए। हिमालय की गोद में बसा नेपाल चीन और भारत के बीच शांति क्षेत्र की जगह **अस्थिर शांति क्षेत्र** बन सकता है, जो नेपाल और भारत दोनों देशों के लिए नई समस्याएं खड़ी कर सकता है। इसलिए जरूरत इस बात की है कि नेपाल में अफगानिस्तान जैसी अराजकता और अव्यवस्था बढ़ने से रोका जाना चाहिए। यह भारत और नेपाल के अतिरिक्त चीन के भी हित में होगा।

नेपाल सामरिक दृष्टि से भी भूगोल का महत्वपूर्ण केन्द्र है। चीन का दखल बढ़ना और पाकिस्तानी षड्यंत्र की जमीन तैयार होना खतरनाक है। वैसे भी भारत का पड़ोसी पर्यावरण किसी भी दिशा से सुरक्षित नहीं बचा है। पश्चिम में चिर शत्रु पाकिस्तान, उत्तर में अविश्वसनीय पड़ोसी चीन, पूरब में बंगलादेश की फौजों में पाक-परस्त तत्वों का वर्चस्व, उत्तर-पूर्वी राज्यों में अलगाववादी आतंकवाद की सक्रियता तथा दक्षिण में श्रीलंका के लिट्टे विद्रोहियों के मंसूबे। ऐसी स्थिति में भारत-नेपाल रिश्तों का संतुलन, सामाजिक-सांस्कृतिक सम्बन्धों का सुदृढ़ ताना-बाना रिश्तों की डोर को मजबूत बनाए रखने की आवश्यकता है। नेपाल में षडयंत्र का जो एक खौफनाक नासूर पनप चुका है, उसके प्रति भारत को सदैव सतर्क रहना होगा। भारत सरकार को नेपाल की हर गतिविधि पर पैनी नजर रखने के साथ-साथ पर्दे के पीछे पाकिस्तान और चीन में जो कुछ हो रहा है, उस पर भी चौकसी बरतनी पड़ेगी।

सम्पर्कः पुष्प विहार, नई दिल्ली

दलितों को सामाजिक नेतृत्व की जरूरत है

❑मोहनदास नैमिशराय

भारतीय समाज में जातियों के बीच विषमता, टकराहट और वैमनस्य के साथ ऊंच-नीच के अहंभाव पर चोट करते हुए तथा समता-सम्मान के अभियान की शुरूआत करते समय **बाबा साहेब डॉ० अम्बेडकर** को क्या मालूम था कि उनके जन्म की अगली शताब्दी बीतने पर भी इस देश में जातियों, उपजातियों का सामंती वर्चस्व कायम रहेगा। बाबा साहेब भारतीय संविधान के निर्माता थे इसलिए कि उन्होंने नये मानवीय चिंतन और दर्शन का आविष्कार किया था। वे समाज वैज्ञानिक थे। केवल उदाहरण और दृष्टांत कहने या दूसरों के सामने प्रस्तुत कर देने वाले विश्लेषकों में से नहीं थे अपितु समाज में व्याप्त तत्कालीन धार्मिक धाराओं का गहराई से अध्ययन और मनन करके अपना सटीक तर्क देने वाले समाज-सुधारकों की अगली पंक्ति के नायकों में से थे। डॉ० अम्बेडकर की स्थापना थी कि हिन्दू कहलाने वाला समाज जातियों का संग्रह मात्र है। हम यहां हिन्दू दर्शन की बात नहीं कर रहे हैं, न ही आध्यात्मिक मूल्यों की। वे एक सीमा तक तर्क-संगत हो सकते हैं। उन मूल्यों की समाज को जरूरत हो सकती है। हालांकि उन आध्यात्मिक मूल्यों की आधुनिकता बनाम भौतिकवादियों को कतई जरूरत महसूस नहीं होती। पर कभी-कभी वे उन्हें रोमांचित जरूर करते हैं या फिर पीड़ा दायक परिवेश में मुक्ति हेतु साधक भी लगते हैं। पर बकौल **डॉ० राम मनोहर लोहिया** जाति के **"ले डुबाऊ फैक्टर"** से पीछा छुड़ाने में सनातनी-सामंतियों से लेकर आधुनिक या आराधकों का मतंव्य लगभग एक जैसा ही है। इसलिए हमें डा० अम्बेडकर की बात बार-बार याद आती है, जिसका मानना है कि **प्रत्येक जाति अपने अस्तित्व के लिए जागरूक है एवं जिंदा रहना ही इसके अस्तित्व के होने या न होने के लिए सब कुछ है। जातियां एक संघ का निर्माण नहीं करतीं बल्कि अपने भीतर एक समुदाय बनाती हैं।**

कुछ समाजशास्त्री जातियों के बीच अपनत्व की भावना को चेतना की संज्ञा देते हैं। पर वह चेतना कैसी चेतना है,उसकी क्या परिभाषा है, उसमें सकार के तत्व जुड़े हैं या नकार के, वह चेतना की बात करती है या ध्वंस की, वह लोगों के बीच जागरूकता का संदेश देती है या रूढ़िवादी बने रहने का? सही बात तो यह है कि वैसी चेतना लोगों को कुछ मिथकों से जोड़ती है, उनके भीतर जातिगत गौरव की परंपरा का संचार करती है और लुप्त प्राय वैभव की पुन: स्थापना पर बल देती है। इसलिए वह केवल जातिगत चेतना हुई। परिणामस्वरूप यह भी देखा गया है कि जब-जब जातिगत चेतना उग्र होती है तब-तब एक जाति के द्वारा दूसरी जाति के खिलाफ युद्ध का आह्वान भी होता है। इतिहास ने हमें यही सब सिखलाया, पर राजनीति ने कहां इसे भुलाया?

लेकिन हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि स्वयं दलित समाज के लोग बाबा साहेब डॉ० अम्बेडकर को भला क्यों याद करते हैं? क्या वे उनके लिए केवल प्रेरणा-स्रोत हैं या इतिहास? यह केवल भावना और उत्साह की बात नहीं है, अनुभव और चिंतन का विषय है। इसे भले ही खेद की बात कहा जाए या महज अपने-आप में खुशफहमी रखने की। भारत की दलित अस्मिता और पहचान को अधिक कड़ाई के साथ बुनते हैं। वे अपने भीतर मिथक गढ़ते हैं। उन्हें मजबूत करते हैं। फिर उन्हें हवा भी देते हैं। कभी-कभी चिंगारी का कार्य भी स्वयं ही करते हैं। देखा जाए तो 1920 से 1992 तक का कालखण्ड डॉ० अम्बेडकर के नायकत्व पर केन्द्रित रहा है। इस नायकत्व के साथ अगर कहीं जातिगत चेतना का जुड़ाव हुआ तो कहीं बौद्ध धर्म के प्रति जुड़ाव की भावुकता। हालाँकि चिंतन और दर्शन से भी जुड़ाव हुआ, जो लाजमी बात थी। इस संदर्भ में लोक संस्कृति की अवधारणा जहां विस्तृत रूप में परिभाषित की जाती है, कभी-कभी वह भी जातियों की सांस्कृतिक विरासत का लबादा ओढ़कर संकुचित रूप धारण कर लेती है। हालाँकि फ्रांसीसी इतिहासवेत्ता **इवेजिन बेबर** लोकगीतों, नाटकों, कहावतों, मुहावरों, लोककथाओं के अध्ययन को आवश्यक मानते हैं। पर उन लोककथाओं का प्रवाह कैसा है, इसे भी जांचना समझना जरूरी होता है। इतिहास ऐसी तमाम लोककथाओं पर बन्दिश नहीं लगाता जबकि राजनीति उनके प्रति पूर्वाग्रह रखती है। शायद इसलिए कि कभी-कभी लोक कथा स्मृतियों का रूप ले सकती है। शिमला स्थित **एडवांस्ड इंस्टीटयूट** के पूर्व रिसर्च एसोशियेट **बद्रीनारायण** का मानना है कि **स्मृतियां सुखद हों या दुखद, कई बार किसी भी जाति या राष्ट्र को खड़ा करने एवं उसे पहचान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।** हिट्लर नरसंहार के बाद यहूदियों का विकास स्मृति आधारित ही है। हालाँकि इतिहास में कई बार स्मृतियों का दोहन कर नरसंहार भी रचा गया है। इस प्रकार स्मृतियों का मामला तलवार की धार पर चलने जैसा है। आज दुनिया के कई बड़े बौद्धिकों की बौद्धिकता के विकास में उनकी जातीय स्मृतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। एडवर्ड सईद इसे खुद स्वीकार करते हैं और एडवर्ड सईद ही क्यों जातीय आधार पर सोच विचार करने वाला कोई भी बुद्धिजीवी या और बुद्धिजीवी वर्ग समृतियों को उसी रूप में याद कर उन्हें और धारदार बनाने की कोशिश करता है। कई आधिपत्य शाली शक्तियां अपनी सुविधानुसार उन्हें **मैनुपलेट** करती है।

बंगलोर से प्रकाशित **"दलित वायस"** के संपादक **बी०टी० राजशेखर** ने पिछले दिनों (जून-जुलाई 1996 से) जातीय पहचान **"भारत की क्रांति की सरल राह"** विषय को लेकर बहस चलाने का प्रयास किया था। उनका कहना था कि प्रत्येक उपजाति को अपनी आबादी के अनुपात में अपना हिस्सा पाने के लिए अवश्य संघर्ष करना चाहिए और उसी के अनुसार सत्ता में भागीदारी के लिए भी। उनके अनुसार भारत के राष्ट्रपति स्वयं केरल के अस्पृश्यों की निम्न उपजाति से आते दलित जातियों-उपजातियों में वैमनस्य बढ़ा है। वे परस्पर मार-काट करने लगी हैं। कहीं राजनीतिवश तो कहीं स्वयं आगे आ कर और अन्य को पीछे ढकेल कर। उनके बीच अविश्वास उभरे हैं। बाबजूद इसके कि अम्बेडकर विचार उत्तरी पूर्वी राज्यों के कुछ दुर्गम भागों को छोड़कर लगभग सारे देश में फैल चुका है। लोग बौद्ध धर्म भी अपनाने लगे हैं।

आंध्रप्रदेश में माला मादिगा जातियों के बीच लंबे समय से चले आ रहे परस्पर टकराव में ठहराव दिखाई दिया। इस टकराव को हालाँकि अस्थायी कहना चाहिए। आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री **चन्द्रबाबू नायडू** अनुसूचित जातियों की आबादी को ए०बी०सी० समूह में वर्गीकृत करने के लिए राष्ट्रपति के स्पष्टीकरण का मतलब है अनुसूचित जातियों के एक हिस्से के लिए एक बेहतर सौदेबाजी को पूरा करने की मांग के लंबे संघर्ष में उपस्थित अंतिम रुकावट का खात्मा होना। इसे "दलित वायस" ने अनुचित जातियों के मालाओं के विपक्ष में और मादिगाओं के पक्ष में एक बेहतर सौदेबाजी के व्यापक संघर्ष की चरम अभिव्यक्ति बतलाया था।

दलित जातियों के बीच एकता हेतु प्रयोग स्वस्थ एक अन्य उदाहरण देखें। वह उदाहरण है तमिलनाडु के पल्लारों का। कुछ लोगों का मानना है कि उनकी आमदनी का अधिकांश भाग दूसरी जाति के व्यापारियों और दुकानदारों की जेबों में जा रहा है जो दलितों की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करते हैं। उनका कहना है कि एक बार जाति प्यार बढ़ाने पर दलित जाति के लोग नमक, मसाला तेल, साबुन व घरेलु उपभोग की वस्तुएं

अपनी जाति के फुटकर दुकानदार से खरीदेंगे। ऐसा माना जाता है कि दक्षिण तमिलनाडु के पल्लारों में इसके प्रति अब सजगता आ गई है। हमें याद रखना चाहिए कि अमेरिका में ब्लैक समुदाय ने कुछ प्रयोग किये हैं। एक सीमा तक उन्हें सफलता के मापदण्ड नहीं हुए। इसलिए कि व्यापार या व्यवसाय अर्थात प्रतिस्पर्धा का कोई भी क्षेत्र केवल भावुकता के सहारे आगे नहीं बढ़ता। उसके लिए क्रेडिब्लिटी और क्वालिटी चाहिए। ये दोनों मूलमंत्र किसी भी जाति में हो सकते हैं, पर ग्राहक उसी जाति के हों जिस जाति का निर्माता, यह पूर्णतः मुमकिन नहीं।

जहां तक दक्षिण भारत और विशेष रूप में केरल में पल्लारों की बात है, दलितों में ही उनके समकक्ष अन्य जातियां ऐसी हैं जिनमें भयंकर तौर पर प्रतिस्पर्धा है। जैसे-जैसे समय बढ़ रहा है वैसे-वैसे यह स्पर्धा और भी अधिक बढ़ रही है। पर हमारा उद्देश्य यहां यह कदापि नहीं है कि कौन सी जाति के लोग अपने जातीय ग्राहकों या उपभोक्ताओं के बलबूते पर कौन से व्यवसाय में सफल हो सकते हैं। इस लेख में मुद्दा यह है कि स्वयं डॉ० अम्बेडकर को अपना प्रेरणास्त्रोत मानकर दलित जातियो के लोग परस्पर एक-दूसरे को ऊंच-नीच सिद्ध करने में लगे हैं। पिछले दिनों राजस्थान की दो-तीन जातियों बैरवा, मीणा, रैगर, मेधवाल, चमार आदि जातियों के परस्पर व्यवहार में विषमता से भरी टकरावपूर्ण परिस्थितिया देखी,पाई गईं। उनके बीच परस्पर उत्पीड़न की घटनाएं या दुर्घटनाएं भी हुई और एक दूसरे के साथ उनका व्यवहार ठीक ऐसा ही पाया गया जैसा लगभग दलित और सवर्णों के बीच होता है। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में जाटव और बाल्मीकि जातियों के बीच समय-समय पर पुष्टि होती रही है। उनके बीच परस्पर ऊंच-नीच तथा छुआछूत की भावना रही है। रोटी-बेटी का सम्बन्ध शुरू हुआ है, लेकिन बहुत कम। दोनों जातियों की अपनी-अपनी पीड़ा है, संस्कार और संस्कृति है। राजनीति के दौर में वह फासला और भी बढ़ा है। शिक्षित होगों ने एक दूसरे के नजदीक आने का प्रयास किया है। हालाँकि वह प्रयास किताबी जैसा लगता है।

कुछ लोगों का मानना है कि उत्तरी भारत के चमारों ने अपनी मुक्ति हेतु संघर्ष किया और वे अपने कठिन परिश्रम, समप्रण और कांशीराम के बलिदानों से लाभान्वित हुए। भदन्त आर्य नागार्जुन सुरई ससाई कहते हैं कि महार उपजाति जो किसी समय सभी आंदोलनों का अगला दस्ता बनते थे, वे आज अथर्वास्थित हो गये हैं। महार बाबा साहेब की पूजा करते हैं और उनकी प्रतिमा पर माला फूल पढ़ाते हैं। लेकिन व्यवहार में वे बाबा साहेब के विचारों को दूर-दूर तक खत्म कर चुके हैं। महार में लगभग वैसा ही व्यवहार चमार और महारों के बीच देखने में आता है। इसलिए यह बात तर्क संगत नहीं लगती कि एक मजबूत जातीय पहचान एक मजबूत साथी भावना को विकसित करेगी। क्योंकि मजबूत होना हर जाति चाहेगी। और अभी का विकास साथ-साथ हा, यह कैसे संभव हो सकता है। कई राज्यों में तो दलितों के बीच वेमनस्य खूनी रंजित में परिवर्तित भी हुआ है। फिर हमें मानना होगा कि शोक्तिों में भी कितनी सीढ़ियां हैं। वहीं सीढ़ियां किसी को ऊचाई तक ले जाती है तो किसी को बीच में ही रहने देती है।

देखा जाए तो जाति उन्मूलन बाबा साहेब डा० अम्बेडकर का सबसे सशक्त संदेश रहा है, उतना ही कमजोर रहा उनके अनुयाईयों का व्यवहार में उसका पालन करना। इस विषय पर उनहोंने अपना ऐतिहासिक

भाषण लाहौर के जात-पांत तोड़क मंडल के 1936 के वार्षिक अधिवेशन के लिए तैयार किया गया था। वही भाषण स्वागत समिति द्वारा अधिवेशन को इस आधार पर रद्द कर दिये जाने के कारण वे नहीं पढ़ा जा सका कि भाषण में व्यक्त विचार सम्मेलन के लिए असहनीय होंगे। जाति प्रथा-उन्मूलन के दूसरे संस्करण की प्रस्तावना में डा० अम्बेडकर लिखते हैं, "लाहौर के जातपांत तोड़क मंडल के लिए जो भाषण मैंने तैयार किया था, उसका हिन्दू जनता द्वारा अपेक्षाकृत भारी स्वागत किया गया।.................. एक हजार पांच सौ पगतियों का अंग्रेजी संस्करण इसके प्रकाशन के दो महीनों के भीतर ही समाप्त हो गया। इसका गुजरती और तमिल में अनुवाद किया गया। अब इस भाव्य का कराठी, हिन्दी, पंजाबी, और मलयालम में अनुवाद किया जा रहा है। .... संभवत: इसका पहला संस्करण 1935 में छपा था।

प्राय: जाति का यह कह कर पक्ष लिया जाता है कि यह सभ्य समाज में आवश्यक श्रम विभाजन का एक उपयोग रूप है। कुछ लोग नस्ल एवं रक्त की शुद्धता बनाये रखने के नाम पर जाति का समर्थन करते हैं। यह एक सनातनी विचार है। पर जब स्तयं दलित समाज के तथाकथित अधिकांश बुद्धिजीवी जाति भेट को मानते हुए उस विषमता के सिद्धान्त का अपने व्यावहारिक जीवन में हर संभव समर्थन करते हैं तो यह आश्चर्य का विषय बन जाता है। दलितों में एक बड़ा वर्ग इस बात को भी कहता रहा है कि समाज में जातियों का उद्‌भव और विकास ब्राह्मणों ने किया और वही इसे खत्म भी करेंगे। फिर कुछ लोग यह भी कहते हैं कि जाति भेद तो स्वयं सवर्णो में भी है दलितों में है तो क्या हुआ। इसका अर्थ यह हुआ कि वे स्वयं हाथ पर हाथ बैठे रहें और समाज से जातियों के बीच भेद-भाव तथा वैमनस्य अपने आप समाप्त हो जाए। इसका सीधा तात्पर्य यह हुआ कि वे राम भरोसे पर निर्भर हैं। अम्बेडकर की बात तो वे मानते नहीं। यही दलित समाज के विकृत लोगों के अहंकार का मूर्त रूप है। ऐसे ही कुछ लोग समाजिक तथा आर्थिक स्तर में काफी ऊंचे उठ गये प्रतीत होते हैं जो अपने से कमजोर लोगों पर अपनी श्रेष्ठता थोपने के हिमायती हैं। इसलिए दलित जातियों के बीच विकसित भेदभाव ने उनके सामाजिक और आर्थिक विकास प्रभावपूर्ण तरह से अवरूद्ध किया है। चूंकि जाति प्रथा चाहे ब्राह्मणों में हो या दलितो में, सम्मिलित गतिविधि को रोकती है। इसलिए उसने समूचे समाज को चेतन बनने से रोका है।

यहां यह भी हास्यास्पद बात है कि कुछ लोग वर्ग का तो विरोध करेंगे, लेकिन जाति प्रथा का समर्थन। ऐसे तमाम लोग विरोधाभास के अपने-अपने संसार में जीने के आदी हो गये हैं । वे हिन्दू धर्म तथा अपनी स्वयं की जातियों के संस्कार और संस्कृति के मिले-जुले स्वभाव के अभ्यस्त हो गये हैं। पर आज जबकि हमने नई शताब्दी में कदम रख दिया है तब क्या स्वयं दलित समाज के लोग अपनी जिम्मेदारी से भागते रहेंगे। समाज परिवर्तन के लिए तो पहले स्वयं में बदलाव लाना होगा। बौद्धिक ईमानदारी तो कम से कम यही कहती है। जाति भेद खत्म होने से किसी एक जाति या कुछ जातियों का ही विकास नहीं होगा, यह बात निश्चित है कि इसमें समूचे देश और समाज पर प्रभाव पड़ेगा। इस बारे में वैसे प्रयास हो रहे हैं। काश उनमें और भी सजगता आए!

सम्पर्क: बी०जी० 5ए /30 बी०,
पश्चिम बिहार, नई दिल्ली-63

रचनाकारों से

- √ रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हाद्रिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।
- √ रचना एक तरफ टंकित या स्पष्ट लिखी होनी चाहिए। रचना के अन्त में उनके मौलिक, अप्रकाशित तथा अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम व पता अवश्य लिखें।
- √ रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की स्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।
- √ यदि आप अस्वीकृत रचना वापस चाहते हैं तो कृपया अपना पता लिखा, डाक टिकट लगा लिफाफा लगाना न भूलें।
- √ रचना भेजते वक्त यह अवश्य देख लें कि लिफाफा पर आवश्यक डाक टिकट लगें हैं या नहीं।

कार्यकारी सम्पादक : विचार दृष्टि

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1 (बिहार) / यू०-207, शकरपुर, दिल्ली-92

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Mr. Devendra Kumar Singh
C. M. D.

022 - 8974777(O)
Fax : 8974777 (F)
9525255285

Office :

Anurag Mansion, Shiv Vallabh Road
Ashok Van, Dahisar (East), Mumbai-400 068

Factory :

Plot No. 10, dewan&Sons, Udyog Nagar, Palghat,
Distt. - Thane, Mumbai (Maharashtra)

आरक्षण 80 प्रतिशत लोगों के लिए धोखा

विचार कार्यालय, नई दिल्ली

महाराष्ट्र के राज्यपाल पी०सी० अलेक्जेंडर की अध्यक्षता में गठित सात राज्यपालों की एक समिति ने अपनी रिपोर्ट में अनुसूचित जाति/जनजाति मंत्रालय के कार्यकलापों पर अपनी कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा है कि अनुसूचित जाति व जनजातियों के कल्याण के लिए पिछले पाँच दशकों में बनी योजनाएं 80 प्रतिशत लोगों के लिए धोखा साबित हुई हैं। रोटी और कपड़ा से वंचित लोगों के लिए आरक्षण का कोई मतलब नहीं रह गया है। अनुसूचित जाति व जनजाति के कल्याण के लिए, केन्द्र से मिलने वाली सहायता राशि का उचित नहीं होने से समिति ने कड़ा रूख अपनाने की सलाह दी है तथा भलाई का ढोंग रचनेवाले राज्य सरकारों के खिलाफ कार्रवाई की जाने की सिफारिश की है क्योंकि पिछले पाँच दशकों में उनके कल्याण के लिए उठाए गए कदम नाकाफी तथा बेअसर साबित हुए हैं। समिति ने देश के तमाम राज्यों में अनुसूचित जाति व जनजातियों की सरकारी उपेक्षा की जानकारी दी है। इनके कल्याण के लिए बनायी गई योजनाओं की निगरानी के लिए एक टास्क फोर्स के गठन की सिफारिश की गई है। समिति ने कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा कि बहुत से राज्यों ने समाज के सबसे निचले वर्ग की भलाई का सिर्फ ढोंग रचने का काम किया है। समिति ने अपने रिपोर्ट में कहा है कि इन वर्गों के बच्चों की शिक्षा के भार से मुक्त रखा जाना चाहिए। इस समिति ने इन वर्गों को सरकारी नौकरियों में दिए जाने वाले आरक्षण की हकीकत खोल कर रख दी है। इसने कहा है कि वास्तव में आरक्षण एक मरीचिका है जिसका लाभ मात्र 23 प्रतिशत लोगों ने अभी तक उठाया है। तमाम मामलों में इन वर्गों के आरक्षित पद लम्बे अरसे तक खाली रहते हैं। समिति ने सारे पदों को विशेष अभियान चलाकर भरे जाने की सिफारिश की है। समिति ने उ०प्र०, उतरांचल तथा उड़ीसा व मध्यप्रदेश जहाँ दलितों की काफी बड़ी तादाद है का दौरा कर तथा मुंबई टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ सोसल साइन्सेस और कटक के नवकृष्णा इसटीच्यूट के द्वारा तैयार किए रिपोर्ट के आधार पर अपनी सिफारिश की है।

इस प्रकार रिपोर्ट ने आरक्षण की मौजूदा व्यवस्था पर करारी चोट की है तथा महाराष्ट्र द्वारा अनुसूचित जातियों व जनजातियों के कल्याण के मामले में उठाए गए कदमों की सराहना भी की है। उ०प्र० के मामले में समिति ने कई चौकानेवाले तथ्यों को उजागर किया है जिनमें उत्पीड़न के शिकार दलितों की रिपोर्ट लिखने में आनाकानी अथवा लिखी गई रिपोर्ट पर कार्रवाई करने में हिला-हवाली शामिल है। इसके अतिरिक्त उ०प्र० में दलित छात्रों को मिलनेवाली छात्रावृति में होनेवाले घोटालों पर भी समिति ने तीखी नजर डाली है। समिति ने इस तरह के घपलों में शामिल अधिकारियों व कर्मचारियों को पूरे सेवा काल के दौरान महत्वपूर्ण पदों से वंचित रखे जाने की सिफारिश की है। समिति का कहना है कि दलितों के कल्याण में सम्बन्धित मंत्रालय की कोई भूमिका नहीं दिखती। प्रकारान्तर से इस मंत्रालय को समाप्त किए जाने की सिफारिश की गई है। समिति की तीखी सिफारिशों पर नजर डालने पर एक ओर जहाँ केन्द्र तथा राज्य सरकार के दलितों के कल्याण हेतु बने मंत्रालय तथा विभाग की उदासीनता दिखती है वहीं पिछले पाँच दशक से विभिन्न राजनीतिक दलों के आरक्षण के आधार पर आए दलित जन प्रतिनिधियों पर तरस आती है जो अपने साथ सत्ता में भागीदार बनाकर उनके सहयोग समर्थन का प्रतिदान करती रही है और दलित पार्टियाँ और उनके संगठन तो अपने उनके बीच सिर्फ सपने बेच रहे हैं और बाहर उनके सहयोग समर्थन की बोली लगा रहे हैं। कांशीराम और मायावती की पार्टी बसपा तो दलित सभाओं में शेष समाज के विरूद्ध जहर उगलकर दलितों को गोलबन्द करते हैं और सपने बेचकर देखते-देखते कम से कम उ०प्र० में एक बड़ी पार्टी बन गयी किन्तु देश के सबसे बड़े प्रदेश की मुख्यमंत्री बन जाने से दलितों का कितना उत्थान हुआ यह तो राज्यपालों की समिति की सिफारिशों से जाहिर होता है। हाँ, इतना जरूर हुआ कि कांशीराम और मायावती का बाजार भाव जरूर बढ़ गया। दूसरी ओर जगजीवन राम के बाद बिहार के रामविलास पासवान सबसे बड़े और प्रभावशाली दलित नेता ने दलितों को जो कुछ दिया वह समिति की सिफारिशें बताती हैं पर इतना अवश्य है कि उनका नाम अब अमीरों की सूची में अंकित हो गया है तथा उनके रहन-सहन, वेष-भूषा, खान-पान, बात-व्यवहार किसी भी अमीर को मात दे सकते हैं, दलितों को उनके मौजूदा स्थिति से भले संतोष हो पर इसे भावनात्मक शोषण मानने में कतई किसी को एतराज न होगा तथा फिलहाल दलित राजनीति के दांव पेंच का सबसे निर्मम नुक्ता होकर उभरा है। राज्यपालों की समिति की सिफारिशों से उन दलित राजनेताओं के चेहरे एवं कारनामें भी बेनकाब हुए हैं जिन्होंने आजादी के बाद से आज तक उन दलितों का भावनात्मक शोषण कर उन्हें इस स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है कि वे दो जून की रोटी तथा सर ढंकने के लिए भी मोहताज हैं।

आर्थिक उदारीकरण के दौर में देश की सम्प्रभुता और स्वाभिमान दाव पर

□ सिद्धेश्वर

आर्थिक उदारीकरण का यह दौर आज का [नहीं ब]ल्कि आज से लगभग एक दशक पूर्व ही प्रारम्भ हो गया था। आर्थिक सुधारों के प्रारम्भ से दस वर्ष से भी अधिक बीत जाने के बाद इस अवधि में हम देश को आर्थिक सुदृढ़ता न दे सके। वित्तीय वर्ष 2001 -2002 के बजट में दर्शाए गए मात्र 2 लाख 32 हजार करोड़ रुपये के राजस्व के मुकाबले पौने चार लाख करोड़ रुपये का खर्च कैसे चलेगा? जाहिर है कर्ज लेना पड़ेगा। वैसे भी हम कर्ज के भार से दबते चले जा रहे हैं। आज की तिथि में हमारे देश की अर्थव्यवस्था 12,00,000 करोड़ रुपये के कर्ज का बाझ ढो रही और इस 12,00,000 करोड़ रुपये के कर्ज पर सरकार हर साल 1,00,000 करोड़ रुपये का ब्याज दे रही है जबकि सरकार का कुल राजस्व 2,00,000 करोड़ रुपये है। यानी जिस सरकार के कुल राजस्व का आधा हिस्सा केवल ब्याज देनदारियाँ ही चाट जाती हों उसकी अर्थव्यवस्था किसी भी दिन ढह जाना तय है। स्थिति यह है कि सरकार के प्रति तीन रुपये के खर्च में एक रुपया उधार से प्राप्त संसाधनों से आता है। ब्याज अदायगी केन्द्र सरकार के कुल खर्च का अब एक तिहाई हो गई है। केन्द्र सरकार के खर्च का ढाँचा विकृत हो चुका है और बजट का 90 फीसदी हिस्सा ब्याज और आंतरिक सुरक्षा सब्सिडी, वेतन, पेन्सन आदि के भुगतान में जाता है। यदि यही रूख चलता रहा तो सरकार पर कर्ज कुछ इस तरह बढ़ जाएगा कि बेहद जरूरी विकास कार्यक्रमों के लिए भी संसाधन जुटा पाना टेढ़ी खीर बन जाएगी और मुद्रास्फीति जैसी समस्याओं के साथ भुगतान संतुलन (Balanee of Payment) का संकट भी खड़ा हो सकता है, जिससे निबटना मुश्किल होगा।

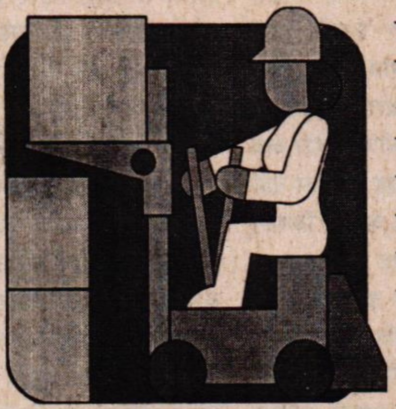

अब हम देखें आर्थिक उदारीकरण के नतीजों को। भारत ने आर्थिक उदारीकरण के प्रारम्भिक दौर से ही कुछ चीजों पर धीरे- धीरे नियंत्रण हटाना शुरू कर दिया था। 1996 में 10202 वस्तुओं पर नियंत्रण था। अप्रैल, 1996 में 6161 वस्तुओं से, 1997 में 488, 1998 में 391, 1999 में 894 तथा पहली अप्रैल 2001 से अन्तिम 715 वस्तुओं, जिनमें प्रमुखतः कृषि उत्पाद हैं, से मात्रात्मक प्रतिबन्ध (क्यू० आर०) हटा लिया गया। आयात या निर्यात पर रोक लगाने के लिए राष्ट्र जो सीमाएं तय करते हैं उसे मात्रात्मक प्रतिबन्ध कहते हैं। धीरे धीरे देश के लोग इसे कोटा राज (क्यू० आर०) भी कहने लगे। यानी भारत के बाजार को अन्य देशों की इन 10202 वस्तुओं के आयात के लिए खुली छूट दे दी गयी। इन 10202 वस्तुओं में 300 वस्तुओं यथा-दूध, मिठाई, बेबी फूड, मुर्गे का मांस, मक्खन, घी, नारियल, सुखे मेवे, फूल, इमली, कॉफी, चाय, मसाले अदरख, गेहूँ, चावल, खाद्य तेल, नमक, शराब, रेशमी वस्त्र, छाते, संगमरमर, शीशी और शीशे के बने समान नई और पुरानी मोटर कारें और अन्य गाड़ियाँ, खिलौने, इलेक्ट्रीक ट्रेन, कलम, पेन्सिल और स्याही आदि के आयात पर सरकार द्वारा गठित एक स्थाई समिति नजर रखेगी और प्रतिमाह वस्तुओं के आयात की समीक्षा करेगी। जरूरत से ज्यादा आयात होने पर एंटीडम्पिंग कानून का सहारा लिया जा सकता है। ध्यातव्य है कि यदि कोई देश अपने सामान को सब्सिडी देकर भारतीय उद्योग को अनुचित रूप से नुकसान पहुँचाता है तो उसे डम्पिंग कहते हैं। साधारणतः इसका अर्थ है सामान्य मूल्य से कम कीमत पर सामान बेचना। इसे रोकने के लिए एंटी डम्पिंग यानी आयातित माल पर अतिरिक्त शुल्क लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सेफ गार्ड मेजर्स नाम का संरक्षण भी उपलब्ध है। उल्लेखनीय है कि भारत का विश्व व्यापार संगठन में जाना कुछ मजबूरी भी थी और कुछ लाभ का उद्देश्य भी। भारत ने अमेरिका से ऐसा समझौता किया था कि उसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के तहत 2003 तक तो सारे प्रतिबन्ध समाप्त करने ही पड़ते क्योंकि भारत भुगतान संतुलन के आधार पर मात्रात्मक प्रतिबन्ध लगाए रखने के औचित्य को नहीं मानने पर अमेरिका ने भारत पर जो मुकदमा किया था उससे सारे मुकदमों में भारत हार गया था। इसलिए मात्रात्मक प्रतिबन्ध हटाना उसकी मजबूरी थी। आज विश्व व्यापार संगठन से सम्बद्ध 136 सदस्यों में केवल पाँच देशों में मात्रात्मक प्रतिबन्ध लागू है। वे हैं-तुनीसिया, नाइजीरिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश और श्रीलंका। ये देश भी प्रतिबन्ध हटाने के प्रयास में हैं। पहली जनवरी, 2005 से कपड़ा और वस्त्र भी एक समझौता के तहत मात्रात्मक प्रतिबन्ध हटाया जाना है।

दरअसल बिना घर संवारे और पूरे तौर तरीके अपनाए जल्दबाजी व बिना तैयारी के विश्वव्यापार संगठन से हमारे देश ने नाता जोड़ा जो उचित नहीं था। ज्ञात हो कि चीन ने राष्ट्रकुल खेलों में तभी तक भाग नहीं लिया था जब तक कि उसने अपने खिलाड़ी को पहले या दूसरे स्थान पर आने की क्षमता विकसित नहीं कर ली थी। ऐसा ही भारत को भी करना चाहिए था। नतीजा यह हुआ कि उदारीकरण की अर्थनीति और उपभोक्ता वस्तुओं में आयात की छूट का खामियाजा पूरे देश की लघु एवं धरेलू उद्योगों तथा कृषि उत्पादों को भुगतना पड़ रहा है। तमिलनाडु के देश के अग्रणी औद्योगिक कोयम्बटूर जिले की कुल 48 हजार लघु औद्योगिक इकाइयों में से 15 हजार इकाइयाँ वित्तीय संकट के कारण बन्द हो चुकी हैं और करीब 10 हजार इकाइयाँ बन्द होने के कगार पर हैं। उपभोक्ता वस्तुओं के आयात बढ़ने से घरेलू बाजार में उत्पादों की कीमत घटने लगी क्योंकि आयातित वस्तुओं की खरीद बढ़ने से घरेलू मालों की माँग घट गयी। करों का बोझ

और बढ़ते आयात ने लघु उद्योगों की कमर तोड़ दी। रिपोर्ट है कि लाखों का घाटा लिए हुए उद्योगों को ऋण प्रदान करनेवाले कई फाईनान्सर, कच्चे माल की आपूर्ति करनेवाले छोटे व्यापारी व बेरोजगार होकर जीवन से लड़ने में असफल पिछले चार साल में लगभग 500 लोगों ने आत्महत्या की है। इसी प्रकार प० बंगाल में हावड़ा की करीब 400 रौलिंग मिलों में आज केवल 10 चालू हैं। कानपुर के चमड़े के करीब 330 कारखानों में से केवल 30 ही चालू हैं। फिरोजाबाद का काँच उद्योग अब दम तोड़ रहा है। गुजरात, महाराष्ट्र का दवा उद्योग और अलीगढ़ का ताला उद्योग भी भयंकर संकट के दौर से गुजर रहा है। आर्थिक उदारीकरण के लोक लुभावन शब्द की आड़ में उद्योगों की यह आयातित महामारियाँ अपना ताडंव कर रही हैं। आज देश में शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा जिसमें हमारे छोटे उद्यमी मैदान में होंगे या उनका भविष्य उज्ज्वल होगा। बाकी लाखों उद्यमी और करोड़ों मजदूर तो तबाही के शिकार हो चुके हैं। बीकानेरी भुजिया बनाने से लेकर आंटा पीसने तक पर विदेशी कम्पनियों का कब्जा होता जा रहा है। फलतः हमारे लगभग 8 लाख छोटे कारखानों और उनमें काम करने वाले करोड़ों मजदूरों की तो तबाही और बेरोजगारी ही नसीब में रही है।

आर्थिक उदारीकरण और मात्रात्मक प्रतिबन्ध हटाने की गाज हमारे देश के किसानों पर भी गिरी है। हमारी अर्थव्यवस्था का मूल आधार-खेती भी संकट में है। खाद, बीज, कीटनाशक, बिजली और पानी के मूल्य बढ़ जाने से खेती की लागत बढ़ गयी है जिसमें किसानों का उनका लागत मूल्य भी नहीं मिल पा रहा है। भारत सरकार द्वारा आयातित मात्रात्मक प्रतिबन्ध हटाने की नीति के क्रियान्वित होते ही सरसों, सोयाबीन व अन्य खाद्य तेलों की जिन्सों के भाव लड़खड़ाते हुए जमीन पर आ गिरे। जिस सरसों का भाव 2200-2300 रुपया क्विंटल मिलता था उसे 1100 रुपये क्विंटल पर भी बाजार में नही बेचा जा सकता था। सोयाबीन व अन्य खाद्य तेल विदेशों से एक वर्ष में 47000 करोड़ रुपये की लागत के आयात किए जाने लगे जिसके परिणामस्वरूप खाद्य तेल की मीलें देश में 80 फीसदी से अधिक तो बन्द हो चुकी हैं और शेष बन्द होने के कगार पर हैं। खाद्य तेलों का आयात 1997-98 के आयात से आज तीन गुना बढ़कर 60925 करोड़ रुपये हो गया। केरल के नारियल तेल उद्योग तथा नारियल की खेती संकटग्रस्त है। यही कारण है कि देश के विभिन्न क्षेत्रों से किसानों की आत्महत्याओं के समाचार सुर्खियों में आते रहे हैं और तथ्यों के आधार पर इन समाचारों की पुष्टि भी हुई है।

विश्व व्यापार संगठन के तत्वावधान में भले ही भारत अमेरिका व यूरोप जैसे धनाढ्य देशों के साथ बंध गया हो लेकिन जिन्हें आर्थिक सुधारों का नाम दिया जा रहा है दरअसल वे आर्थिक विनाश के रास्ते बन रहे हैं क्योंकि उनकी सम्पदा के मद्दे नजर हमारी तमाम विकास योजनाएं श्रम व रोजगार प्रधान होनी चाहिए परन्तु उदारीकरण के चलते व पूंजी व तकनीक प्रधान हो गयी हैं। पूंजीवादी देश अब प्रतियोगिता के पक्ष में है। हमें यह स्वीकार नहीं हो सकता। भारत की गरीबी में करोड़ों किसान व मजदूरों के साथ संवेदनशीलता के आधार पर ही आर्थिक नीति का निर्माण हा सकता है। प्रतियोगी का गला काटने की नीति संवेदनशीलता के साथ-साथ नहीं चल सकती। अर्थशास्त्रियों के अनुसार देश की 85 फीसदी आबादी आर्थिक सुधारों का बोझ ढो रही है और इनमें गरीबी रेखा के नीचे रहनेवाले एवं आमदनी के किसी साधन से वंचित लोगों की मुसीबतों की तो कोई हद ही नहीं है। ऐसा लगता है कि आज विकास दर 6 प्रतिशत हासिल करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के विध्वंश जनं सब्सिडी में कटौती और देशी-विदेशी मुनाफाखोरों के हाथों में पूरी अर्थव्यवस्था को सौंपने का उन्मादी अभियान चल रहा है। उदारीकरण की इस नई व्यवस्था से विदेशी सामानों को 100 करोड़ की आबादी का बाजार मिला है। कहने को तो भारत के लिए भी पूरी दुनिया का बाजार खुल गया है पर बढ़ती मंहगाई, करों के बढ़ते दर, पूंजी की कमी, सिंचाई की सुविधाओं तथा नई तकनीक के अभावों के कारण हमारे उत्पादों की कीमत इतनी अधिक है कि वे विदेशी बाजारों उनके सस्ते सामानों के मुकाबले उपभोक्ताओं को स्वीकार नहीं होंगे। इसलिए तथ्य यही है कि भारत के करीब 32 लाख लघु एवं मध्यम श्रेणी के उद्योग और इनमें काम करनेवाले करी करोड़ लोग तिल तिलकर मरने को अभिशप्त हैं। किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय दबाव में अपनी अर्थव्यवस्था में परिवर्तन देश की संप्रभुता के साथ समझौते से कम द्योतक नहीं है। इन्हें अपनाकर कोई लोकतान्त्रिक सरकार सत्ता पर काबिज नहीं रह सकती क्योंकि यह उदारीकरण भारत की संप्रभुता के साथ समझौता है जिसे यहाँ की जनता बर्दाश्त नहीं कर सकती। आर्थिक उदारीकरण के चलते देश में खतरनाक परिस्थितियाँ पैदा हो रही हैं। आम आदमी का सुख-चैन छिन लिया है इस उदारवाद ने। बेरोजगारी अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी है और अराजकता इस कदर फैल गयी है कि कल्याणकारी राज्य की अवधारणा ही समाप्त होती जा रही है। अनुभव तो यह सिद्ध करता है कि गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी और बदहाली इस कदर बढ़ जाएगी कि त्राहि-त्राहि मच जाएगी।

आर्थिक उदारीकरण भारत में सामाजिक परिवर्तन नहीं चाहता। देश का तीन-चौथाई समाज इस उदारवाद में भी आर्थिक रूप से शोषित और पीड़ित है। मौजूदा आर्थिक उदारवाद राजनीतिक अर्थशास्त्र से संचालित है। विदेशों से हजारों करोड़ रुपये का कर्ज लेकर तमाम संसाधनों का निजीकरण किया जा रहा है जिसके कारण मौजूदा आर्थिक बुनियादी ढाँचा चरमरा गया है। विगत दस सालों में गरीबी का चक्का इतना तेजी से घूमा है कि अच्छे-अच्छे खाते-पीते किसान खेती-किसानी छोड़कर और कोई रोजगार तलाशने लगे हैं। जो कोई पहले से ही खास्ताहाल थे उनकी तो पूछना ही नहीं। वाम विचारधारा वाले अर्थशास्त्रियों का मानना है कि अगर भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया को बेहतर तरीके से सम्भाला नहीं गया तो यह गरीबों को बहुत नुकसान पहुँचाने वाला साबित हो सकता है। आर्थिक उदारीकरण और कारपोरेट सत्ता की जबरदस्त आलोचक **नायोमी क्लेन** ने अपनी पुस्तक **नो लोगो** में इस चिंता को उजागर करते हुए मानती है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ पहली दुनिया के देशों के उपभोक्ताओं के साथ जोड़े-तोड़ करती है और तीसरी दुनिया के गरीब मजदूरों का शोषण करने के लिए कई तरह के अनैतिक काम करती हैं।

लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के

अर्थशास्त्री **राबर्ट वाडे** का मानना है कि गैर-बराबरी बढ़ने का मुख्य कारण तकनीकी बदलाव और वित्तीय उदारीकरण है। इसमें दुनिया के धनी छोर पर बैठे लोग लगातार धनी होते गए हैं, जबकि गरीबों को उसका लाभ नहीं मिला है। इनकी वजह से दुनिया के धनी देशों में विकास की रफ्तार काफी तेज हुई है, जबकि अफ्रीका में ठहराव की हालत है और भारत व चीन के देहाती इलाकों में भी ऐसी ही स्थिति है। कहा जाता है कि 1994 का मलेशिया संकट, 1999-98 का एशियाई आर्थिक संकट तथा 1998 का रूस का संकट भी इसी आर्थिक उदारीकरण का प्रतिफल था। यही कारण है कि आज विकासशील देशों में भी यह सवाल खड़ा है कि उन देशों में पसरी गैर-बराबरी की खाई कैसे भरी जाए? विश्व बैंक तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं को भी इन जटिल सवालों के जवाब खोजने के लिए मजदूर संगठन मजबूर कर रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ रही आलोचना के मद्दे नजर इन दोनों अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने अपने को बदलना प्रारम्भ कर दिया है लेकिन जबतक इनकी बुनियादी सोच में बदलाव नहीं आएगा तबतक आर्थिक रूप से कमजोर देश इनकी मदद का लाभ भी नहीं ले पाएंगे। जहाँ तक भारत का सवाल है सरकार की इस आर्थिक उदारीकरण की नीतियों के कारण राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण सभी वर्ग अपने वर्तमान और भविष्य दोनों को लेकर आशंकित हैं। यहाँ के किसान तो पहले ही से नाराज हैं कि सरकार की उदार आयात नीति की वजह से वे अपने ही बाजार से बाहर होते जा रहे हैं। कृषि विशेषज्ञ देवेन्द्र शर्मा का मत है कि विश्व व्यापार संगठन के कारण कृषि ही नहीं हर चीज का उत्पादन देश में चौपट हो जाएगा। अगले कुछ वर्षों में विदेशों से आनेवाली हर चीज सस्ती होगी। चीन ने उदारीकरण के मूल सिद्धान्त को पहले ही समझ लिया था और इसीलिए अपनी अर्थव्यवस्था को वैश्वीकरण के लिए खोलने से पहले अपनी कृषि उत्पादन का कई गुना बढ़ाया। आज चीन कृषि उत्पादन के क्षेत्र में विश्व के सुदृढ़तम देशों में माना जाता है। चीन की कृषि उत्पादन प्रति हेक्टेयर जहाँ पाँच टन है वहीं भारत में विश्व के औसत कृषि उत्पादन प्रति हेक्टेयर ढाई टन से भी कम है। हमारे देश का शेयर बाजार विदेशी निवेशकों के हाथ में चला गया है। हमारी अर्थव्यवस्था भी इन विदेशी खिलाड़ियों की गिरफ्त में फंस गई है। इस आर्थिक उदारवाद के खिलाफ एक बड़े देश व्यापी आन्दोलन की जरूरत है अन्यथा देश की संप्रभुता एवं स्वाभिमान दाव पर लग रही है।

संपर्कः 'दृष्टि', 6 विचार विहार,
यू-207, शकरपुर, दिल्ली-92
विकास मार्ग, दिल्ली-92

हिन्दी, कन्नड़ और मलयालम सीखें-

हिन्दी	कन्नड़	मलयालम
1. मुझे दिल्ली के लिए टिकट बुक करानी है।	नानु दिल्लीगे टिकेटु माड़िस बेकु।	एनिक् वेण्डी दिल्ली के टिकट बुक चेप्यीक्कणम।
2. मुझे बेंगलूर के दर्शनीय स्थान देखने हैं। उनके बारे में कुछ बतायेंगे?	नानु बेंगलूरीनल्लि दर्शनीय स्थानमकन्नु नोड़बेकु अवुगळ वग्गे स्वळप हेळी।	एनिक् बेंगलूरले दर्शन स्थलंगल काणणम। अतिनेपट्टी कुरण्च परंन्यु नरणम।
3. हम मैसूर जाना चाहते हैं। गाड़ी किस समय है?	नानु मैसूरिगे होगलु इच्छिसुत्तेवे रैलुगाड़ी याव समयक्केयिदे?	ञंगल मैसूरिल पोकान आग्रहिक्कन्नू/ट्रेनइंडे समय एप्पोल आणे?
4. आर०ए०सी० का मतलब क्या है?	आर०ए०सी० येंदरे एनु?	आर०ए०सी० युड़े अर्थम एन्ताणे?
5. बेटिकट यात्रा नियम के विरूद्ध है। आपको......रु का दंड देना पड़ेगा।	टिकेटिल्लदे प्रयाणिसुवुद नियमक्के विरुद्ध तावु.......रु दंड कोड़बेकु।	नियमत्तिनु विरुद्धमाणे। तांगलके...रुपा पिला कोडुक्कॆण्डी वरुम।
6. दिल्ली के लिए 3 टायर स्लीपर में **किराया** कितना है।	दिल्लीगे 3 टायर स्लीपरगे दर कितना है?	दिल्ली 3 टयर स्लीपरिंडे विलायेत्र आणे?
7. चेन्नै के लिए क्या क्या गाड़ियां हैं?	चेन्नैगे याव याव गाड़िगळिवे?	चेन्नैळेक एतेळ्ळाम ट्रयिनुकल उण्ड़े।
8. पूरी तो गरम नहीं है मुझे इडली ही काफी है।	पूरीयंतू बिसियिल्ल ननगे इडलीये साकु	पूरिक् चूड़िल्ला एनिक् इडली मती।
9. मुझे कुछ नहीं चाहिए। सिर्फ एक ग्लास चाय ला दो।	ननगे येनु बेड़ा। ओंदु लोटा चाय तेगेदुकोंडु बा।	एनिक्क ओन्नुम वेंडा, ओरु ग्लास चाय मात्रम मती।
10. दिल्ली के लिए दो कन्फर्मड टिकट मिलेगा?	दिल्लीगे एरडु कन्फर्मड टिकट सिगुत्तदेया?	दिल्लीके रण्डू कन्कर्मड़ टिकट किट्टमो?

राजभाषा अनुभाग, बेंगलूर रेलवे मंडल (दक्षिण रेलवे), बेंगलूर के सौजन्य से

चिन्ता में चिन्ता 'दादा' की चिन्ता फिर न उजड़े-लूटे! 'सोने की चिड़िया'

❑ प्रकाश कुमार 'विद्यालंकार'

आजकल अपने सभी नेतागण कह रहे हैं-हिन्दुस्तान-देश आर्थिक-सुधार के दौर से गुजर रहा है, आम आदमी का जीवन स्तर बढ़ेगा-उठेगा। गरीबी मिटेगी। हमारे लोकप्रिय और अन्य नेतागण सब एक ही स्वर में कहते हुए नहीं थक रहे हैं। जिन का स्वर कुछ थोड़ा भिन्न-भिन्न रहने पर भी मौका पड़ने पर कुर्सी हिलने के भय से बहुराष्ट्रीय वालों का 'गगन-भेदी' जय घोष कर रहे हैं।

अब 'खुली आयात नीति' के तहत 715 विभिन्न वस्तुओं की सूची से पता चलता है जैसे-गेहूँ, मक्का, चावल, बाजरा, राई के अतिरिक्त दूध, मक्खन, घी, सब्जी, तेल, सूती, टेरीकाटन के कपडे, जूते-चप्पल, साईकिल, दूरदर्शन, घड़ियाँ, बच्चों के रंगबिरगी खिलौने इत्यादि रोजमर्रा की जरुरी-जरूरत के सस्ते सामान निर्बाध-गति से सात समुन्दर के पार-विदेशों से आ रहे हैं। विभिन्न देशों में सस्ते औद्योगिक ढाँचे, सस्ती बिजली, सस्ते कच्चे माल और निर्यात पर अनुदान से 'उत्पादन का दाम (कीमत) हिन्दुस्तानी उत्पाद से आधा चौथाई बैठता-सस्ते, सात समुद्र के विदेशी माल की बाढ़ बढ़ने लगी है।

अब कहना न होगा कि रोजगार समाप्त हो रहे हैं, श्रम की कीमत गिर रही है। न्यूनतम मजदूरी वाले कानून से कम मजदूरी पर मजदूर मिल रहे हैं। धीरे-धीरे सरकारी कार्यालय और विभाग बंद हो रहे हैं, कम किए जा रहे हैं। स्वैच्छिक सेवानिवृति का वातावरण बनाने जा रहे हैं। सरकारी-कल कारखाने बचाने का ताँडव नृत्य चल रहा है। इस सन्दर्भ में रिश्वत लेने-देने के अलावा घोटाले के समाचार हर रोज दैनिक अखबारों में पढ़ने व दूरदर्शन आदि में देखने का नाटक चल रहा है। तहलका प्रकरण के बाद हिन्दुस्तान के मतदाताओं का सभी राजनेताओं पर से विशेषकर ईमानदारी के मामले में भरोसा ही उठ गया है कि अब कोई भी दल अथवा नेता सत्ता कुर्सी पर आने पर मौका मिलने पर भ्रष्टाचार करने से नहीं चुकता। पाँच साल के लिए चुनी गयी सरकारों से जनता-मतदाताओं के मोह भंग की शुरुआत हो रही है।

अपने नवजवान पढ़-लिखकर मध्याह्न-सायं प्रभात फेरी कर रहे हैं। नौकरियों की आशा में विदेश जा रहे हैं। आए दिन किसान भाइयों को कृषि उत्पादन की सही कीमत न मिलने पर भूखमरी से आत्महत्या कर रहे हैं। देहातों से नगर की ओर पलायन कर रहे हैं। अब बार-बार कहना न होगा-अखण्ड हिन्दुस्तान प्रान्त-प्रान्तों से खण्डित जिला व तालुका होगा। आम आदमी-मतदाता को आर्थिक सुधार का कोई सुफल नहीं मिल रहा है। अब दिन हमसे वह मत पूछो क्या होने वाला है....... .... लेकिन दु:ख है-'दादा' की चिन्ता! कहीं 'सोने की चिड़िया' धीरे-धीरे फिर न उजड़-लूट न जाये।

अब समय रहते हिन्दुस्तान में जरूरत है स्वदेशी उद्योग को हर कीमत पर बचाने की। अन्यथा अब नहीं तो बेरोजगारी का सैलाब राजनीतिक अस्थिरता को जन्म देगा। देश-भक्त-प्रेमियों की राजनीतिक विचार धारा के आर-पार इसके लिए आगे आना चाहिए। अब इस आन्दोलन को छेड़ने के लिए एक और महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, वीर-सावरकर, लालबहादुर शास्त्री, श्यामा प्रसाद मुखर्जी इन युग पुरुषों को पुन: हिन्दुस्तान की धरती पर जन्म लेना होगा। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने भी धर्म अथवा देश में संकट होने पर भगवान के अवतार लेने का संदेश दिया है। वर्तमान हिन्दुस्तान पर खतरा है। (**लेखक स्वतंत्रता सेनानी हैं**)

सम्पर्क: हिन्दी भवन, हिन्दी प्रचार समिति, जहीराबाद, आन्ध्रप्रदेश

जूनियर करोड़पति सैनी वैज्ञानिक बनना चाहता है

विचार संवाददाता, मुंबई

अमिताभ बच्चन का **कौन बनेगा करोड़पति** के तहत सीनियर करोड़पति हर्षवर्धन नवाथे के बाद पहला जूनियर करोड़पति बनने का सौभाग्य विशाखापतनम के नवल पब्लिक स्कूल के 10 वीं कक्षा के 14 वर्षीय छात्र **रविमोहन सैनी** को मिला। मुंबई के ताजमहल होटल मे आयोजित **स्टार प्लस** के विशेष प्रेस कान्फ्रेन्स में रवि ने बताया कि वह बड़ा होकर वैज्ञानिक बनना चाहता है और वह करोड़ रुपये में से कुछ पैसे अपनी दीदी की शादी में खर्च करना चाहेगा। मध्यवर्गीय सैनी के पिता एम० एल० सैनी नौसेना में हैं। मूलत: राजस्थान के अलवर शहर का रहनेवाला रविमोहन सैनी बुद्धिमान और हाजिरजवाबी है।

जूनियर करोड़पति 14 वर्षीय सैनी सोनाली बेन्द्रे के साथ

'गदर' के बहाने धर्मान्ध मानसिकता का क्षुद्र इज़हार

❑ दिलीप कुमार सिन्हा

फिल्म निर्माता **नितीन केनी** की एक प्रेम कथा पर आधारित **गदर** फिल्म के बहाने, जिस धर्मान्ध मानसिकता का इज़हार भोपाल के एक सिनेमा हॉल में कॉग्रेस पार्टी के एक युवक कार्यकर्ता से प्रारम्भ हुआ वह लखनऊ, नई दिल्ली, अहमदाबाद होते हुए अब मुंबई भी पहुँच गया। मुस्लिम लीग की मुंबई महानगर इकाई ने पिछले दिनों इस **गदर** फिल्म पर तुरन्त रोक लगाने का आह्वान सरकार से किया क्योंकि फिल्म के कुछ भाग से अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों की धार्मिक संवेदना को ठेस पहुँचती है। जबकि फिल्म के निदेशक **अनिल शर्मा** का कहना है कि उन्होंने इसके निर्माण में केवल यह दर्शाने का प्रयास किया है कि **प्यार की कोई सीमा नहीं होती।** सच तो यह है कि किसी भी समुदाय के विरूद्ध घृणा फैलाने के बजाय यह **गदर** फिल्म राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करता है। श्री शर्मा ने पुन: कहा, क्या ऐसा करना पाप है?

विभिन्न क्षेत्रों में इस बात को लेकर आपत्ति की जा रही है कि इस **गदर** फिल्म में **मौलाना आजाद** के नाम की चर्चा है, जिससे विश्वहिन्दू परिषद तथा भाजपा जैसी पार्टी की तरह उन्हें लीग के नेता समझने की गलतफहमी हो जा सकती है। फिल्म में एक मुस्लिम महिला **सकीना,** जिसने एक सिख युवक से विवाह रचाया है की मांग में सिन्दूर है और वह अपने पति की सुख-समृद्धि के लिए नमाज अदा करती है। इसे इतफाक ही कहा जाएगा कि फिल्म की इस अदाकारी का नाम **सकीना** है और खुदा **मोहम्मद** की लड़की का नाम भी **सकीना** था।

निर्माता **केनी** का कहना है कि भोपाल में हुए विरोध के बाद जिन मुसलमान नेताओं ने विशेष रूप से जब इस फिल्म को देखा तो इसके पक्ष में जोरदार रूप से अपने विचार व्यक्त किए। वरिष्ठ नागरिक **हाजी गुलाम मोहम्मद** ने कहा,**"पाकिस्तान के विरूद्ध बहुत सारी बातें हैं किन्तु इस्लाम के विरूद्ध कुछ भी नहीं है।** कॉग्रेस के एक मुस्लिम नेता ने कहा **इस फिल्म में कोई आपत्तिजनक बात तो नहीं ही है बल्कि ठीक इसके विपरीत इस फिल्म को अधिकाधिक लोगों को दिखलाया जाना चाहिए।**

ऐसा लगता है कि तमाम छुटभैए साम्प्रदायिक संगठनों को अपनी दुकान तेज करने का एक बहाना मिल गया है और वे मामले को और भड़काने में जुट गए हैं। दरअसल यह **गदर** फिल्म भारत-पाकिस्तान के विभाजन की उस दारूण पृष्ठभूमि पर आधारित है जिसने लाखों परिवारों को उजाड़ दिया था। विभाजन के दौरान मानवता शून्य हो गयी थी और न जाने कितनी सुहागिनों की मांग और कोख दोनों उजड़ गयीं। उस वक्त कितने ऐसे लोग थे जिन्हें इस शर्त पर जिन्दा रहने दिया गया कि वे अपना धर्म परिवर्तन कर लें। वैसी परिस्थिति में यदि कोई सिख युवक मुस्लिम लड़की से शादी कर लेता है तथा एक दूसरे की आचारगत परम्परा को अपना ही लिया तो इसमें बुराई क्या है? स्वस्थ मानसिकता में ऐसे तनाव आ ही नहीं सकते क्योंकि उन्हें यह अहसास होता है कि कोई भी कलाकृति यथार्थ का अतिसंवेदनशील निरूपण होती है। यदि उन्हें दुनिया भर की वर्जनाओं के शिकंजे में कस दिया जाएगा तब तो सांस्कृतिक विकास ही रुक जाएगा। जहां तक संवादों में किसी धर्म विशेष के पात्रों को गद्दार कहने का सवाल है, किसी का हिन्दू, मुसलमान, सिख या इसाई होना उसकी ईमानदारी की जमानत नहीं है। जिन लोगों की धार्मिक भावना मुसलमान नायिका की मांग में सिंदूर देखकर आहत होती है उनकी नजर फिल्मों में परोसे जा रहे नंगेपन की ओर क्यों नहीं जा रही जिसके प्रति इस्लाम काफी सख्त है। कथाकार **शाहिद करीम** ने ठीक ही कहा है कि **गदर** के बहाने बहुत से लोग अपने राजनीतिक रसूख को पुख्ता करना चाहते हैं। आम जनमानस को ऐसे तत्वों से सावधान और सर्तक रहना होगा क्योंकि ऐसी हरकतों से देश का सांस्कृतिक विकास तो अवरूद्ध होता ही है साम्प्रदायिक सौहार्द्र भी प्रभावित होता है।

सम्पर्क: द्वारा अम्मा प्रोपर्टिज, बी-48, पाण्डव नगर, दिल्ली-92

सभी दलों की नजर उ० प्र० के चुनाव पर

विचार कार्यालय, दिल्ली

निर्वाचन आयोग के अनुसार उत्तरप्रदेश विधानसभा का चुनाव आगामी मार्च में होने की सम्भावना है। प्रायः सभी राजनीतिक दलों की नजर उ०प्र० के इस चुनाव पर इसलिए है कि केन्द्र की राजनीति इसी चुनाव के नतीजे पर निर्भर करती है। अभी हाल में हुए पाँच राज्यों के विधानसभा चुनावों के परिणामों से तो केन्द्र की भाजपा नीत सरकार पर कोई असर नहीं पड़ा क्योंकि उन राज्यों में भाजपा की पकड़ वैसे भी पहले से नहीं थी। बल्कि सच कहा जाए तो कुछ राज्यों में उसकी सीटों में थोड़ा बहुत इज़ाफा ही हुआ। उ०प्र० के इस बार के चुनाव में लोगों की भावनाओं को भुनाने के लिए राममंदिर के मुद्दे का इस्तेमाल न कर भाजपा ने अपने बलबूते पूर्ण बहुमत पाने के लिए राज्य में स्थिर सरकार, किसानों की खुशहाली और विकास कार्य को मुद्दा बनाने की रणनीति लगभग तय कर ली है। भाजपा **बहुजन समाज पार्टी** से किसी भी तरह का तालमेल नहीं करेगी किन्तु सहयोगी दलों के साथ मिलकर चुनाव लड़ने से वह परहेज नहीं करेगी। यह बात तय है कि उ०प्र० विधान सभा का चुनाव भाजपा के अस्तित्व व अस्मिता से जुड़ा हुआ है। फिर भी सरकार संगठन में तालमेल नहीं, प्रदेश भाजपा नेताओं में सहयोग नहीं, एक दूसरे की टांग खिंचाई जारी है। कार्यकर्ताओं का असंतोष कम नहीं हो रहा है। सरकार में भ्रष्ट मंत्रियों की जमात बैठी है। सरकार व संगठन की कोई भी कार्रवाई जनता को प्रभावित नहीं कर रही है। हलाँकि यह भी सत्य है कि राजनाथ सिंह के मुख्यमंत्री होने के बाद उ०प्र० की स्थिति में थोड़ा सुधार आते दिखाई पड़ा परन्तु वहां की विधि-व्यवस्था, दलितों पर अत्याचार तथा भ्रष्टाचार का बोलवाला इतना है कि राजनाथ सिंह चाहकर भी उस पर काबू पा नहीं सकते क्योंकि वहाँ की आम जनता खासकर हाशिए पर खड़े लोगों का विश्वास वहाँ की सरकार पर अभी तक हो नहीं पा रहा है। वैसे भी सत्ता तथा संगठन दोनों पर सवर्णों का कब्जा होने की वजह से वहाँ के अल्पसंख्यक समाज की आस्था सरकार पर हो नहीं पा रही है। यही कारण है कि भाजपा में प्रभावी हो रहे पिछड़े वर्ग के कुछ नेताओं ने टिकट वितरण तथा पार्टी पदों पर **कर्पूरी ठाकुर फार्मूला** लागू करने की माँगकर पार्टी के सर्वग्राह्य राजनीति के सिद्धान्त को भी चुनौती दे डाली है।

उधर बहुजन समाज पार्टी ने भी एलान किया है कि वह अकेले चुनाव लड़ेगी और अपने दम पर सरकार बनाएगी। वह भी भाजपा के साथ गठबन्धन के लिए तैयार नहीं है। बसपा की उपाध्यक्ष **मायावती** बताती हैं कि उन्हें गठबन्धन की जरूरत नहीं। हलाकि उनका यह दावा खोखला प्रतीत होता है क्योंकि वर्तमान में कोई भी दल अकेले चुनाव लड़कर सरकार बनाने की स्थिति में नहीं है।

लोकदल के चौधरी अजित सिंह की स्थिति यह है कि भाजपा केन्द्रीय नेतृत्व द्वारा **हरित प्रदेश** के मुद्दे पर अपनी स्थिति स्पष्ट कर दिए जाने के बाद छोटे चौधरी के लिए अग्नि परीक्षा के हालात पैदा हो गए हैं। दरअसल उ०प्र०के पश्चिमी क्षेत्र में सिमटे अपने वोट बैंक को बिखरने से बचाने के लिए राष्ट्रीय लोकदल सुप्रीमों हरित प्रदेश और केन्द्र की कुर्सी के बीच फंस गए हैं। भाजपा की इस रणनीति से अजित सिंह खेमें में भी अजीब सी छटपटाहट नजर आ रही है। वैसे भी चौधरी साहब का दलबदल करने का ऐतिहासिक रेकार्ड रहा है। उनकी नजर में हरित प्रदेश कोई मुद्दा नहीं बल्कि कृषि मंत्रालय पर उनकी नजर है। विरासत में मिली चौधराहट की पगड़ी को सहेजकर रखने में छोटे चौधरी सफल होंगे इसमें सन्देह इसलिए भी है कि **ओम प्रकाश चौटाला** ने उनकी मुश्किलें इधर बढ़ा दी हैं। उनकी पकड़ पश्चिमी उ०प्र० में बढ़ने के आसार नजर आ रहे हैं यह उनकी रेलियों में हो रही भीड़ से पता चलता है।

जहाँ तक **मुलायम सिंह यादव** की **समाजवादी पार्टी** का सवाल है उनकी स्थिति उपर्युक्त दलों से बेहतर दीख रही है। कारण कि संगठन के स्तर पर वह चुस्त-दुरूस्त के अलावा मुलायम सिंह की पकड़ अल्पसंख्यक वोट बैंक पर अच्छी खासी नज़र आ रही है। आसन्न चुनाव में सपा औरों से बेहतर स्थिति में होगी, ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा।

जहां तक मुलायम सिंह यादव की समाजवादी पार्टी का सवाल है उनकी स्थिति उपर्युक्त दलों से बेहतर दीख रही है। कारण कि संगठन के स्तर पर वह चुस्त-दुरूस्त के अलावा मुलायम सिंह की पकड़ अल्पसंख्यक वोट बैंक पर अच्छी खासी नजर आ रही है। आसन्न चुनाव में सपा औरों से बेहतर स्थिति में होगी, ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा।

कांग्रेस की स्थिति तो और दयनीय है। न तो संगठन का ढाँचा ठीक हो पाया है और ना ही केन्द्रीय नेतृत्व की पकड़ उ०प्र० पर हो पाई है। आखिर कांग्रेस क्यों नहीं सोच पा रही है कि **सोनिया गाँधी** के रूप में उसके पास इतना कमजोर नेता है कि ऐसे नेता के भरोसे लम्बी छलांग लगाने की सोचना अंततः हताश ही करने वाला है। आज राजनीतिक दल चुनाव जीतने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। वे अपने घोर विरोधी राजनीतिक दलों से भी हाथ मिलाने से बाज नहीं आएंगे। और तो और स्वयं को औरों से अलग बताने वाली भाजपा भी सत्ता पाने के लिए किसी भी सीमा तक जा सकती है। कांग्रेस की तो कहिए मत। पिछले बिहार विधानसभा चुनाव में राजद के खिलाफ चुनाव लड़ने वाली कांग्रेस चुनाव सम्पन्न होने के बाद लालू सरकार को समर्थन देने में संकोच नहीं किया।

कुल मिलाकर देखा जाए तो भाजपा ने अपनी छवि सत्तालोलुप राजनीतिक दल के रूप में ही अधिक बनाई है। सत्ता को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के कारण ही भाजपा की नीतियों से दूर-दूर तक भी कुछ लेना-देना नहीं था। यही हाल भाजपा की उ०प्र० में भी है। आज जो दलों की स्थिति है उसमें यह कहा नहीं जा सकता कि उ०प्र० के चुनाव में ऊँट किस करवट बैठेगा।

संघर्ष विराम को लेकर पूर्वोत्तर राज्यों में जनाक्रोश

विचार कार्यालय, कोलकाता

किसी को भी ऐसी उम्मीद नहीं थी कि केन्द्र सरकार द्वारा नगालैंड के संगठन एन० एस० सी० एन० (आई०एम०) के साथ संघर्ष विराम की अवधि बढ़ाए जाने के समझौते में उसका दायरा अन्य प्रदेशों तक भी बढ़ाने के विरोध में मणिपुर और असम की जनता द्वारा इस तरह उग्र प्रदर्शन किया जाएगा । मणिपुर की राजधानी इम्फाल में पिछले दिनों विधानसभा और मुख्यमंत्री सचिवालय सहित विभिन्न पार्टियों-दफ्तरों में आग लगा दी गयी। यही नहीं विधानसभाध्यक्ष का घर भी फूँका गया और उन्हें बुरी तरह घायल कर दिया गया। लाठी और अश्रु गैस के गोले जब बे असर हो गए तब पुलिस को गोली चलानी पड़ी जिससे तेरह लोग मारे गए । जब जनता विद्रोह पर उतर आई तो प्रशासन को कर्फ्यू लगाना पड़ा ।

असम में भी वहाँ की जनता द्वारा प्रदर्शन प्रारम्भ हो गया है। ऐसा लगता है कि नगालैंड के उग्रवादियों से जो समझौता केन्द्र ने किया मणिपुर तथा असम की जनता के मन में यह बात समा गयी कि केन्द्र ने ग्रेटर नगालैण्ड की माँग को स्वीकार कर उनके राज्यों के कुछ क्षेत्रों को उसमें शामिल किया जाएगा। कारण कि संघर्ष विराम के दायरे को नगालैंड से बढ़ा कर असम,मणिपुर आदि पड़ोस के उन राज्यों तक भी कर दिया गया है जहाँ नगा आबादी काफी तादाद में है इस बात की आशंका से मणिपुर के लोगों की प्रादेशिक अखण्डता की भावना आहत हुई। हलाँकि एन०एस०सी०एन०के नेता हीं मुईया ने कहा है कि इस संघर्ष विराम के समझौते का वृहद नगालैंड की माँग से कोई सम्बन्ध नहीं है, लेकिन मणिपुर तथा असम की जनता इससे संतुष्ट नहीं है। दरअसल केन्द्र सरकार ने जमीनी सच्चाई को नजरअंदाज कर अफसरी अंदाज में समस्या को सुलझाने को कोशिश की गई जिसकी वजह से एक समस्या सुलझाने के क्रम में एक नयी समस्या पैदा हो गयी। नगा समस्या पर अब आगे कदम बढ़ाने से पहले उस क्षेत्र की जनता और पूर्वोत्तर राज्यों की सरकारों को विश्वास में लेने के साथ-साथ इस मसले पर केन्द्र सरकार को खुली बहस कराना उचित होगा ।

ममता बनर्जी कहीं की नहीं न दिल्ली की न कोलकाता की

विचार कार्यालय, कोलकाता

अभी हाल में ही प०बंगाल के चुनाव चार अन्य राज्यों के साथ हुए। भविष्यवाणी यह की गयी थी कि प० बंगाल में विगत 24 साल से सत्तासीन वाममोर्चे के मुख्य मंत्री के पद पर तृमूकां की **ममता बनर्जी** बैठेंगी और कांग्रेस-तृमूकां गठबन्धन को करीब 180 सीटें मिलेंगी और वाममोर्चा का 105 किन्तु परिणाम ठीक इसके विपरीत निकला। वाममोर्चे को 200 से भी ज्यादा सीटें मिलीं और ममता बनर्जी कहीं की नहीं रहीं। न दिल्ली की न कोलकत्ता की। सुश्री ममता ने तहलका प्रकरण के पश्चात् राजग छोड़ी और रेलमंत्री से हाथ धोयीं। अब उसी राजग में प्रवेश के लिए एंड़ी-चोटी एक कर रही हैं। रक्षा सौदों की दलाली के रहस्योद्घाटन के बाद जिस रक्षा मंत्री **जार्ज फर्नांडीस** को मंत्रिमंडल से बाहर निकालने की सुश्री ममता बनर्जी ने जिद्द ठान ली थी, आज राजग में शामिल होकर पुनः मंत्री बनने की फिराक में उन्हें उसी जार्ज के आगे-पीछे करना पड़ रहा है क्योंकि राजग के संयोजक होने के नाते जार्ज की हैसियत आज भी बरकरार है।

राजग में वापसी का रास्ता तलाश रहीं ममता को समझा दिया गया है कि राजग से जाना तो आसान था, लेकिन वापसी आसान नहीं रह गई है। अगर वह वापस आना ही चाहती हैं तो रास्ता मात्र प्रधानमंत्री या गृहमंत्री की मिज़ाज़ पुर्सी से खुलने वाला नहीं है उन्हें पहले राजग के विशेषकर उन घटक दलों को मनाना होगा जो उनके व्यवहार से अत्यधिक खफ़ा हैं। इनमें सबसे उपर समता पार्टी का नाम आता है जिसके वरिष्ठ नेता जार्ज फर्नांडीस हैं। भाजपा अध्यक्ष जना कृष्णमूर्ति ने भी कहा -"ममता को समझ लेना चाहिए कि यहां अब फ्री एंट्री नहीं हो सकती। मुझे नहीं लगता कि वह वापस आएंगी।" ऐसी स्थिति में ममता जी न घर के रहीं और न घाट के ।

पेन्सन प्रणाली में आमूल परिवर्तन के आसार

विचार कार्यालय, दिल्ली

महालेखा नियंत्रक ए०एम०सहगल के नेतृत्व में पेन्सन जिम्मेदारी के सवाल पर गठित एक कार्य समूह ने वर्ष 2009-10 तक सरकार की पेन्सन सम्बन्धी देनदारी को प्रति वर्ष 29, 500 करोड़ से 33, 500 करोड़ रुपये तक सीमित करने के लिए एक नयी कर्मचारी अंशदान प्रणाली का सुझाव केन्द्र सरकार को दिया है।

भारत के वित्त मंत्री को दिए गए प्रतिवेदन में कहा गया है कि इस कोषीय प्रणाली(Funded System) के तहत कर्मचारियों की भागीदारी पेन्सन योजना में काफी होगी जो लोग सरकारी सेवा में नए आएंगे। इस कार्य समूह ने आशा व्यक्त की है कि इस प्रणाली के लागू होने के बाद वेतन आयोग बैठाने की आवश्यकता नहीं होगी। वित्त, रक्षा, रेलवे तथा डाक व दूरसंचार विभागों के प्रतिनिधियों से गठित इस समूह ने नयी कोषीय प्रणाली का सुझाव देते हुए कहा है कि वर्तमान पेन्सन प्रणाली में कर्मचारियों द्वारा अंशदान नहीं देने की वजह से वर्तमान पीढ़ी या यूँ कहा जाय कि सरकार पर वित्तीय भार अधिक होता जा रहा है।

केन्द्र सरकार कार्य समूह के इस सुझाव पर वर्तमान पेन्सन निधि को किसी निजी म्यूच्यल निधि प्रबन्धक को सौंपने पर विचार कर रही है। उल्लेखनीय है कि सरकार की वर्तमान पेन्सन देनदारी का अधिकतर भाग रेल तथा रक्षा मंत्रालय के कर्मचारियों पर चला जाता है जबकि असैनिक देनदारी प्रतिवर्ष 3,500 करोड़ रुपये के आस-पास है।

कई समस्याओं से एक साथ जूझना पड़ रहा है जार्ज को

विचार कार्यालय, दिल्ली

भारत सरकार के पूर्व रक्षामंत्री और समता पार्टी के नेता जार्ज फर्नांडीस को इन दिनों कई समस्याओं से एक साथ जूझना पड़ रहा है। एक तो केन्द्रीय मंत्रिमंडल में पुनर्स्थापित होने के लिए तहलका डॉट कॉम द्वारा रक्षा सौदों की दलाली की जाँच के परिणामों का इंतजार करना पड़ रहा है जिसके लिए एहतितात के तौर पर अभी से तृमूकां की ममता बनर्जी को राजग में शामिल करने के लिए उन्होंने हरी झंडी दे रखी है। दूसरी ओर राजग में संयोजक के रूप में अपनी विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए उन्हें एंड़ी चोटी एक करना पड़ रहा है। इन दोनों स्थितियों के अतिरिक्त अपनी पार्टी के विक्षुब्धों को शांत कर पार्टी बचाने के लिए भी उन्हें काफी मशक्कत करनी पड़ रही है।

पर्यवेक्षकों का मानना है कि इन तीनों मोर्चों से बेदाग बचने के लिए कोई सरल उपाय खोजने के सिलसिले में वे एक-दूसरे से उलझते जा रहे हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मणिपुर के मामले में उन्होंने अपनी व्यक्तिगत रूचि लेकर राष्ट्रपति शासन लगवायी जिसको लेकर न केवल राजग हलकों में अब यह सवाल उठने लगे हैं कि जार्ज ने संयोजक के रूप में अपने पद प्रभावों का बेजा इस्तेमाल किया। जद(यू) तथा लोक जनशक्ति पार्टी ने तो वहाँ फैली अव्यवस्था के लिए जार्ज को जिम्मेदार ठहराया ही, समता पार्टी के शीर्षस्थ नेता नीतीश कुमार ने भी साफ कह दिया था कि मणिपुर में समता पार्टी का ज्यादा जनाधार नहीं रहने के कारण हमें वहाँ हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। कहा जाता है कि जार्ज के कई निर्णयों से नीतीश कुमार भी खुश नहीं है। ममता बनर्जी को पुनः राजग में शामिल करने को लेकर भी श्री कुमार द्वारा एतराज किया जाना लाजिमी दिखता है क्योंकि तहलका प्रकरण को लेकर राजग छोड़ वामपंथी का 'बी' टीम कहनेवाली जिस ममता जी ने कांग्रेस का दामन थामा उन्हीं को पुनः राजग में शामिल करने का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। आखिर सिद्धान्त, विचार और नैतिकता को इस प्रकार खुलेआम बलि देना ही तो नीतीश कुमार को रास नहीं आ रहा है।

समता पार्टी का अन्दरूनी मामला भी इस वक्त ठीकठाक नहीं चल रहा है। पार्टी का सांगठनिक ढाँचा जस का तस है। कार्यकर्त्ताओं का मनोबल दिनोदिन गिरता जा रहा है क्योंकि पार्टी के पदाधिकारियों का आपसी खींचतान से सामंजस्य बैठा पाने में वे अपने को असमर्थ पा रहे हैं। इसलिए न तो जनसमस्याओं को लेकर पार्टी द्वारा कोई आन्दोलन छेड़ा जा रहा है और ना ही जनाधार को मजबूती प्रदान के लिए कोई ठोस कदम उठाया जा रहा है।

विनाशकारी भूकम्प-पीड़ितों की सहायता में सरकारी तंत्र विफल
स्वैच्छिक संगठनों ने हाथ खींचा

विचार संवाददाता, अहमदाबाद

विगत 26 जनवरी को गुजरात के भुज और कच्छ क्षेत्रों में विनाशकारी भूकम्प से वहाँ के जान-माल की जो तबाही हुई उससे सारा देश-विदेश परिचित है किन्तु वहाँ की सरकार बेखबर रही। गुजरात सरकार की कार्यशैली से क्षुब्ध होकर बड़ी संख्या में गैर-सरकारी संगठनों ने राज्य में आए विनाशकारी भूकम्प से सबसे अधिक तबाह हुए कच्छ जिले में जारी पुनर्निर्माण कार्यों से अपना हाथ खींच लिया है। इनका आरोप है कि राज्य सरकार के अधिकारियों और वहां के स्थानीय नागरिकों से अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पा रहा है।

लगभग 200 स्वैच्छिक गैर-सरकारी संगठन कच्छ जिले के भूकम्प प्रभावित गांवों में पुनर्निर्माण का काम रोक कर वापस जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त राज्य 26 जनवरी को आए भूकम्प में मृतकों की संख्या को लेकर भ्रम का माहौल अभी भी बरकरार है। उधर कर्नाटक के मुख्यमंत्री का आरोप है कि भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए उनके राज्य के लोगों द्वारा एकत्रित 30 करोड़ रुपये की राशि गुजरात सरकार नहीं प्राप्त कर रही है। यह अपने आप में आश्चर्य की बात है और तो और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रभावित कुछ गांवों को गोद लेने के दावों के सवाल पर गुजरात सरकार के एक अधिकारी का कहना है कि प्रभावित गांवों के लोगों ने गोद लिए जाने से इंकार किया जबकि गोद नहीं लिए जाने पर उन्हें मकान बनाने के लिए 40 हजार से 90 हजार रुपये सरकार से मिलेंगे। अधिकारी का यह दावा सरासर भ्रामक है।

अन्नान दूसरी बार महासचिव नियुक्त

विश्व नागरिक के रूप में जाना जानेवाले **कोफी अन्नान** को संयुक्त राष्ट्र संघ का दूसरी बार पाँच वर्षों के लिए महासचिव नियुक्त किया गया। श्री अन्नान ने यू० एन० जेनरल असेम्बली को संबोधित करते हुए कहा कि पहली बार की उनकी नियुक्ति परिवर्तन और चुनौतीभरी थी और दूसरी बार हमारी नियुक्ति न्यायोचित तभी होगी जब संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रति विश्व के अधिकाधिक लोगों का विश्वास होगा।

वी०पी० सिंह पुनः सक्रिय राजनीति में

विचार कार्यालय, दिल्ली

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री तथा गैर राजनीतिक संगठन **किसान मंच** के संयोजक विश्वनाथ प्रताप सिंह ने घोषणा की है कि वे सक्रिय राजनीति में वापस आ गए हैं। श्री सिंह ने आगामी 9 अगस्त को मंडल दिवस मनाने की घोषणा की है। कहा जाता है कि भाजपा के राममंदिर का जवाब मंडल दिवस के दिन होने वाले कार्यक्रमों से देंगे। ध्यातव्य है कि मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने की अधिसूचना 9 अगस्त को ही जारी की गयी थी। उन्होंने कहा कि भाजपा राममंदिर के निर्माण को अपनी आस्था का सवाल उठाती है लेकिन आस्था कोई रूमाल नहीं है, जिसे जब चाहा जेब में रख लिया और जब चाहा निकाल दिया। श्री सिंह का भाजपा के राम मंदिर के निर्माण के सवाल पर यह नजरिया गौरतलब इसलिए है कि भाजपा का उद्येश्य मंदिर निर्माण नहीं बल्कि उस मुद्दे को समय-समय पर उछालकर खिसके हिन्दू वोट बैंक खींचना है।

पुरी की रथ यात्रा में सैकड़ों मुसलमान शामिल

साम्प्रदायिक सद्‌भाव की अनूठी मिशाल

विचार कार्यालय, भुवनेश्वर

उड़ीसा तथा उसके आस पास के लाखों श्रद्धालुओं ने बादलों से ढंके आकाश तले भगवान जगन्नाथ की सुप्रसिद्ध रथ यात्रा देखी। और तो और इस रथयात्रा में साम्प्रदायिक सद्‌भाव की एक मिशाल तब देखने को मिली जब-जब केन्द्रपाड़ा के देउलासाही गांव के करीब 500 मुसलमान अपने हिन्दू पड़ोसियों के साथ गांव की रथ यात्रा अनुष्ठान में शामिल हुए। जबकि आमतौर पर ऐसे समय में मामूली बात पर भी धार्मिक और साम्प्रदायिक भावनाएं भड़क उठती हैं।

पूरी में पूर्जा अर्चना के बाद तीनों देवों-जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलभद्र और उनकी बहन देवी सुभद्रा को अलग-अलग रथों पर विराजमान कराया गया और गुण्डीचा मंदिर ले जाया गया जहां वे नौ दिन व्यतीत कर जब वे लौटेंगे तो इसी तरह के अनुष्ठान उस दिन भी आयोजित होंगे।

इस रथ यात्रा महोत्सव में 4500 पुलिस कर्मियों के अतिरिक्त रेपिड एक्सन फोर्स की दो कम्पनियां और तकरीबन 500 अधिकारी तैनात किए गए। भारी संख्या में वाहन, खोजी कुत्तों, विस्फोटक और मेटल डिकेक्टरों के आलाव विमान से भी निगरानी किया जा रहा था। उड़ीसा के मुख्यमंत्री **नवीन पटनायक** ने इस अवसर पर 13 वीं से 19 वीं सदी की अवधी के 24 पुराने भजनों का एक कैसेट रिलीज किया। **कवि कंठे जगन्नाथ** शीर्षक से इस कैसेट के इन भजनों को डॉ० सुधा मिश्रा ने गाया है।

120 साल पुराने पुल टूटने से केरल में रेल दुर्घटना

विचार कार्यालय, तिरूवनन्तपुरम

पिछले दिनों केरल में कडालुंडी नदी में मंगलूर-चेन्नई मेल के आठ डब्बे पुल के टूटने की वजह से पटरी से उतर गए जिसमें से छह नदी में गिर गए। रेलमंत्री नीतीश कुमार ने घटना स्थल का दौरा करने दौरान कहा कि रेल दुर्घटना का कारण प्रथम दृष्टि में 120 वर्ष पुराने कडालुंडी पुल का टूटना था। रेलमंत्री ने पुल के एक पाए के ध्वस्त होने की बात स्वयं स्वीकार कि है। हलांकि सही कारणों का पता रेलवे के मुख्य सुरक्षा आयुक्त द्वारा की जा रही वैधानिक जांच के पूरा होने के बाद दी पता चला पाएगा। श्री कुमार ने तत्काल 51 लोगों के मारे जाने और 262 के घायल होने की पुष्टि की है। किन्तु इस रिर्पोट के लिखे जाने तक मरने वालों की संख्या 60 तक पहुंच चुकी है।

स्थानीय लोगों का विश्वास है कि इस रेल दुर्घटना के पीछे ब्रिटीश राज के दौरान बने उस पुल का हाथ है जिससे गिरकर इस रेल के डिब्बे नदी में डूब गए। रेल मंत्रालय के प्रवक्ता के अनुसार सौ साल से भी अधिक यह पुल खतरनाक पुलों की श्रेणी में नहीं था पर गाड़ी जब पुल से गुजर रही थी तो पुल के दो पाये एकाएक क्यों खिसक गए जिससे यह दुर्घटना हुई। ऐसा कहा जा रहा है कि इस क्षेत्र में लगातार हो रही भारी वर्षा की वजह से इन पायों के नीचे की जमीन अचानक खिसक गई।

कहा जाता है कि 1880 और 1890 के बीच भयंकर सुखा के वक्त राहत कार्य के लिए सौ साल पहले अस्थायी उपाय के तौर पर यह पुल बनाया गया था। 1989 में पुल सुधार कमिटी ने कह दिया था कि इसे चार वर्षों के अन्दर-अन्दर तोड़ दिया जाए पर विशेषज्ञों की तमाम चेतावनियों के बावजूद आज 12 साल बाद भी इस पुल का इस्तेमाल होता रहा। इस प्रकार, केरल की इस रेल दुर्घटना ने रेल-प्रणाली के रख रखाव के प्रति सरकार व उसके अधिकारियों की उपेक्षा को एक बार फिर उजागर कर दिया और साथ ही रेल की सुक्षित यात्रा पर प्रश्न चिन्ह जड़ दिया है।

नि:सन्देह पुरानी होती रेल पटरियां, उनकी निगरानी में लापरवाही, आधुनिक सिग्नल प्रणाली का अभाव तथा धन की कमी बढ़ती हुई रेल दुर्घटनाओं के कारण है। किन्तु इसके अतिरिक्त एक और कारण है मानवीय भूल । निरन्तर बढ़ती रेल दुर्घटनाओं से चिंतित होकर केन्द्र सरकार ने सुरक्षा पर अधिक ध्यान देने की दृष्टि से 17 हजार करोड़ रुपये का **रेल सुरक्षा कोष** बनाने की घोषणा की। यह राशि मुख्यत: 12260 कि०मी० रेल पटरियों को सुधारने, 515 पुलों की मरम्मत, सिग्नल प्रणाली में सुधार तथा रेलवे के सचल स्टाफ को अधिक सुरक्षित बनाने पर व्यय की जाएगी। वस्तुत: यदि रेल कर्मचारी और अधिकारी अपनी ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दें तो वह दिन दूर नहीं जब विशाल भारत की विस्तृत पटरियों पर वेगवती भारतीय रेल शैतान का पर्याय नहीं, स्वाभिमान का प्रतीक बनेगी।

भारत 2020 तक चाँद पर तिरंगा लहराएगा

सन 2020 तक चन्द्रमा की जमीन पर भारतवर्ष अपना तिरंगा फहरा देगा। ऐसा मानना है भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार **डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम** का जिन्होंने देहरादून के भगवानपुर गांव में यह बात कही। **विजन 2020** नामक पुस्तक के लेखक डॉ० कलाम ने कहा कि भारत को विकसित देशों की कतार में शुमार करने के लिए उनके पास विजन है और उसी के तहत इन दिनों 500 वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों द्वारा एक कार्य योजना बनाई जा रही है जो लगभग चार-पाँच माह में तैयार हो जाएगी। उन्होंने कहा कि भारत को विकसित करने के लिए दो मुख्य महत्वपूर्ण विन्दु हैं। पहला है इस समय गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले 30 करोड़ लोगों की संख्या को कम करना और दूसरा इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए सकल घरेलू उत्पाद की दर को मौजूदा छह फीसदी से बढ़ाकर दस फीसदी तक ले जाना। इसके लिए यहाँ के नेताओं, नौकरशाहों तथा जनता की सोच में बदलाव लाना होगा। भारतीय परमाणु कार्यक्रम के जनक डॉ० कलाम ने जोर देकर कहा कि किसी भी ख्वाब को हकीकत में बदलने के लिए परिकल्पना जरूरी है क्योंकि सपने विचार में बदलते हैं और विचार ही कार्यक्रम लेते हैं।

यदि डॉ० कलाम की बातों पर गौर करें तो सचमुच आज हमारा देश एक ऐसे चौराहे पर खड़ा है जहाँ हमें ठोस रूप से आत्मनिरीक्षण एवं गहन-चिन्तन करने की जरूरत है। सुरसा की भाँति बढ़ती जनसंख्या पर रोक लगानी होगी तथा शिक्षा का प्रचार-प्रसार जोर-शोर से खासकर समाज के निचले तबके के बीच करना होगा।

- विचार प्रतिनिधि, देहरादून से

धर्म के ठेकेदारों में युवती को लेकर संघर्ष

साधुओं के काले कारनामों का कच्चा चिठ्ठा

पिछले दिनों धर्मनगरी हरिद्वार में एक नेपाली युवती को लेकर धर्म के ठेकेदारों व साधुओं के बीच हुए खूनी संघर्ष में युवती समेत छह लोगों की मौत हो गयी। पुलिस के अनुसार इस कांड के पीछे वह नेपाली युवती थी जिसके कारण साधुओं ने आपस में चिमटे व धारदार हथियार चलाए।

संक्षेप में कथा यह है कि कुछ ही दिनों पूर्व साधु बना राकेश उर्फ विष्णु नामक व्यक्ति हरिद्वार के मुख्य गंगा नीलधारा के किनारे करीब 12 बजे काली मंदिर के पास एक नेपाली युवती को लेकर अपनी झोपड़ी में आया था। उस झोपड़ी के पास अन्य साधुओं की पाँच-छह झोपड़ियाँ और बनी हुई हैं। बस क्या था, अन्य साधु बाबा के मुँह में लार टपकने लगे और लगे उस युवती के लिए आपस में मारपीट करने। चिमटे चले और चले धारदार हथियार भी जिसमें उस युवती की जान तो गयी ही, साथ ही अन्य पाँच लोगों को भी अपनी जान गवानी पड़ी। यही है हिन्दू धर्म के ठेकेदारो का हाल जिन्होंने हिन्दू धर्म को बदनाम ही नहीं किया है बल्कि इसे डूबोने पर आतुर हैं।

- विचार संवाददाता, उ०प्र०

चर्चा में है चार सेन्टीमीटर की कुरान

किसी व्यक्ति की चाह एवं अपने लक्ष्य को पूरा करने का आत्मविश्वास कठिन से कठिन कार्य को भी सरल बना देता है। इस बात को सिद्ध कर दिया है तमिलनाडु के कडुम्बाडी क्षेत्र के निवासी शाहूल हमीद ने। इस व्यक्ति ने छह माह से भी अधिक समय में दिन-रात कठिन परिश्रम कर एक विचित्र कुरान तैयार की है जिसकी लम्बाई मात्र चार सेन्टीमीटर है और यह एक अंगुल के बराबर है। हमीद ने इस कुरान को अति सरल भाषा में लिखा है।

माचिस के डिब्बे के आकार में तैयार की गई इस कुरान को पढ़ने के लिए हालांकि मोटे चश्मे की जरूरत पड़ती है परन्तु शाहिल हमीद की आश्चर्यचकित कर देने वाली यह कृति यहाँ के लोगों के बीच चर्चा का विषय बनी हुई है। इतनी छोटी कुरान को बनाने के पीछे हमीद का कहना है कि आज के इस व्यस्ततम जीवन में किसी के पास भी इतना समय नहीं है कि कुछ समय उस ऊपरवाले का नाम ले सके। उनका मानना है और उनकी यह धारणा सत्य है कि बंदा जब अल्लाह का नाम नहीं लेता तो गलत कार्य करने से उसे डर नहीं लगेगा। इस छोटी सी कुरान की खासियत यह है कि कोई भी बंदा इसे चौबीस घंटे अपने पास पॉकेट में रख सकता है और जब यह कुरान उसके पास रहेगी तो अल्लाह के डर से वह गलत काम करने से बचने का प्रयास जरूर करेगा।

शाहूल हमीद की यह धारणा कितनी सटीक और शिक्षाप्रद है जिसपर हर आदमी चाहे वह किसी मजहब का हो, जो आज बेतहासा उपभोग वादी बनता जा रहा है, को गौर करना चहिए।

खबरदार ! आप पर भी गाज गिरनेवाली है

तमिलनाडु राज्य के कांचीपुरम नगर पालिका ने प्लास्टिक की चीजों का उपभोग करने वाले लगभग 50000 से भी आधिक लोगों को कानूनी नोटिस जारी कर यह दर्शा दिया कि प्रशासन पलास्टिक से बनी चीजों के उपयोग कर प्रतिबंध लगाने के लिए वचनबद्ध है। यह नोटिस नगर पालिका के मुख्यत: व्यापारिक प्रतिष्ठानों, भोजनालयों, विवाह मंडपों एवं अन्य छोटे दुकानदारों को जारी किया गया है। नगरपालिका के इस निर्णय का स्वागत किया जाना चाहिए क्योंकि पर्यावरण एवं धरती को नुकसान पहुँचने वाले लोगों के लिए यह एक सबक है।

किसी भी नगर या कस्बे के प्रतिष्ठानों को अब भी सावधान हो जाना चाहिए क्योंकि यह योजना केवल कांचीपुरम के लिए नहीं बनाए गए हैं। प्लास्टिक के बनाए कपड़े अथवा कागज के थैलों का उपयोग वांछनीय है क्योंकि उन्हें आसानी से नष्ट किया जा सकता है।

- विचार संवाददाता, चेन्नई से

बैंकों में स्वैच्छिक साथ क्रिकेट मैच

हाथ अगरबत्ती, पांव मोमबत्ती वाली दुनिया की सबसे दुबली-पतली महिला

यदि मन में दृढ़ इच्छाशक्ति हो और हार को नजरअंदाज कर आगे बढ़ने और कुछ करने की तमन्ना हो तो सफलता आपके हाथों को अवश्य चूमेगी। कहा जाता है कि ब्राजील की एक महिला किसी दिन इतनी कमजोर थी कि किताब उठाने के लिए भी उसे काफी मशक्कत करनी पड़ती थी और वह हिम्मत नहीं हारने की वजह से इस महिला के बारे में सुनकर सहसा ही **हाथ अगरबत्ती, पांव मोमबत्ती**, वाली कहावत याद आ जाती है।

ब्राजील की करीब 30 वर्षीय 5 फिट 7 इंच की **एरिआल्डेस अल्वेस** नाम की एक महिला जिसका वजन मात्र 16-17 किलो था और जिसे दुनिया की सबसे पतली महिला होने का श्रेय प्राप्त था, अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के बूते पर कसरत करना प्रारम्भ किया तथा विशेषज्ञों की देखरेख में स्वास्थ्यवर्द्धक आहार लेकर चलने-फिरने लायक ताकत जुटाई। अल्वेज का अतीत काफी परेशानियों से भरा था। भूख नहीं लगने और पाचनतंत्र की एनेरेक्सिया बिमारी के कारण उसका शारीरिक विकास रुक गया और वह हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गई। लोग उसे **कंकाल लड़की, हाड़-मांस सुन्दरी** और **मानव खुरचनी** जैसे नामों से पुकारते थे। नब्बे के दशक में अमरीका एवं ब्रिटेन के समाचार पत्रों ने **अल्वेज** को दुनिया का सबसे कमजोर महिला बताते हुए छापा। इसके बाद उसके पास पाठकों के ढेर सारे पत्र आए, जिनमें उससे हिम्मत नहीं हारने का आग्रह किया गया। इसके बाद तो उसने नहीं हारने का संकल्प लिया और अपनी सेहत का ख्याल ऐसा किया कि आज अल्वेज का फिटनेश वीडियो पूरी दुनिया में तहलका मचाए हुए है और ब्राजील की कई अभिनेत्रियां उससे चुस्त-दुरुस्त रहने के गुर सीख रही हैं। अल्वेज ने अपनी महीन काया के अनुरूप एक नई तरह का **नृत्य "डू दी स्कीनी"** इजाद किया है जो कि ब्राजील के लम्बाडा नृत्य के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय माना जा रहा है।

विश्व की सबसे छोटी जादूगरनी सुहानी

अहमदाबाद संवाददाता

कला और प्रतिभा किसी उम्र की मोहताज नहीं होती है इसे सिद्धकर दिखाया है 9 वर्षीय एक छोटी-सी नन्ही सुहानी ने। नामीगरामी जादूगरों के करतबों को भी मात करती आत्म विश्वास से भरी सुहानी के जादू देख लोग दांतों तले उंगलियाँ दबा लेते हैं। मात्र 4 वर्ष की उम्र से जादू की दुनिया में प्रवेश करने वाली सुहानी अब देश-विदेश में 500 से अधिक शो कर चुकी है। इस नन्ही गुढ़िया के लिए कार को 7 फुट हवा में उठाकर गायब कर देना, छह फुट के सियादर को डेढ़ फुट का बौना बना देना, आँख पर पट्टी बाँध कर कुछ भी लीखना तथा कार चलाना और मंच से 15 फुट ऊपर स्वयं का उड़ना आदि मामूली बात है। अपने हैरत अंग्रेज कारनामों से गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में अपना नाम दर्ज करने वाली सुहानी का दावा है कि वह कार के अलावा ताजमहल को भी गायब कर सकती है, इसके लिए पूरे मनोयोग से तैयारी कर रही है। सुहानी पहले लड़का को जिंदा जला देती है और फिर उसी लड़का को हंसते हुए मंच पर पेश करती है तो लोग अचंभित हो जाते हैं।

सुहानी देश की पहली ऐसी जादूगरनी हैं जो स्वयं के ही दो टुकड़े कर देती है। सुहानी आँच पर पट्टी बाँध कर किसी भी रोड पर गाड़ी चला सकती है। तीन घंटे के शो में अपने 23 आइटम दिखानेवाली सुहानी ने संसार के तमाम जादूगरों के खास आइटम समेटे हैं।

22अक्टूबर,1997 में अहमदाबाद में अपना प्रथम स्टेज शो करनेवाली सुहानी के पिता चन्द्रकान्त शाह गरमेन्ट एक्सपोर्ट के व्यवसायी तथा माँ स्नेहलता ड्रेस डिजायनर है औ सुहानी की तमाम ड्रेस वही तैयार करती है। अहमदाबाद के माउन्ट कार्मेल स्कूल की छात्रा सुहानी पांचवी कक्षा में 95 प्रतिशत अंक से उत्तीन हुई, सात साल की उम्र में बेसिक कम्प्यूटर में डिप्लोमा तथा 8 साल की उम्र में वेब डिजायनिंग में डिप्लोमा प्राप्त करने वाली सुहानी भारत की सबसे छोटी वेब डिजायनर बन गई है जिसकी अपनी खुद की वेबसाइट है। है न इस नन्हीं सी जान के करतब कमाल के?

............यही हाल रहा तो लड़के तरसेगें जीवन संगिनी के लिए

भारत के जनगणना पंजीयक द्वारा वर्ष 2001 की जनगणना के अस्थायी आंकड़ों के अनुसार छह वर्ष से कम उम्र की बच्चियों की आनुपातिक संख्या में तेजी से कमी आई है। वर्ष 1991 में जहाँ 1000 बच्चों के मुकाबले बालिका अनुपात 945 था, वह 2001 में 927 हो गया यानी 18 अंकों की गिरावट। यदि यही हाल रहा तो आने वाले समय में बालिकाओं को चिराग लेकर ढूढ़ना पड़ेगा और लड़के तरसते रह जाएंगे अपनी जीवन-संगिनी के लिए।

प्रो० आशीष बोस के अनुसार 1961 में छह वर्ष से कम उम्र के बच्चों का लिंग अनुपात 976 था, 1971 में 964, 1981 में 962 और 1991 में यह 945 हो गया था। जनगणना आयुक्त की रपट के अनसार पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, चंडीगढ़ और दिल्ली में भी बलिकाओं की संख्या में तेजी से कमी आई है। पंजाब में बालक बालिका अनुपात गिरकर 875 से 793, हरियाणा में 879 से 820, हिमाचल प्रदेश में 951 से 897, गुजरात में 928 से 878, चंडीगढ़ में 899 से 845 और दिल्ली में 915 से 865 हो गया है।

जनगणना आयुक्त ने अपनी रपट में कहा कि यह असंतुलन इतने प्रारम्भिक चरण में हैं कि उसे आसानी से दूर किया जा सकता है।

टोनी ब्लेयर की ऐतिहासिक जीत

विचार कार्यालय, दिल्ली

कहा जाता है कि ब्रिटेन की संसद सारे विश्व की संसदों की जननी है। भारत से तो उसका विशेष सम्बन्ध है क्योंकि भारतीय संविधान लगभग 80 प्रतिशत ब्रिटिश संविधान से प्रभावित है। ब्रिटेन की तरह भारत में भी दो सदनोंवाली संसद है। किन्तु भारत के संसदीय लोकतंत्र में चुनाव के दौरान जो हिंसा, आगजनी और बुथ लूटने जैसी घटनाएं नहीं के बराबर हैं। मतदान का दिन कुछ लोगों के लिए मौत का पैगाम नहीं लाता। वहाँ की राजनीतिक पार्टियों के बीच भी भारत जैसी खीचातानी नहीं होती।

ब्रिटेन में तो सिलसिला ऐसा चल रहा था कि कभी वहाँ कन्जरवेटिव पार्टी सत्ता में आती है तो कभी लेबर पार्टी। किन्तु इस वर्ष का चुनाव इस मायने में ऐतिहासिक कहा जाएगा कि लेबर पार्टी अपनी सौ साल के इतिहास में पहली बार सत्ता में लगातार दूसरी बार आई है। जीत का सारा श्रेय प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर को जाता है। प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर दूसरे युवतम प्रधानमंत्री होने का खिताब पा चुके हैं। टोनी ब्लेयर ने एक और रेकार्ड बनाया है और वह यह कि प्रधानमंत्री निवास में रहते हुए संतान जन्म के लिए भी वे दूसरे प्रधानमंत्री हैं। डेढ़ सौ वर्ष पहले लार्ड जॉन रसेल को प्रधानमंत्री रहते हुए पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी।

इस वक्त विश्व के अनेक राष्ट्रों में बागडोर मध्यम उम्र के नेताओं के हाथ में है। रूस के **पुतिन**, अमेरिका के **बुश**, पाकिस्तान के **मुर्शरफ**, श्रीलंका की **कुमार तुंगा** जैसे कई नाम गिनाए जा सकते हैं। सम्भवत: ब्रिटेन के मतदाता भी इसी दृष्टिकोण के हिमायती हैं। प्रचंड विजय के बाद ब्लेयर ने कहा-**जितनी बड़ी विजय, उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी।** ब्रिटेन भीषण बेरोजगारी, गरीबी और सामाजिक विखंडन की समस्याओं से जूझ रहा है। विश्वास है अगले चार साल में टोनी ब्लेयर इन चुनौतियों का सामना अपनी सूझबूझ से कर पाएंगे।

नई राह दिखाई अपराजिता ने

विचार कार्यालय, भुवनेश्वर

यूँ तो भारतीय राजीनति के नेताओं के साथ आज अधिकतर नौकरशाह भी सुर में सुर मिलाते दिख रहे हैं पर आज भी उनमें से कुछ ऐसे जरूर हैं, जिन्हें अपने कर्तव्यों की परवाह है और अपने दायित्यों के निर्वहन में गर्व महसूस होता है।

उड़ीसा के कोरापुट जिले की जिलाधीश **अपराजिता सांगी** नाम की 30 वर्षीय महिला पूरे देश के नौकरशाहों के लिए मिसाल बन गई है, जिसे अवैध शराब माफिया के नेताओं और अधिकारियों से संबंध , विरोध करनेवालों पर जानलेवा हमले और रिश्वत के रूप में बेशुमार दौलत का लालच, कोई भी उसे अपने उद्येश्य से डिगा नहीं पाया और आखिरकार **अपराजिता** ने वो कारनामा कर दिखाया जो अब तक असम्भव सा लगता था।

संक्षेप में कहानी यों है कि अपराजिता ने अपने प्रयासों के बलबूते पर कोरापुट जिले के करीब 1916 गांवों को शराब से मुक्ति दिलाई है। पिछले वर्ष उक्त जिले के जिलाधीश पद का भार सम्भालने के पश्चात् उसने यह निश्चय किया कि उस जिले के प्रत्येक गांव को शराब से, छुटकारा दिलाकर ही रहेंगी। इसलिए सर्वप्रथम उसने हर गांव में 32 महिला सदस्यों की एक समिति **चेतना मंडल** गठित की। इसके माध्यम से लोगों को शराब की बुराइयों के प्रति आगाह किया। उड़ीसा में यद्यपि सरकार द्वारा देशी और विदेशी शराब बेचने की छूट दी गई है, लेकि न गांवों में शराब की बिक्री तभी की जा सकती है जब ग्राम पंचायत इसक लिए स्वीकृति दे दे।

जिलाधीश अपराजिता सारंगी के प्रयासों से एक भी ग्राम पंचायत ने शराब की दुकान खोले जाने के लिए स्वीकृति नहीं दी और इस तरह जिले के आधे से अधिक गांवों को शराब से छुटकारा दिला दिया। अपराजिता अपनी इस उपलब्धि का श्रेय गांवों की उन गरीब आदिवासी महिलाओं को देती हैं जिनके जीवन की खुशियां शराब की भेंट चढ़ गई थीं। ज्ञातव्य है कि उड़ीसा राज्य में सरकार राजस्व का बड़ा स्रोत होने के कारण शराब की बिक्री से होने वाला फायदा सरकारी राजस्व से दस गुना ज्यादा है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आज नगरों, कस्बों तथा गांवों में खासकर गरीब तबके के लोगों में शराब का दौर इस कदर चलता है कि उनकी आय का अधिक भाग शराब पर ही खर्च हो जाता है और उनके परिवार की बदहाली जस-की-तस बनी रह जाती है। क्या अपराजिता से सीख लेकर देश के और नौकरशाह उनकी राह नहीं चल सकते?

प्रेस पर पैसे का जादू सिर चढ़कर बोल रहा है..........

कोलकाता में प्रेस की आजादी पर बहस

विचार संवाददाता, कोलकाता

प्रेस पर पैसे का जादू सिर चढ़कर बोल रहा है। राज्यसभा व विधान सभाओं में पार्टियों से टिकट पाकर जगह पाने व कारपोरेट संस्थानों से वाणिज्यिक विज्ञापनों का प्रकाशन कर पैसे बनाने के चक्कर में प्रेस के लोग राजनीतिक पार्टियों के हाथों में खेलने में लग जाते हैं। ये विचार gscll¼ i=dkj **शेखर गुप्ता** के जिसे उन्होंने पिछले दिनों **बंगाल चैम्बर्स ऑफ कामर्स एन्ड इंडस्ट्री** तथा **ताज बंगाल** की ओर से **हमारा विश्वास है कि भारत में प्रेस अपनी इच्छा के अनुरूप आजाद है** विषय पर आयोजित बहस में व्यक्त किए। इस अवसर पर अपने विचार रखते हए **दी स्टेट्समैन** के प्रधान सम्पादक **सी. आर. ईरानी** ने कहा कि बिना त्याग के प्रेस की आजादी बेमानी है। तृणमूल कांग्रेस के नेता **प्रो० सौगत राय** ने बहस में हिस्सा लेते हुए यहां तक कह डाला कि प्रेस के मालिक सम्पादकों को इस तरह बदलते हैं, जैसे एक आदमी अपनी गंदी और फटी कमीज। उन्होंने प्रेस की आजादी के लिए प्रतिस्पर्धा और आदर्श के प्रति जागरूकता की जरूरत पर बल दिया। बहस में टी०वी० पत्रकार **नलिनी सिंह, राजदीप सरदेसाई, वरूण दास** तथा **सहेल सेठ** ने भी हिस्सा लिया।

पृथक तेलंगाना आन्दोलन से नायडू परेशान

विचार संवाददाता, कोलकाता

आन्ध्रप्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र के निवासियों की माली हालत आज भी जस की तस है जिसके लिए राज्य सरकार द्वारा की गई उपेक्षा को दोषी ठहराया जाएगा। तेलंगाना राज्य के गठन की माँग का श्रेय मुख्य रूप से **के॰चन्द्रशेखर राव** को दिया जाएगा जिन्होंने तेलंगाना की जनता के साथ किए जा रहे विश्वासघात को लेकर आन्दोलन चलाने का प्रयास किया था।

पुन: आन्ध्रप्रदेश के छह वामपंथी दलों ने विगत 10 जून को राजधानी तथा जिलों में सम्मेलन कर जनता को यह बताने की कोशिश की कि पिछले पाँच दशक से कांग्रेस और तेलुगुदेशम की सरकारों द्वारा तेलंगाना के साथ कितना अन्याय किया है। इस सन्दर्भ में प्रदेश भाकपा सचिव **सुखराम सुधाकर रेड्डी** तथा अन्य वामपंथी दलों के नेताओं के बयान विरोधाभाषों से भरे हैं। उनका कहना है कि यदि पृथक तेलंगाने का गठन हुआ तो भी स्वार्थी और पूंजीवादी तत्व ही सत्ता पर काबिज होंगे। अचानक वामपंथी दलों द्वारा किए जा सम्मेलनों से ऐसा लगता है कि ये सारे उपक्रम वामपंथी दलों की पहचान के संकट के चलते किए जा रहे हैं। जनता लगभग भूल चुकी है कि वामपंथी दलों का कोई अस्तित्व है और उनकी कोई गतिविधि भी है क्योंकि उनके सारे कार्यक्रम राजनीतिक जोड़-तोड़ के इर्द-गिर्द केन्द्रित हैं। वे अपने स्वार्थ के हित में किसी भी दल के साथ खड़े हो सकते हैं या विरोध कर सकते हैं। नहीं तो इसे हास्यास्पद नहीं तो और क्या कहा जाग कि जिस तेलंगाना संघर्ष में कभी वामपंथी दल पूरी तरह से शामिल थे और निजाम से जमकर लोहा लिया था उसी तेलंगाना क्षेत्र में अब वे पहचान के संकट से परेशान हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके सारे आधारभूत मुद्दे अदृश्य हो गए हैं। पिछले पाँच दशक से तेलंगाना के साथ हो रहे अन्याय में आखिर वे आज तक क्यों चुप्पी साधे रहे? सच कहा जाए तो वामपंथी आन्दोलन और पार्टियां आज देश की राजनीति के हाशिए पर चली गई हैं। इसका एकमात्र कारण यह है कि वामपंथी पार्टियां बिना यथार्थ स्थितियों की ओर ध्यान दिए सिर्फ कुछ सिद्धान्त-कथनों का जाप करती रही हैं। इसलिए फिलहाल पृथक तेलंगाना आन्दोलन को पुनर्जीवित करने की शुरूआत हास्यास्पद दिखती है किन्तु आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री एन॰ चन्द्रबाबू नायडू इस तेलंगाना आन्दोलन की शुरूआत से परेशान हैं, क्योंकि एक ओर जहाँ पृथक तेलंगाना के अग्रणी नेता के॰ चन्द्रशेखर राव जो तेलंगाना क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं ने नायडू को अलविदा कह **तेलंगाना पृथक राज्य आन्दोलन मंच** का गठन कर लिया है वहीं लोकसभा में तेलुगुदेशम के 10 सांसद, जो तेलंगाना का प्रतिनिधितत्व करते हैं ने पृथक तेलंगाना की वकालत कर रहे हैं। अब नायडू की मुश्किल यह है कि वे अपनी पार्टी में बुलबुला रहे सांसद को सम्भालें या उन नेताओं पर अंकुश लगाएं जो तेलंगाना आन्दोलन में जुटे हुए हैं।

दरअसल जब से छतीसगढ़, उत्तरांचल और झारखण्ड राज्यों का गठन हुआ है, पृथक राज्य की कामना करनेवालों को नयी उर्वरक जमीन मिल गयी है। हलाँकि चन्द्रबाबू नायडू ने तेलंगाना के सीमावर्ती विशाखापटनम में तेलुगुदेशम का महासम्मेलन कर तेलंगाना क्षेत्र के विकास के लिए उन्होंने कई विकास योजनाओं के कार्यक्रम भी घोषित कर दिए हैं तथा **जन्मभूमि कार्यक्रम** भी इसी कड़ी में चलाए जा रहे हैं, फिर भी वामपंथियों के साथ-साथ अपनी पार्टी के सांसदों ने भी नायडू की नींद उड़ा दी है। नायडू द्वारा तेलंगाना के तमाम विकास कार्यक्रमों के बावजूद भी तेलंगाना की मांग फिर से जोर पकड़ती जा रही है। यह मांग अचानक भड़कने का एक कारण यह भी है कि जुलाई में स्थानीय पंचायत चुनाव होने हैं। दूसरी ओर दिल्ली तथा उ॰प्र॰ के नेताओं का बयान जब हरितप्रदेश के समर्थन में आया तो तेलंगाना के नेताओं का मनोबल बढ़ना स्वाभाविक था। हलाँकि बाद में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेना कृष्णमूर्ति तथा प्रदेश प्रवक्ता पी॰ प्रभाकर को बार-बार यह कहना पड़ा कि वे पृथक राज्य के रूप में तेलंगाना का समर्थन नहीं कर रहे हैं।

पटम चित्रकथाएं उकेरती हैं जीवन के यथार्थ को

विचार संवाददाता, हैदराबाद

आन्ध्रप्रदेश में पटम एक ऐसी विशिष्ट लोककला के रूप में जानी जाती है जिसकी नक्काशी चित्रकथाएं उकेरती हैं जीवन के यथार्थ को। कपड़े के कैनवास पर विभिन्न रंगों से चित्र बनाकर उसके माध्यम से कथा कहने की परम्परा आन्ध्र-प्रदेश के अतिरिक्त प॰बंगाल एवं उड़ीसा में भी है। नक्काशी चित्रकारों द्वारा कपड़े के कैनवास पर बनाए जाने वाले प्रत्येक चित्र पटम पर उस राज्य के कमजोर वर्ग के जीवन की वास्तविकताएं ही दिखायी देती हैं। आन्ध्र-प्रदेश में इस पटम चित्रकला के अंतिम प्रतिनिधि करीमनगर जिले के वेमुल वाड़ा मंडल स्थित अनुपूरम ग्रामवासी 80 वर्षीय **धनिमाला कोटय्या** को माना जाता है हलाँकि इन की तरह वहाँ अन्य वृहद कलाकार भी हैं। इस वक्त लोककला को जीवित रखने के लिए वरंगल जिले के चेर्याल के धनालाकोटा वेंकट रामय्या और उनके पुत्र चन्द्रय्या सहित अन्य लोग प्रयासरत हैं। चन्द्रय्या पटम सहित मूर्तियां भी बनाते हैं। पटम बनाने की प्रक्रिया में सर्वप्रथम कपड़े के कैनवास पर चित्र उकेरने के पूर्व पानी में भिंगा कर मांड़ में डुबाया जाता है। उसके बाद इमली के बीज का चूर्ण बनाकर इन्हें पकाया जाता है। इससे निकलनेवाला गोंद कपड़े पर लगाकर इसे सुखाया जाता है। इस कला के प्रदर्शन हेतु उपयोग में लाया जाने वाला प्रत्येक पटम 3 से 30 या 60 फीट लम्बाई व चौड़ाई का होता है। इसे तैयार करने के लिए आवश्यक कैनवास ब्रश और रंग में कलाकार स्वयं बनाते हैं। प्रकृति से प्राप्त होने वाले सहज रंगों तथा जानवरों के बालों से बना ब्रश का ही ये कलाकार आज भी उपयोग करते हैं। दलित जाति के इने चित्र कलाकारों को नक्काशी चित्र कलाकारों के रूप में पहचान है जिनका जीवन आधार यह लोककला ही है। तेलंगाना क्षेत्रों के जिलों में ग्राम देवताओं की मूर्तियां समेत भेल्लम्मा और पेद्मा जैसी भव्य मुर्तियों के अतिरिक्त अन्य नयनाभिराम मुतियां भी ये कलाकार बनाते हैं। पटम कथा में ये कलाकार प्रत्येक पात्र के अनुरूप चित्र बनाते हैं। बाल कृष्ण को स्नान कराना, दूध पिलाना आदि भंगिमाओं में उकेरे गए ये चित्र काफी आकर्षक और सुन्दर होते हैं। तीन चार माह में तैयार इन मूर्तियों के लिए इन्हें मात्र चार हजार रुपये ही मिल पाते हैं। यही बिडम्बना है इन कलाकारों के साथ।

गोविन्द अक्षय, हैदराबाद से ।

क्षमा कीजिये-मैं मांगकर नहीं पढ़ता।

❑ प्रकाश कुमार "विद्यालंकार"

आजकल हिन्दुस्तान में मांगकर खाने की तरह मांगकर पढ़ना-बुरा नहीं समझा जाता। यही कारण है कि दिन-व-दिन माँग कर पढ़ने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। चाहे आप मकान में हों अथवा सफर में, आपने समाचार-पत्र अखबार खरीदा कि जल्द सुनने को मिलेगा। "क्या मैं इसे ले सकता हूँ? हो सकता है कि आप नियमित अखबार पढ़ने के आदी हों, हो सकता है कि आपने कोई जरुरी समाचार खबर-पढ़ने के लिए अखबार खरीदा हो, लेकिन खेद है-माँगकर-पढ़ने वाले बन्धु-भाई को इसकी कोई चिन्ता- परवाह नहीं। वे तो तब तक चैन-शान्ति नहीं लेंगे, जब तक आपके अखबार उनके हाथ में न पहुँच जाय और उस पर भी मनोरंजन-आश्चर्य यह है कि वे उसे पढ़कर बजाय आपको लौटाने के, उसे दूसरी तरफ इस तरह बढ़ा देंगे-मानों अखबार आपका नहीं, उन्हीं का है और वे उसे बड़ी-गौरव-शान से दान-दया करने जा रहे हैं। यदि आप बस अथवा रेल-ट्रेन के सफर में हैं तो देखते-देखते आपका अखबार-पत्र-पत्रिका सारे रेल में चक्कर लगाने लगेगा। उसके पृष्ठ, जगह-जगह, अलग-अलग भाग व हिस्सों में बिखर जायेंगे। यदि सौभाग्य से वह आपके पास लौटा भी तो जर्जर- अवस्था में। हमने कई लोगों को दूसरे के माँगे हुए अखबार पर खाना-खाने और कभी-कभी उससे अपनी सुरक्षित सीठ-बर्थ का कचरा साफ करते हुए देखा है।

अगर आप कुछ जरा साहसी हुए और आपने अपने खरीदे हुए अखबार को स्वयं ही पढ़ना शुरु किया तो बे बिना इस बात की कोई चिन्ता-परवाह किए कि आपके पहले पृष्ठ का शेषांश तीसरे पर आता है, वे आपके हाथ से तीसरा पृष्ठ छीनकर उसे पढ़ना शुरु कर देंगे। अब या तो आप अपनी ही पत्रिका अखबार को उस भाई से भीख माँगे अथवा उसे पढ़ने से वंचित रह जायें। यदि अखबार केवल दो ही पृष्ठ का हुआ तो वे स्वयं आपके सामने बैठकर अखबार को दो हाथों से पकड़कर आपके हाथों में ही, पीछे की तरफ से उसे इस तरह से पढ़ना शुरु कर देंगे कि सामने वाले के लिए यह समझना मुश्किल हो जाय कि अखबार अथवा समाचार-पत्र, अखबार सीट-बर्थ पर रखकर पानी-पीने या प्लेट-फार्म पर यों ही, घूमने चले जायें तो यह हो नहीं सकता कि आपके वापिस-लौटने पर वह आपको उसी जगह-स्थान पर मिल जाय। भाई लोगों ने तो उसे कुछ इस तरह की सार्वजनिक वस्तु बना डाला है कि उसमें अखबार-खरीददार से पूछने की जरूरत भी अनुभव-महसूस नहीं की जाती।

सूना है-विदेशों में दैनिक अखबार आम-मुख्य सड़क-बाजारों पर जमाकर रख दिये जाते हैं-वहाँ कोई व्यक्ति, एजेन्ट नहीं बैठता। अखबार शौकिन वाले आते हैं, पेटी में रुपया-पैसा डालते हैं और यूँ सच मानिए अखबार की दुकान बिना मालिक के भी चलती रहती है। यदि कोई हमारे देश में इस तरह का नया प्रयोग करे तो उसके दैनिक अखबार तो सब एक-दो-मिनट में बँट जायेंगे, लेकिन खेद है-एक भी पैसा पेटी में जमा नहीं होगा। बहुत होगा तो बेचारे बुक स्टाल वाले के यहाँ ही खड़े खड़े समूचा-पूरा अखबार पढ़ जाते हैं। वे यह नहीं जानते कि सभ्य सज्जनता तरीके से बे उसका कैसा भयंकर अन्याय, शोषण कर रहे हैं। आज जो हमारी पुस्तकों के एक से अधिक सस्करण नहीं निकल पाते और अनेकों विचार प्रद, क्रान्तिकारी पत्र-पत्रिकाओं को चलाना "आकाश के तारे तोड़ना" के समान मुश्किल होता है, उसकी प्रमुख जिम्मेदारी हमारी मुफ्त खोरी की, समाज की बुरी आदत ही है। यदि हम इस तरह आदत को बदलना चाहते हैं तो अब हमें समाज और प्रत्येक व्यक्ति-नागरिक-मतदाता में एक जैसे स्वच्छ वातावरण का निर्माण करना चाहिए, जिससे ऐसे कुछ मुफ्त पढ़ने वाले साहस पूर्वक अथवा आत्माभिमान के साथ यह कह सकें कि---

क्षमा किजिएगा ! मैं भीख माँगकर नहीं पढ़ता !!

यदि अब हम मुफ्त खोरी की जगह श्रम मेहनत को प्रतिष्ठा देना चाहते हैं तो अपने जीवन में यत्र, तत्र तथा सर्वत्र श्रम निष्ठा का चहुँमुखी विकास उन्नति करना होगा। भगवान-ईश्वर-गौड तथा परम पिता परमेश्वर के लिए ध्यान ख्याल रखिए। अगर अखबार पुस्तक वगैरह खरीद कर अपनी पसन्द की पुस्तक और दैनिक अखबार पढ़ते हैं तो निश्चय ही हम खरीद कर अपनी पसन्द का अखबार या पुस्तक खरीदकर पढ़ने के आदी बनेंगे। सच मानिए उससे एक प्रकार अभिमान-गौरव कथा रुचि परिष्कृत होती है। तथापि हमारा अपना मार्ग-रास्ता प्रशस्त बनता है, उससे स्वस्थ विचार प्रद किताबें-पुस्तक के लेखक व प्रकाशकों और पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों को प्रोत्साहन मिलता है व ईमानदार निष्पक्ष पत्रकारिता को काफी बल और ताकत मिलता है, इससे श्रम मेहनत वास्तव में निष्पक्ष जीवन जिन्दगी का विकास होता है यदि आप बन्धु-भाई राष्ट्र प्रेमी के अलावा "सोने की चिड़िया" के समर्थक इससे पूर्ण रूप से सहमत हैं तो आज ही अब नहीं तो और कभी नहीं। अभी से प्रत्येक देश भक्त प्रेमी भारतीय और विशेषकर एक अरब जन यह निश्चय या अपने मन से शपथ लें कि सब मिलकर जोरों से गगन भेदी नारे लगायें-"जो बोले सो अभय मांग कर या भीख माँगकर दैनिक अखबार अथवा पुस्तकें वगैर नहीं पढ़ेंगे. ....।"

माँग कर खाना, माँगकर कपड़े पहनना, माँगकर पढ़ना बुरा है! क्षमा कीजिएगा, मैं मुफ्त में किताब, अखबार नहीं पढ़ता!

सम्पर्क: परामर्श दाता पत्रकार (संवाददाता) संघ, जहीराबाद, आ०प्र०

मात्रात्मक प्रतिबन्ध लगाने से कतई नहीं हिचकेगी सरकार
तिलहन और दलहन का समर्थन मूल्य बढ़ेगा

प्रस्तुतिः अनुज कुमार, दिल्ली से

विगत दिनों कानपुर में दलहन अनुसन्धान का प्रयोग करते हुए भारत सरकार के **कृषि मंत्री नीतीश कुमार** ने कहा कि जरूरत पड़ने पर सरकार मात्रात्मक प्रतिबन्ध लगाने में जरा भी नहीं हिचकेगी। उल्लेख्य है कि आयात या निर्यात पर रोक लगाने के लिए राष्ट्र जो सीमाएं तय करते हैं उसे मात्रात्मक प्रतिबन्ध कहते हैं। इस देश के लोगों ने धीरे-धीरे इसे **क्यू०आर०** यानी **कोटाराज** भी कहना प्रारम्भ किया है। हम सब इस बात से अवगत हैं कि पहली अप्रैल 2001 से 10202 वस्तुओं में से अन्तिम 715 वस्तुओं, जिनमें प्रमुखतः कृषि उत्पाद हैं से मात्रात्मक प्रतिबन्ध भारत सरकार ने हटा लिया है। यदि भारत के बाजारों में विदेशी वस्तुओं की भरमार हो जाने की वजह से भारत के उत्पादों की खपत नहीं हो पाए तो भारत सरकार उन विदेशी वस्तुओं के आयात पर मात्रात्मक प्रतिबन्ध लगाकर यहाँ के किसानों व व्यवसाईयों की रक्षा कर सकती है। भारत सरकार के इसी अधिकार के सन्दर्भ में कृषि मंत्री ने अपने उद्गार में मात्रात्मक प्रतिबन्ध लगाने की बात कही। उन्होंने पुनः कहा कि सरकार खरीफ की आगामी फसल से दलहनी और तिलहनी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाएगी। इसके लिए मूल्य लागत आयोग कार्यरत है।

कृषि विकास के लिए, इन्द्रधनुषी क्रान्ति के लिए किसानों का आह्वान करते हुए श्री कुमार ने कहा कि किसानों का हित सर्वोपरि है। खाद्य सुरक्षा का लक्ष्य प्राप्त किए बिना कृषि क्षेत्र में हरित-क्रांति अधूरी है। इसके लिए दलहन और तिलहन में देश को आत्मनिर्भर बनाना होगा। 50 वर्षों के रेकार्ड देखने से पता चलता है कि दलहन का उत्पादन 5 करोड़ 10 लाख टन के मुकाबले बढ़कर 20 करोड़ टन तक हो गया है, फिर भी यह पर्याप्त नहीं है। मूल्य और लागत की वजह से किसान गेहूँ और चावल की खेती से मोह नहीं छुड़ा पा रहा है जबकि इसके भण्डारण की जटिल समस्या है। दलहन में आत्मनिर्भरता न होने के कारण भारी मात्रा में दलहन आयात करना पड़ता है। जहाँ तक तिलहन की स्थिति का सवाल है यहाँ 15 लाख टन खाने के तेल की कमी रहती है जिसके चलते इस बार यहाँ के व्यापारियों ने 40 लाख टन का आयात कर लिया है। फलतः यहाँ के तिलहन उत्पादन को वाजिब कीमत नहीं मिल पा रही है। कृषि मंत्री ने किसानों से अपील की कि वे अपने खेत का एक हिस्सा दलहन और तिलहन फसलों के लिए सुरक्षित कर लें। **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद** के महानिदेशक **डॉ० आर०एस० परोदा** की अध्यक्षता में गठित समिति की सिफरिशों के आधार पर चना, अरहर, मूंग, मसूर, मटर और उड़द का न्यूनतम मूल्य शीघ्र ही घोषित होने वाला है। कृषिमंत्री ने पुनः कहा कि कृषि क्षेत्र में चार प्रतिशत वार्षिक विकास दर हासिल करने पर ही विश्व व्यापार संगठन में जाने का लाभ मिलेगा।

10लाख कृषि मजदूरों के लिए बीमा व पेन्सन योजना

विचार कार्यालय, नई दिल्ली

भारत सरकार ने 1 जूलाई, 2001 से 10 लाख कृषि मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए **कृषि श्रमिक सामाजिक सुरक्षा योजना** शुरू करने की घोषणा की है। इसके प्रथम चरण में अगले तीन साल के अन्दर देश के मौजूदा 12 करोड़ मजदूरों में से 10 लाख कृषि मजदूरों को इस नई योजना का लाभ प्रदान किया जाएगा। 18 मई को 37 वें भारतीय श्रम सम्मेलन में प्रधानमंत्री की घोषणानुसार 150 करोड़ की जगह मात्र 25 करोड़ रुपये ही इस साल उपलब्ध किये जा सकेंगे जिससे 3 लाख 30 हजार कृषि मजदूरों को इस साल लाभ मिल पाएगा।

इस योजना के तहत कृषि मजदूरों को जीवन बीमा, पेन्सन के व्यापक लाभ और विकलांगता लाभ के साथ ही एकमुश्त उत्तरजीविता लाभ प्रदान करने का प्रावधान है। प्रारम्भ में इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक राज्य के कम से कम एक प्रखण्ड में इस योजना को शुरू किया जाएगा। जिले में किस ब्लॉक को यह सुविधा मिले, इसका निर्णय जिलाधिकारी करेंगे। योजना है कि हर जिले में 20,000 कृषि मजदूरों तक यह योजना पहुंचाई जाए। 18 से 50 वर्ष की आय के कृषि मजदूर इसमें भाग लेने के पात्र होंगे। 60 साल से पहले स्वाभाविक मृत्युकी दशा में एकमुश्त 20 हजार रुपये का भुगतान, दुर्घटना के दौरान हुई मृत्यु की स्थिति में एकमुश्त 50 हजार रुपये का भुगतान तथा जमा अंशधन और उस पर ब्याज की वापसी अथवा परिवार के लिए पेन्सन की व्यवस्था है। दुर्घटना के कारण हुई पूर्ण विकलांगता की स्थिति में एकमुश्त 50 हजार रुपये और आंशिक विकलांगता की स्थिति में 25 हजार रुपये का भुगतान करने का प्रावधान इस योजना में है। 60 वर्ष जीवित रहने पर योजना अवधि में कृषि मजदूर की भागीदारी के अनुरूप मासिक पेन्सन 100 रुपये से लेकर 1900 रुपये तक होगी और मृत्यु होने पर परिवार को 13 हजार रुपये से 2 लाख 50 हजार रुपये तक एकमुश्त राशि का भुगतान होगा। केन्द्रीय वित्तमंत्री यशवंत सिन्हा तथा श्रममंत्री सत्यनारायण जटिया ने एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में बताया कि सरकार प्रत्येक बीमाधारी कृषि मजदूर को दो रुपये प्रतिदिन देगी और कृषि मजदूर से हर रोज एक रुपया अंशदान के रूप में लेगी।

डाकुओं की रूह तक कांप जाती है प्रियंका के नाम से

❑ प्रस्तुतिः शशि भूषण,

पतली, दुबली, गेहुएं रंग की। चेहरे से विश्वविद्यालय में शोध छात्र होने का भ्रम देने वाली 24 साल के आसपास की उम्र की प्रियंका मिश्रा। चंबल घाटी के इतिहास में पहली बार वे ऐसी पुलिस अधिकारी हैं जिन्हें मारे के लिए एक डाकू ने छोटा मोटा नहीं 5 लाख रुपये का इनाम घोषित किया है।

वे डाकू निर्भय गुर्जर की हिटलिस्ट में हैं। मध्यप्रदेश पुलिस सेवा की इस नयी अधिकारी का पूरा नाम डॉक्टर प्रियंका मिश्रा। वे पीएचडी कर चुकी हैं और उनका वश चलता तो वे अध्यापन में ही जातीं मगर अब नहीं। चम्बल घाटी के बीहड़ प्रियंका के नाम से जूंजते हैं। निर्भय गुर्जर जैसा कुख्यात और दुर्दांत हत्यारा उनकी छाया से भी दूर रहना चाहता है।

भिंड के पुलिस अधीक्षक जी.आर. मीणा (उनकी लोकप्रियता का भी अपना इतिहास है। झाबुआ जिले से जब उनका तबादला किया गया था तो तीन दिन तक पूरा शहर बंद रहा था) ने प्रियंका को निर्भय गुर्जर से निपटने की खुली छूट दे रखी है। इसके पहले जांबाज पुलिस उप अधीक्षक मनोज सिंह कई डाकुओं की लाशों को चारपाई पर बांध कर शहर के अस्पताल के पोस्टमार्टम रूम में ला चुके थे। मगर प्रियंका मिश्रा के रूप में डाकुओं को बराबर को टक्कर देने वाला कोई मिला है।

भिंड शहर में एक 'दबिश' से लौटकर दूसरे हमले पर जाने से पहले प्रियंका से एक बातचीत-

निर्भय गुर्जर ने सिर्फ आपकी जान पर इनाम क्यों रखा?

क्योंकि उसकी मेरे सामने आने की हिम्मत नहीं है। वह डर के मारे दाढ़ी बढ़ा कर रहता है, गैंग से अलग सोता है। पुलिस ने उसका पूरा कारोबार बंद कर दिया है।

फिर भी दस अपहरण उसने एक ही दिन में किये। वो भी भिंड जिले से?

वे अपहरण सिर्फ निर्भय गुर्जर ने नहीं किये थे। कई गिरोह शामिल थे। उन्होंने आपस में मिल कर एक ही दिन में वारदात का फैसला जरूर किया था। जो लोग अपहत किये गये थे, उनमें से कई किसी छूट गये हैं।

फिरौती देकर?

नहीं

कुछ मार भी दिए गये?

(चुप्पी)

निर्भय गूजर को कभी सामने देखा है?

(तेज आवाज) सामने पड़ता तो अब तक उसकी लाश की फोटो देख चुके होते।

उसका आरोप है कि आप उसके जानकारों व रिश्तेदारों को तंग कर रही हैं?

जो लोग एक डाकू को मदद करेंगे उन्हें हम पूछताछ के लिए तो बंद करेंगे ही। कोई नहीं कह सकता कि हमारे लोगों ने किसी को नाहक सताया हो।

निर्भय गुर्जर ने आपके सिर पर जो इनाम घोषित किया है उससे आप खतरा महसूस नहीं करतीं?

मेरे पास वर्दी है। मेरे पास भी उसकी तरह बंदूक है और देश के कानून की ताकत है। खतरा महसूस करती तो मैदान छोड़ कर भाग नहीं जाती।

फिर भी सुरक्षा का कोई विशेष बन्दोबस्त?

जितना एक आम पुलिस अधिकारी के लिए होता है, उससे ज्यादा नहीं और फिर बीहड़ में जब गोलियां चल रही हो तो कौन किसे बचाता है।

चंबल घाटी में डाकुओं को राजनीतिक संरक्षण प्राप्त है?

कमाल है? निर्भय गुर्जर नाम के बदमाश ने तो यहां के सांसद डॉक्टर राम लखन सिंह को मारने के लिए दस लाख रुपए का इनाम घोषित किया है। मिली भगत में जाने बचायी जाती है, ली नहीं जाती।

परिवार वाले आपको नहीं रोकते?

वे जानते हैं कि मैं क्या कर रही हूं। मेरा कर्तव्य क्या है? मेरे ख्याल से उन्हें मेरे किये पर गर्व भी होगा। फिर भी अपनों को अपनी की चिन्ता तो होती ही है। मेरा परिवार यहां से दूर खंडवा में रहता है।

और आपका कोई 'अपना' ?

अब आप फिल्म स्टारों वाले सवाल मुझसे मत कीजिए। मेरा घर है, गृहस्थी है और मैं बहुत खुश हूं।

नई कविता के सशक्त हस्ताक्षर डॉ० जगदीश गुप्त का महाप्रयाण

कार्यालय, दिल्ली

भारत भारती पुरस्कार से सम्मानित नई कविता आन्दोलन के अग्रणी साहित्यकार एवं ललित कलाओं के पारखी **डॉ० जगदीश गुप्त** का विगत 27 मई, 2001 को हृदय गति रूक जाने के कारण इलाहाबाद में निधन हो गया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष 76 वर्षीय चित्रकार, वास्तुविद् और साहित्यकार डॉ० गुप्त ने 50 से अधिक पुस्तकें लिखी। उनकी प्रमुख प्रकाशित कृतियों में **गुजराती और ब्रजभाषा: कृष्णकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन, नई कविता, नाव के पांव, भारतीय कला के पद्‌चिन्ह, रीतिकाव्य संग्रह, परिमल, शम्बूक, छंद शती, नवधा, बोधिवृक्ष, माँ के लिए, सांझ, हिन्दी की प्रकृति और विकास हैं।**

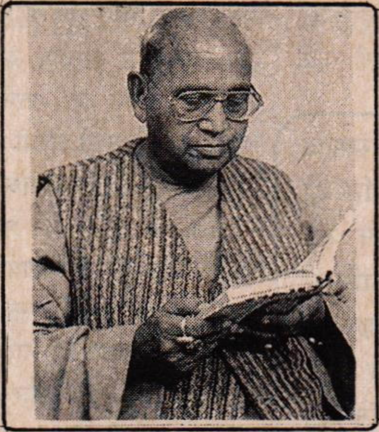

गुप्त जी ने कविता और चित्रकला में साहचर्य पाया। इसीलिए उन्होंने कलम और तूलिका दोनों माध्यमों से एक साथ अभूतपूर्व सृजनधर्मिता का प्रमाण दिया। कला, साहित्य, पुरातत्व और शिक्षा के क्षेत्र में गुप्त जी की अग्रणी भूमिका रही। चित्रकला को सब कलाओं की आँख माननेवाले गुप्त जी का मन केवल चित्रांकन में ही नहीं बल्कि उन्होंने कला समीक्षा के नए प्रतिमानों को भी खोजा। वे एकान्त क्षणों में गंगा के तट पर हों, यात्रा में हों या अस्पताल के बिस्तर पर रेखांकन करना उनका स्वभाव था। उन्हें हर मानव आकृति अपने में विशिष्ट और अद्धितीय होने के साथ-साथ कुछ ऐसा कहती हुई लगती, जिसे दूसरा कोई नहीं कह सकता। इसी अनुभव को वे कागज पर काली रेखाओं में संस्मरण बनाकर उतारते जाते।

इलाहाबाद में गुप्त जी वहाँ की सुप्रसिद्ध साहित्यिक संस्था **परिमल** के संस्थापकों में से एक थे। उनके द्वारा सम्पादित **नई कविता** पत्रिका ने मानवीय भूमिका सरोकारों से जुड़ते हुए नयी कविता की प्रतिस्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। **त्रयी** के माध्यम से उन्होंने नवोदित कवियों की सशक्त पीढ़ी तैयार करने का प्रयास किया। हिन्दी साहित्य में अपनी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए बड़े-बड़े पुरस्कारों और अलंकरणों से वे सम्मानित हुए। हिन्दी साहित्य जगत के इस सशक्त हस्ताक्षर को **विचार दृष्टि** परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

स्वतन्त्रता सेनानी मो० युनूस का निधन

जाने माने स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, राजनयिक, भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण के पूर्व अध्यक्ष और नेहरू परिवार के नजदीकी मित्र **मोहम्मद युनूस खान** का निधन विगत 17 जून को नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में हो गया। 85 वर्षीय मो० युनूस सीमान्त गाँधी के नाम से मशहूर खान अब्दुल गफ्फार खान के भतीजे थे। असहयोग आन्दोलन में भाग लेने वाले युनूस लुसाका और कोलम्बो शिखर सम्मेलनों में भी भाग लिया। वह इंडोनेशिया, इराक, तुर्की और अल्जीरिया में भारत के राजदूत भी रहे। 80 के दशक में वे राज्यसभा के सदस्य मनोनीत किए गए। स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के दौरान नेहरू जी के सम्पर्क में आने के बाद तीस सालों तक उनकी दोस्ती चली। वह सीमान्त गाँधी की खुदाई खिदमतगार पार्टी के सदस्य और बाद में सचिव भी बने। वे अपने पीछे एक मात्र पत्नी तथा अनेकों शुभेच्छुओं को छोड़ गए। **विचार दृष्टि** परिवार की ओर से स्वतन्त्रता आन्दोलन के इस सिपाही को श्रद्धांजलि।

कबीर की 600 वीं जयंती पर विशेष

कबीर का समय और समाज

❑ डॉ. शंकर प्रसाद

समाज की स्थितिया हर युग में बदलती रहती हैं। बदली हुई स्थितियां कवि के सामने होती हैं। इन स्थितियों पर वह समीक्षात्मक दृष्टि डालता है और कभी-कभी इन स्थितियों को बदलने के लिए वह एक योद्धा की तरह सामने आता है। रचनाओं से चिनगारियां निकलती हैं और परिवर्तन की नयी-नयी कोपलें फूटती हैं। इसी तरह जिस तरह जंगल की आग घास-फूस को जलाकर नये ढंग से जंगल में परिवर्तन का मौसम ला देती है।

समय और समाज की चर्चा करते हुए कबीर के समय का समय और समाज कैसा होगा इस पर विचार करना है। समय यहां काल का द्योतक नहीं अपितु हाल से उसका रिश्ता है और समाज में मानवीय मूल्य, सम्बन्ध, राजनीति, धर्म और परम्पराओं का निर्वाह होता है। इसलिए समय और समाज कबीर के समय कैसा था इसकी विषद् व्याख्या के लिए भारतीय चिन्तनधारा (कबीर के समय की चिन्तन धारा) को समझना होगा। भारतीय चिन्तनधारा से ही हम समाज और सयम की जानकारी प्राप्त करेंगे। उस चिन्तनधारा को कैसे मोड़ा गया जिससे समाज में परिवर्तन आने लगा यही विषय की मूल चिन्ता है।

हिन्दू मत के अनुसार धर्म, मोक्ष का साधन-रूप माना गया है और मोक्ष प्राप्ति के लिए तीन साधना मार्गों का निर्देश किया गया है। ये तीन मार्ग-कर्म, ज्ञान और भक्ति हैं। कर्म अति प्राचीनकाल से मान्यता प्राप्त रहा है, फिर ज्ञान का महत्व घोषित हुआ और ज्ञान को आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए अनिवार्य आधार माना गया। अन्त में, ज्ञान की शुष्कता में भक्ति को जन्म दिया। भक्तिमार्ग अत्यन्त प्रशस्त एवं लोकप्रिय हो गया। भक्ति में किसी प्रकार की साधनात्मक कठिनता नहीं रखी गई, साथ ही किसी भी दृष्टि से उसको अनुदार भी नहीं बनाया गया। अनेक देशों में ईसा-पूर्व छठी शती आध्यात्मिक असंतोष और बौद्धिक उद्वेलन के लिए प्रसिद्ध मानी गई। चीन में लाओत्से और कन्फ्यूसियस हुए, यूनान में परमेनाइडीस और एम्पेडोल्कस, ईसा में जरथूस्ट्र और भारत में महावीर तथा महात्मा बुद्ध हुए। डॉ. ताराचन्द ने बताया है कि जब चीनी यात्री

> **कबीर ने अपने समय के समाज में धन के प्रति, लिप्सा के प्रति भी घोर वितृष्णा दिखलाई। धन को प्राप्त करने के लिए चाटुकारिता, अपने को बेचना और कुछ भी करने की चाह को कबीर पूरी तरह जानते थे। इसलिए उन्होंने धन के प्रति निर्ममता दिखलाई।**

फाहियान 5 वीं शती में भारत भ्रमण के लिए आया, तब उसने देखा कि बौद्ध धर्म का प्रसार काबुल से मथुरा तक हो चुका है। बुद्ध का धर्म दो शाखाओं में विभक्त हो गया था - हीनयान और महायान। दोनों दुर्बल भी हो रहे थे। सातवीं - आठवीं शती तक आते-आते बौद्ध धर्म और जैन धर्म अवनति के मार्ग पर तीव्र गति से बढ़े जा रहे थे और शिव की पूजा जोर पकड़ रही थी। भक्ति मत का प्रादुर्भाव हो चुका था विष्णु आदि देवताओं के उपासकों की संख्या घटने लगी थी। तत्कालीन साहित्यिक रचनाओं में भी शैवमत के प्रभाव को देखा जा सकता है। शुद्रक के द्वारा अपने प्रसिद्ध नाटक मृच्छकटिक के नान्दीपाठ में नीलकंठ की प्रधानता दिलाई गयी है। संस्कृत के अत्यन्त प्रसिद्ध कवि कालिदास द्वारा अपने काव्य (रघुवंश) की प्रारंभिक पंक्तियों में पार्वती-परमेश्वर की बन्दना की गई है। कहने का आशय यह है कि उस समय का समाज धर्म से परिचित था और धर्म के ही हिसाब से समाज के नियम कानून बनते थे। यहां विस्तार से चर्चा कबीर के पहले के समय की इसलिए की जा रही है कि बाद के समाज के मूल्य उन्हीं सिद्धान्तों के अनुरूप गढ़े गये। सन् 711 ई० में भारत में एक नया धर्म इस्लाम का प्रारम्भ हुआ। कहते हैं बसरा के गवर्नर हज्जाज बिन युसूफ के आदेश से अरबी जेनरल हमामुद्दीन मुहम्मद बिन कासिम सिंध में अपनी फौज के साथ आ घुसा और पंजाब में मुलतान तक के प्रदेश को जीत लिया। इन्हीं मुसलमान आक्रमकों के साथ इस्लाम धर्म-प्रचारक सूफियों की जमात भी भारत में प्रविष्ट हुई। मुसलमानी आक्रमण और इस्लाम धर्म के प्रचार के पूर्व ही बौद्ध धर्म विकृतावस्था में आ गया था। समाज पतन की ओर उन्मुख था। वज्रयान-सम्प्रदाय के बौद्ध तांत्रिकों के बीच वानाचार अपनी चरम सीमा को पहुंच गया। बिहार से आसाम तक फैले हुए ये बौद्ध सिद्ध कहलाते थे। प्रसिद्ध चौरासी सिद्ध इन्हीं में से हुए हैं। गोरखनाथ के द्वारा ईश्वरवादी हठयोग की साधना चलाई गई, जिसमें मुसलमानों का भी समान आकर्षण देखा जा सकता है। तथ्यानुशीलन के आधार पर कहा जा सकता है कि गोरख के आविर्भाव-काल में मुसलमानों के भारत में प्रवेश के कारण, आध्यात्मिक साधनों के क्षेत्र में अस्तव्यस्तता आ गयी थी। मुसलमानों के प्रवेश एवं उनके द्वारा किये जा रहे हृदयहीन कुकृत्य एवं बौद्ध साधना के टोके-टोटके के द्वारा भारतीय समाज में हलचल पैदा कर दी गई थी। सामाजिक स्थितियां पहले नियामक हुआ करती थीं और उन्हीं के साथ राजनैतिक और आर्थिक स्थितियां भी निर्देशित होती थीं। कबीर के आने के पहले सामाजिक स्थितियां ऐसी ही

थीं जिनमें धार्मिक अस्तव्यस्तता और राजनैतिक स्तर पर चारों तरफ उच्छृंखलता थी। ऐसे समाज को सही राह पर लाने के लिए संभवतः कबीर का आविर्भाव हुआ। सामाजिक परिस्थितयों को देखते हुए अपनी दृष्टि को तटस्थ रखते हुए कबीर ने गुरू की तलाश की। मुहसिन फानी के अनुसार कबीर जब आध्यात्मिक गुरू या मार्गदर्शक की खोज में थे, तब वे सर्वोत्तम हिन्दू-मुसलमान दार्शनिकों के पास गये और अन्त में स्वामी रामानन्द जी उन्हें मिल गये। खजीन तुल आस्फिया के आधार पर वेस्टकॉट महोदय के द्वारा उल्लेख किया गया है कि संत कबीर जोलाहा शंख तबी के शिष्य थे। हिन्दुओं के द्वारा वे भक्त कबीर और मुसलमानों के द्वारा पीर कहे गये।

डॉ. मोहन के अनुसार, कबीर के गुरू कोई मनुष्य नहीं थे। कबीर ने शब्द, ज्ञान, विवेक, राम आदि को ही गुरू-रूप में संकेत किया। परशुराम चतुर्वेदी ने आप गुरू आप चेला की परमावस्था को स्वीकार करते हुए, निश्चित रूप से यह भी नहीं कहा है कि कबीर बिना गुरू के ही थे। ऐसा जान पड़ता है कि उस समय के समाज में मुसलमानों के आने के पहले इस देश में एक ऐसी श्रेणी वर्तमान थी, जो ब्राह्मणों से असंतुष्ट थी और वर्णाश्रम के नियमों का कायल नहीं थी। नरमपंथी योगी ऐसे ही थे। यहां ध्यातव्य है कि कबीर ने अपने को जुलाहा तो कई बार कहा है, किन्तु मुसलमान कभी नहीं कहा। वे सदैव ही अपने को 'नाहिन्दू', ना मुसलमान' कहते रहे हैं। कबीर के समक्ष समाज में एक जाति, वस्तुतः ऐसी थी, जो न हिन्दू कही जाती थी और न मुसलमान। कदाचित् कबीर की वही जाति(जुलाहा) थी। निम्नांकित पंक्तियों से उक्त कथन की पुष्टि होती है:

जोगी गोरख गोरख कहे। हिन्दू-राम-नाम उच्चरे।

मुसलमान कहै एक खुदाई।

कबीर को स्वामी घटि घटि रह्यो समाई॥

कबीर का पारिवारिक जीवन भी कष्टप्रद रहा। कबीर की मां कबीर को सदैव भक्ति भावना में तल्लीन देखकर झल्लाती रहती थी। दो कारणों से झल्लाना संभव हो सकता है-एक तो आर्थिक संकट के कारण और दूसरे मुसलमान परिवार में बेतुका यह राम-नाम।

पूरा समाज धार्मिक विडम्बनावाद से घिरा हुआ। राजनैतिक अस्थिरता चरम पर। समाज में छूत-अछूत की धारणा के कारण बिखराव और नैतिक पतन तथा मानवीय मूल्यों का अवमूल्यन स्पष्ट रूप से समाज को पंगु बना रहा था।

सम्पूर्ण वातावरण विस्फोटक, कबीर का समय और समाज परिवर्तन की चाह में बेचैन था। यद्यपि सुधार करना या नेतागिरी की प्रवृत्ति फक्कड़ मस्तमौला संत कबरी में नहीं थी, किन्तु वे समाज के कूड़ा कर्कट पर कुरूप को निकाल फेंकना चाहते थे। समाज के दुःख-दर्द और उसकी वेदना से फूटकर ही उनके काव्य की सरस्वती निकली। समाज की अप्रिय रीति को देखकर उस पर उन्होंने इतने तीखे प्रहार कियो हैं कि ढोंग और डपोरशंखियों की धज्जियां उड़ गई इसीलिए कबीर की वाणी में इतना तीव्र, तीखा, तिक्त और अभिष्ट सिद्धि करने वाला अचूक व्यंग्य है कि व्यंग्य के क्षेत्र में उनकी तुलना आसानी से नहीं की जा सकती। तर्काश्रयी हठवादियों को तो उन्होंने मूर्ख, मोटी बुद्धिवाला बताया है-

कहै कबीर तरक जिनि साधै, तिनकी मति है मोटी।

कबीर ने अपने समय के समाज में धन के प्रति, लिप्सा के प्रति भी घोर वितृष्णा दिखलाई। धन को प्राप्त करने के लिए चाटुकारिता, अपने को बेचना और कुछ भी करने की चाह को कबीर पूरी तरह जानते थे। इसलिए उन्होंने धन के प्रति निर्ममता दिखलाई। एक बार कोई शाह कबीर के यहां पधारे और उनसे उस शाह ने शिष्य बनने की प्रार्थना की और अपनी दौलत का अभिमान भी प्रदर्शित किया। कबीर ने उसे ठुकरा दिया। परन्तु उनके पूज्य शिष्य कमाल ने उस शाह को अपना शिष्य बना लिया और सारा धन पा लिया। कबीर को इस घटना का समाचार जब मिला, तब वे अत्यन्त दुखी हुए :

डूबा वंश कबीर का, उपजा पूत कमाल

हरि का सुमिरन छोड़ि के, घर ले आया माल।

उस समय के समाज में राजनीतिक कुचक्रों की चर्चा समाज में हुई और कबीर की जमात चाहनेवालों की और बड़ी हुई। लोकबंद कुल की मरजादा' को वे विवेक की दृष्टि से देखने के कायल थे। नहीं तो यही गले में फांसी बन जाती है:

लोकवेद कुल की मरजादा, इहे जले में पासी।

कबीर के पूर्ववर्ती सिद्ध और योगी लोगों की.आक्रांमक उक्तियों में एक प्रकार की हीन भावना की ग्रन्थि थी। कबीर के आक्रमणों में भी एक रस है, एक जीवन है, क्योंकि वे आक्रान्त के वैभव से परिचित नहीं थे और अपने को समस्त आक्रमण योग्य, दुर्गुणों से मुक्त समझते थे। इस तरह जहां उन्हें लापरवाही का कवच मिला था वहां अखंड आत्मविश्वास का कृपाण भी। इसीलिए कबीर अपने ही समाज के लोगों को समझाते हैं -

सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ि कै मैली कीनी चदरिया।

दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया।

समाज में फैले हुए मिथ्याचारों की कबीर ने बहुत नजदीक से खोजबीन की। इसलिए उन्होंने किसी को भी बख्शा नहीं। वे कहते हैं:

एक न भूला दोह न भूला, भूला सब संवारा।

एक न भूला दास कबीरा, जाके राम अधारा।

ब्राह्मणों को जन्म के आधार पर जो महत्व प्राप्त था उसके खिलाफ भी कबीर ने आवाज बुलन्द की। समाज इन लोगों के

द्वारा अत्यधिक प्रताड़ित था। कबीर बताना चाहते थे कि एक विन्दू से निर्मित पंचतत्त्वयुक्त मानव शरीर सबका निर्माता एक ही ब्रह्मणरूपी कुम्हार, सबकी जन्मदात्रियां एक सी, तो फिर जन्म के आधार पर यह भेद कैसा? उन्होंने ब्राह्मणों को ललकारा :

जो तू बाम्हन बाम्हनी जाया।
आन बाट ह्वै क्यों नहीं आया।।

कबीर ने समाज के उस वर्ग को इस यंत्रणा से मुक्ति दिलाने के लिए पंडितों के प्रपंच को सबके सामने रखा :

काहे को की जै पांडे होति विचारा।
होतहि ते उपजा संसारा।।
हमारे कैसे लोहू तुम्हारे कैसे दूध।
तुम्ह कैसे ब्रह्मण पांडै हम कैसे शूद्र।।
होति होति करत तुम्हे जाए।
तौं श्रभास काहे को आए।।

कबीर के समय समाज का हाल ऊपर बताए कारणों से बुरा था। ब्राह्मण और शूद्र की ही नहीं मुसमानों और हिन्दूओं के बीच वैमनस्य, भेदभाव की खाई भी चौड़ी नहीं। दोनों धर्मावलम्बी एक दूसरे मत को तोड़ने में लगे थे। कबीर ने आपसी एकता को कायम करने की चेष्टा की। उन्होंने स्पष्ट कहा :

ना जाने तेरा साहब कैसा है।
मसजिद भीतर मुल्ला पुकारै,
क्या साहिब तेरा बाहर है?
चिउंटी के पग नेवर बाजे,
सो भी साहब सुनता है।
पंडित होय के आसन मारै, लम्बी माला जपता है।
अन्दर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहब लखता है।।

हिन्दुओं ने समाज में छोटे-छोटे पत्थरों को पूजकर मूर्त्तिपूजा की विशाल संभावना को आगे बढ़ाया था। समाज **मूर्त्तिपूजा** के लिए भी आपस में द्वेष रखता था। हिन्दुओं को फटकार लगाना आवश्यक था। तब कबीर ने कहा :

हम भी पाहन पूजते, होते जन के रोज।
सतगुरू की किरपा मयी, डार्‌या सिर पै बोझ।।
पत्थर पूजै हरि मिलै तो मैं पूजूं पहाड़।

मुसलमानों को भी समझाया :

कंकड़-पत्थर जोड़ के मसजिद लई बनाय।
तापर मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।

यहां यह बात ध्यान देने की है कि मुसलमानों के राज्य में मुसलमानों के खिलाफ ऐसा कहना और अपनी गर्दन बचा लेना प्रमाणित करता है कि कबीर के बोलने में तटस्थता थी। इन्हीं कारणों से अपने समय की नाड़ी पहचानने वाले कबीर युगद्रष्टा बन गये। कहने में सफाई हो तो बात बन जाती है। कबीर की वाणी ने समाज में एक और बहुत बड़ा काम किया। वह था सात्विकता और आचरण प्रवणता का प्रचार। स्त्री निंदा करते हुए उनका मुख्य उद्देश्य साधक और समाज के सामान्य व्यक्तियों की चारित्रिक महत्व के बारे में समझाना। इतना ही नहीं, कबीर अपने समय में प्रचलित व्यभिचार, परस्त्रीगमन से अपरिचित नहीं थे। इसलिए जहां उन्होंनें सामान्य रूप से नारी-निंदा की है वहां पर स्त्रीगमन पर भी विरोध प्रकट किया है :

पर नारी राता फिरैं, चोरी बिठता सांहि।
दिवस चारि सरसा रहे, अंति समूला जाँहि।।

ऊपर धार्मिक असहिष्णुता की जो बातें कही गई थी उनमें सुधार के लिए कबीर ने अनूठे कार्य किये। विभिन्न धर्म-साधनाओं का परिचय स्वयं कबीर ने दिया है :

अरू भूले षट दरसन भाई। पाखंड भेष रहे लपटाई।
जैन बोध और साकत सैना। चारवाक चतुरंग बिहूना।
जैने जीव की सुधि न जानें, पाती तोरी देहुरै आने।।

कबीर ने मधुमासिका के समान समस्त साधनों, समस्त धर्म का सार लेकर समाज को धर्म का ऐसा रूप दिखाया जो सर्वग्राह्य एवं सुखचारी था। उन्होंने हिन्दू-मुसलमान दोनों धर्मों के ठेकेदारों को बुरी तरह फटकारा है :

जो रे खुदाय मसीत बसतु है, अवर मुलुक किह तेरा।
हिन्दू मूरति नाम निवासी, दुहमति तन्तु न डेरा।

रजा, तीर्थ, व्रतादि का भी उन्होंने खूब खुलकर विरोध किया।

पूजा, सेवा, नेम, व्रत, गुड़िया का सा खेल।
जब लगि पिउ पर सै नहीं, तब लग संरुप मेल।

ऐसे उदाहरणों से यह आलेख भरा जा सकता है लेकिन यहां इतना ही बताना अभीष्ट है कि अपने समय और समाज को कबीर ने पूरी तरह से प्रभावित किया था। जन्मान्तरवाद, कर्मवाद तथा भक्तिवाद से लेकर नाथों का योग तत्व, जैनों का अहिंसातत्व, सहजयान का सहज तत्त्व, इसलाम का एकेश्वरवाद, सुफियों का प्रेम तथा रहस्य तत्त्व आदि पर कबीर ने खुलकर अपने विचार व्यक्त किये और समाज को इन छायाओं से मुक्त कराने के लिए वृहत् यात्रा शुरू की। कबीर का समय और समाज उनकी वाणियों में स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ता है। इन वाणियों का मनन-चिन्तन ही हमें उनके समाज को दर्शन के लिए काफी है।

सम्पर्क : रीडर, हिन्दी विभाग, बी.एन.कॉलेज, अशोक राजपथ, पटना

अपने समय और समाज को कबीर ने पूरी तरह से प्रभावित किया था। जन्मान्तरवाद, कर्मवाद तथा भक्तिवाद से लेकर नाथों का योग तत्व, जैनों का अहिंसातत्व, सहजयान का सहज तत्त्व, इसलाम का एकेश्वरवाद, सुफियों का प्रेम तथा रहस्य तत्त्व आदि पर कबीर ने खुलकर अपने विचार व्यक्त किये और समाज को इन छायाओं से मुक्त कराने के लिए वृहत् यात्रा शुरू की।

'मैंने यहां वहां खुले आँगन में कुछ फूल उगाए हैं........'

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में काव्य संध्या

प्रस्तुतिः ब्रजेश, नई दिल्ली

"इस आयोजन की उपादेयता को महसूस करते हुए माध्यम स्वयं लेखकों/ पाठकों के पास आया है, यहाँ तक कि दो वैचारिक पत्रिकाओं के सम्पादक भी आप की प्रतिभा को पहचान कर उसे मुखरित करने के ख्याल से आपके समक्ष मौजूद हैं, यही इसकी सफलता है।" ये उद्‌गार हैं सुप्रसिद्ध साहित्यकार कविवर **रामदरश मिश्र** के, जिसे उन्होंने विगत 10 जून को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के **टेसला हॉल** में आयोजित एक **काव्य सन्ध्या** के अपने अध्यक्षीय भाषण में व्यक्त किए। साहित्यिक संस्था **सम्भावना** की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में जे०एन०यू० में पी-एच०डी०, डी०लिट् तथा एम० फिल कर रहे युवा छात्रों एवं कवियों से श्री मिश्र ने यह आशा जाहिर की कि वे आज की जिन्दगी की सच्चाइयों को लेकर साहित्य में नया रंग देंगे, नया गंध देंगे। आज की त्रास को पहचानते हुए मूल्यों को ढूंढ़ने की सलाह देते हुए उन्होंने संतोष व्यक्त किया कि आज की नई पीढ़ी अपने को अतीत से जोड़ रही है, अपनी विरासत के मूल्यों को पहचान रही है। नई प्रतिभाओं की कविताओं में एक मूल्य-चेतना है, एक मूल्य-बोध है। उन्होंने पुनः कहा कि दुख तो तब होता है जब हम देखते हैं कि सम्प्रेषण को हाशिए पर डालने की कोशिश की जा रही होती है। अपने विचार व्यक्त करने के पश्चात् उपस्थित सुधी जन के आग्रह पर श्री मिश्र ने अपने काव्य-संग्रह से **चारों ओर काँटों का एक जंगल है**........तथा **आदत** शीर्षक से **मैंने यहां वहां खुले आँगन में कुछ फूल उगाए हैं**........कविताओं का पाठ कर काव्य-संध्या को जीवन्त बनाया।

"किसी ने एक दिन कहा था,/इस बार/ नहीं खिलेगा अमलतास/ खून से लहूलुहान धरती पर/नहीं फलेगा कोई भी हरा पेड़/और.....दूर-दूर तक बंजर हो जाएगा/सब कुछ...........," जी हाँ, **तीन सहवास** शीर्षक कविता की ये पंक्तियां हैं **अपूर्व जनगाथा** पत्रिका के सम्पादक **डॉ० किरनचन्द्र शर्मा** के, जिसे उन्होंने पाठ कर लोगों को कुछ सोचने पर विवश किया।

राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित वैचारिक हिन्दी त्रैमासिकी **विचार दृष्टि** के सम्पादक **श्री सिद्धेश्वर** ने जापान के सांस्कृतिक जीवन की अभिन्न अंग बन चुकी जापानी हाइकु विधा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पाँच-सात-पाँच वर्णों के क्रम में त्रिपदी-सत्रह-वर्णी हाइकु एक ऐसी विधा है, जिसमें नए युग के स्वर को कम से कम शब्दों में पाठकों के समक्ष व्यक्त करने की अद्‌भुत क्षमता होती है। आज की इस आपाधापी के युग में जहाँ आदमी खासकर निम्न एवं मध्यवर्गीय परिवार जीवन संघर्षों, जटिलताओं एवं अनेक समस्याओं के बीच साहित्य के अपने पठन-पाठन का वक्त रोटी, कपड़ा और मकान के निदान में लगाने को मजबूर है, इस भागमभाग की स्थिति में उसका ध्यान अब बड़ी-बड़ी कहानियों, उपन्यास तथा लम्बी कविताओं के बजाय लघु कथाओं तथा छोटी कविताओं की ओर उन्मुख होना स्वाभाविक है। **पतझर की सांझ** अपने हाइकु काव्य-संग्रह की कविताओं की कुछ इन पंक्तियों को सुनाया- "साहित्यकार/सामाजिक आकृति/का है चितेरा, वही साहित्य/जो सुलझाए आज/उलझनों को, हर कविता/कवि के हृदय में/होती कसक, जरूरी होता/होने के लिए कवि/आदमी होना, ख्वाव टूटे तो/मायूस मत होना/जगाएगा वो, नेता के लिए/कुर्सी ही माई-बाप/जनता सिक्का, हर मोड़ पे/मैं आपसे मिलूँगा/हूँ भीड़ का जो।" प्रारम्भ में जहां जे०एन०यू० के युवा कवि **अरुणदेव** ने किताबों, अकांक्षा, बुद्ध तथा गालिब शीर्षक से अपनी कविताएं सुनाकर भारतीय समाज के तीखे अंतर्विरोध पर चोट की वहीं **प्रमोद तिवारी** ने हादशा, ख्वाब, और यथार्थ शीर्षक की कविताओं का पाठ कर अपने वैचारिक लेखन का परिचय दिया। भोजपुरी के चर्चित कवि **जयप्रकाश सागर** ने **कवले रहव वनिहार** गीत का सस्वर पाठ कर मजदूरों की व्यथा-कथा को बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया। देखें उनकी पंक्तियों को"-कवले जुलिमवा के शासन चलइव, हमके बनाई वनिहार कवले रहव वनिहार..........।" इसी प्रकार दिल्ली वि०वि० के **संजीव** ने **जो अभी करना है** और **सपना** शीर्षक कविता के माध्यम से आज के युवा वर्ग के कर्तव्य एवं प्रवृति पर एक सही और सधी टिप्पणी की। युवा कवयित्री **कमला** ने **जिन्दगी गरीब है** और **एक ही पल में** कविताओं के जरिए श्रोताओं की संवेदनाओं को उकेरने की कोशिश की। तत्पश्चात् आम आदमी की तरह अपनी जिन्दगी गुजार रहे विद्रोही कवि **रमाकान्त विद्रोही** ने **मछली का दुख मछली जाने, औरत का दुख औरत जाने** तथा **मैं साइमन न्यास पर बैठता हूँ** कविताओं का पाठ कर आज के समाज के यथार्थ तथा उसकी वास्तविकताओं को उजागर किया तथा अपने इंसानी जज्बात के जरिए जिन्दगी की तल्ख हकीकतां से रूबरू कराया। दिल्ली वि०वि० के **सुनील तिवारी** ने अपनी **परिवर्तन** और **खिड़की** तथा **रत्नेश** ने सौन्दर्य, आस्था और अनुभूति शीर्षक कविताओं को सुनाया। जे०एन०यू० के **भरत प्र० त्रिपाठी** ने **बुजुर्ग लड़का, कश्मीर के बच्चे** तथा **बामियान के बुद्ध** शीर्षक कविताओं के माध्यम से तालिबान इस्लामी कट्टरपंथियों पर करारा प्रहार करते हुए उनकी मानसिक हताशा, बर्बर, क्रूर, बहशी और धर्मान्धिता से परिचय कराया।

इस महानगर में एक जोड़ी उदास आँखों के सिवा कुछ नहीं लेकर आया था............. कार्यक्रम के संयोजक **ब्रजेश** इन पंक्तियों से एक ओर अतीत की दुख-दर्द भरी जिन्दगी पर प्रकाश डालते हैं, वहीं कवि यह विश्वास दिलाता है कि एक सच्ची कोशिश से इस दुनिया में एक बेहतर जगह भी बन सकती है।

डॉ० गोविन्द प्र० सिंह पहाड़, उगता हुआ सूरज तथा **किसी नाम से** शीर्षक कविता ने जहाँ उपस्थित संवेदनशील जनों के मन को झकझोरा वहीं जे०एन०यू०के अंग्रेजी प्राध्यापक **प्रो० आनन्द प्रकाश** की **मैंने एक सांप देखा** और **बाबू रामकिशन की नींद** शीर्षक कविताओं की पंक्तियों में अंधकार के बादल के उस पार रोशनी की खोज की जाती है और उसमें प्रबल जिजीविषा देखने को मिलती है। इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित दूरदर्शन, नई दिल्ली के कार्यक्रम अधीशासी एवं संवेदनशील कवि **अमर नाथ 'अमर'** ने कविताएं तो नहीं सुनाई परन्तु उपस्थित युवा कवियों को अपने उद्‌गार से प्रोत्साहित करते हुए उनकी प्रतिभाओं को दूरदर्शन के माध्यम से मुखरित करने का वायदा किया। सब मिलाकर आज की यह काव्य-सन्ध्या जहाँ एक ओर यादगार साबित हुई वहीं **सम्भावना** द्वारा उदीयमान साहित्यानुरागी कवियों को प्रोत्साहित करने की दिशा में किया गया यह प्रयास सफल हुआ।

सम्पर्क: द्वारा श्री जी०सी० कथुरिया
206, ढका, दिल्ली-9

'कबीर की खोज' विषय पर

पटना विश्वविद्यालय में लगातार तीन सप्ताह चली अकादमिक संगोष्ठी

प्रस्तुतिः डॉ० शिवनारायण

यह आकस्मिक नहीं है कि विश्वग्राम की परिकल्पना के मूर्त्त रूप लेते ही उदारीकरण की प्रक्रिया जोर पकड़ती चली गई, जिसके परिणामस्वरूप अपने देश में स्त्री-विमर्श तथा दलित-विमर्श चिंतन के केन्द्र में आ गया। स्त्री-विमर्श एवं दलित-विमर्श के उत्तर आधुनिक विश्लेषण का एक सुखद परिणाम इस रूप में सामने आया कि मध्यकालीन संत कवियों की परम्परा में निर्गुण भक्तिधारा के विलक्षणचेता कवि कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, मीरा आदि समकालीन कवियों को बहुत पीछे छोड़ आज सर्वाधिक प्रासंगिक कवि के रूप में भारतीय जनमानस में छा गए। एक सुखद संयोग यह भी जुड़ गया कि उनकी जयंती का अभी छः सौवाँ वर्ष चल रहा है और पूरे छः सौ वर्षों बाद कबीर की प्रासंगिकता के बहाने उसके विभिन्न पक्षों को लेकर पूरे देश में आयोजन हो रहे हैं। अनगिनत साहित्यिक पत्रिकाओं के **'कबीर विशेषांक'** प्रकाशित हो रहे हैं तथा अकादमिक-गैर अकादमिक स्तर पर भी चर्चाओं की शृंखला चल रही हैं। इसी क्रम में पटना विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग में भी यू० जी० सी० एकेडमिक स्टाफ कॉलेज द्वारा **'तृतीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम'** के अन्तर्गत तीन सप्ताह तक चलने वाली **'कबीर की खोज'** विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों से आए 43 प्रतिभागी व्याख्याताओं सहित अनेक लोगों ने भाग लिया।

कबीर पर केन्द्रीत इस सारस्वत- वैचारिक आयोजन का उद्घाटन सत्र 30 मार्च को पटना कॉलेज के 'सेमिनार हॉल' में आयोजित किया गया,जिसकी अध्यक्षता पटना विश्वविद्यालय के कुलपति **डॉ० नजरे अहसन** ने की एवं उद्घाटन प्रसिद्ध समाजवादी नेता एवं 'सतगुरु कबीर महाकुंभ' के अध्यक्ष **श्री भोला प्रसाद सिंह** ने किया। प्रतिभागी शिक्षकों सहित विश्वविद्यालय आचार्यों एवं जाने-माने साहित्यकारों से खचाखच भरे हॉल में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित अन्तर्विश्वविद्यालय बोर्ड के अध्यक्ष **डॉ० शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव** ने कबीर के रचनात्मक व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए कहा कि कबीर अपने काल में संस्कृति पुरुष थे, इसलिए वे आज भी प्रासंगिक हैं। हिन्दी के आरंभिक कवि कबीर की कृतियों तथा उनके संदेशों की ओर नए सिरे से जो रुचि जगी है, उससे हिन्दी-साहित्य समृद्ध होगा। डॉ० श्रीवास्तव ने कबीर के साहित्य से उद्धरण देते हुए विस्तार में उनकी विशिष्टताओं को रेखांकित करते हुए कहा कि कबीर अपने संदेश और अपनी रचनात्मक निपुणता के कारण लोकप्रिय हैं। कागद की लेखी को चुनौती देने वाला व्यक्ति क्रांतिकारी ही हो सकता है। कबीर एक साथ कई-कई मोर्चे पर थे और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर सम्प्रदायों पर प्रहार कर रहे थे। शब्दों का ताना-बाना बुनने वाला उस कलाकार की बुनी चादर हमारे लिए सुखद आच्छादन के समान है। कबीर हिन्दी के सरल और कठिन दोनों कवि हैं। शब्दों में वे जितने सहज दिखते हैं, अर्थों में उतने ही कठिन। कबीर की उलटबांसी को समझने में नानी याद आ जाती है। ऐसे में कबीर को नए सिरे से खोजने का काम चुनौती भरा है। इस सत्र का अत्यन्त कुशल संचालन प्रसिद्ध समालोचक एवं आयोजन के समन्वयक **डॉ० रामवचन राय** ने किया, जबकि आखिर में धन्यवाद ज्ञापन हिन्दी की विभागाध्यक्ष **श्रीमती आयेशा अस्मतुल्लाह** ने किया।

31 मार्च से 11 अप्रैल तक चलने वाली इस संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में कबीर से संदर्भित पक्षों पर तीन दर्जन से भी अधिक व्याख्यान हुए, जिनमें हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान प्राध्यापकों ने हिस्सा लिया। 31 मार्च को **'इतिहास में कबीर'** विषयक पर्चा का पाठ करते हुए **डॉ० ओम प्रकाश प्रसाद** ने कहा कि 'इतिहास में कबीर को मानव कम और संस्था ज्यादा माना गया। कबीर तत्कालीन समाज के दर्पण थे।' इसके बाद विस्तार से उन्होंने इतिहास के पुष्ट प्रमाणों से कबीर के समाज को सामने रखते हुए इसमें उनके महत्व को प्रतिपादित किया। **डॉ० भृगुनंदन त्रिपाठी** ने कहा कि "कबीर अपने समय के श्रेष्ठ गीतकार हैं। वे ऐसे कवि हैं, जिनकी सर्जनात्मक प्रेरणा लोक काव्य से जुड़ती है। इसलिए कबीर को लोक कवि के रूप में ही देखा जाना चाहिए। अन्ततः जैसे तुलसीदास किसानों के कवि हैं, वैसे ही कबीर कारीगरों के कवि हैं। कबीर का काव्य आनन्द और वेदना का ऐक्य स्थापित करता है।"

1 अप्रैल को डॉ० राणा प्रताप (**कबीर के मूल्यांकन की नई दिशाएँ**) एवं सहरसा से आए डॉ० सुभाष चन्द्र यादव (**कबीर-काव्य में समन्वय/कबीर का एकेश्वरवाद**) ने अपने व्याख्यान में चिंतन के जिस छोर से कबीर के काव्य का मूल्यांकन प्रस्तुत किया, वह सुव्यवस्थित नहीं होने के कारण कबीर के वैशिष्ट्य को खोलने में अक्षम रहा; गो कि कबीर को समझने की उनकी गंभीर चेष्टा प्रशंसनीय थी। 3 अप्रैल को जहाँ **डॉ० शंकर प्रसाद** ने अपने व्याख्यान (**कबीर की उलटबाँसियों की परम्परा एवं उसका मर्म**) में कबीर की उलटबासियों के गूढ़ अर्थो को उद्घाटित करते हुए उसकी ज्ञान-राशियों से प्रतिभागी शिक्षकों को चमत्मृत किया, वहीं शांति निकेतन स्थित **'विश्व भारती'** से आए **डॉ० सियाराम तिवारी** ने **'कबीर के राम'** विषयक पर्चा का पाठ करते हुए उद्घोषित किया कि कबीर राम के चार रूपों को अपने साहित्य में आत्मसात करते हैं-दशरथ-पुत्र राम, घट-घट में व्याप्त राम, बीज रूप में बसे राम तथा जगत के न्यारे राजा राम। 4 अप्रैल को एक बार फिर डॉ० सियाराम तिवारी ने **'कबीर की काव्य-भाषा'** पर व्याख्यान करते हुए कहा कि "कबीर की भाषा अभिव्यक्ति की भाषा नहीं, आत्मसाक्षात्कार की भाषा है। वे सर्वत्र रूपक में सोचत-बोलते हैं। अपने पदों में कबीर शब्दक्रीड़ा करते नजर आते हैं, जो उनकी अनुभूति के अंग है।" उसी सत्र में प्रख्यात समालोचक **डॉ० अमरनाथ सिन्हा** ने **'कबीर का रहस्यवादः एक पुनर्विचार'** आलेख में कहा कि कबीर को रहस्यवादी कहना उन्हें छोटा करना है, क्योंकि उनके पास छिपाने के लिए कुछ है ही नहीं। कबीर-साहित्य में रहस्य हो सकता है, पर कबीर रहस्यवादी नहीं थे।

7 अप्रैल को प्रख्यात सौंदर्यशास्त्री समालोचक **डॉ० कुमार विमल** ने **'कबीर की सामाजिकता एवं क्रांति-चेतना'** विषयक अपने व्याख्यान में कहा कि कबीर अध्ययन और चिंतन की दृष्टि से हमेशा सीमांत पर रहे। वे परम्परा भंजक होने के साथ ही नए विकल्पों के सृजनकर्मी थे। उनमें निर्भीक समाज सुधारक के तत्व थे। उनके साहित्य की समाजशास्त्रीय विवेचना से पता चलता हे कि वे समाज को रूढ़ियों से मुक्त करना चाहते थे, लेकिन उनकी ये लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। डॉ० विमल ने आगे कहा कि आगे चलकर लोगों ने प्रेमचंद को मुंशी, अज्ञेय को वात्स्यायन और राहुल को सांकृत्यायन के रूप में जाना, किन्तु कबीर दास और छोटे होकर सिर्फ कबीर रह गए। वास्तव में कबीर अपने नाम के अनुरूप **(कबीर का शाब्दिक अर्थ 'श्रेष्ठ' होता है)** श्रेष्ठ एवं असाधारण व्यक्तित्व थे। वही कबीर ब्राह्मणवाद के घोर विरोधी थे। कबीर को उनके बाद के शायरों ने नब्जशनास यानी लोगों की नब्ज समझने, नसिहत देने, इहलोक-परलोक की बातें करनेवाला कवि कहा है। कबीर को उनके समय के लोगों ने पहचाना,फिर भी ये अपने समकालीन नानक की तरह व्यापक रूप से नहीं जाने गए, जिसका एक कारण यह भी है कि कबीर ने नानक जितना भ्रमण नहीं किया। उन्होंने कहा कि कबीर का जिक्र **'आइना-ए-अकबरी'** और **'उबिस्तान-ए-मजहिब'** जिससे उनकी धार्मिक सहिष्णुता का परिचय मिलता है।" इसी सत्र में वीरकुँवर सिंह विश्वविद्यालय के डॉ० दुर्गाविजय सिंह **(कबीर और उनका बीजक)** तथा छपरा से आए **डॉ० वीरेन्द्र कुमार यादव (कबीर का काव्य)** ने भी अपने-अपने व्याख्यान में संबद्ध विषयों पर अपने गंभीर अध्ययन से कबीर को नए सिरे से परखने की कोशिश की।

बाद के सत्रों मे **'कबीर की भक्ति'** पर चार व्याख्यान हुए, जिनमें अपने-अपने सुव्यवस्थित अध्ययन के द्वारा **डॉ० दुर्गाविजय सिंह, डॉ० शरण सहेली, डॉ० शंभुशरण सिन्हा एवं डॉ० भूपेन्द्र कलसी** ने अत्यन्त विस्तारपूर्वक कबीर की भक्ति की परतों को खोल-खोलकर समझाने की कोशिश की। इनमें डॉ० कलसी का व्याख्यान साधना की अनुभूतियों से भरा अत्यन्त प्रभावपूर्ण रहा। इसी क्रम में **'भक्ति आन्दोलन के समाजिक आधार और कबीर'** तथा **'कबीर और नारी'** विषयक दो व्याख्यान हैदराबाद स्थित केन्द्रीय विश्वविद्यालय से आए **डॉ० गोपेश्वर सिंह** का हुआ। अपने पहले व्याख्यान में डॉ० सिंह ने कहा कि "उत्तर भारत में भक्ति-आंदोलन दक्षिण से नहीं आया। वहाँ तो वैष्णव भक्ति आंदोलन चल रहा था, जो पांचवीं शताब्दी में शुरू होकर दशवीं शताब्दी में अपने उत्कर्ष को प्राप्त हुआ; जबकि उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन पन्द्रहवीं शताब्दी से आरम्भ होता है। यों भारत में भक्ति आन्दोलन सबसे बड़ा आंदोलन था, बौद्ध आन्दोलन से भी बड़ा। कबीर भक्ति आंदोलन के केन्द्र में थे और जनता को उसकी सही दिशा बता रहे थे।" 'कबीर और नारी' विषयक व्याख्यान में डॉ० सिंह का मानना था कि "भारत का सम्पूर्ण चिंतन स्त्री-विरोधी है। भक्ति आंदोलन के चिंतन में दलित-मुक्ति की जितनी छटपटाहट दिखती है, उतनी स्त्री-मुक्ति की नहीं। शंकराचार्य की 'माया' कबीर पर भी हावी दिखती है। तुलसी जितने स्त्री-विरोधी हैं, उससे ज्यादा कबीर हैं। भक्तिकाल में केवल सूरदास ही ऐसे कवि हैं, जो स्त्री-विरोधी नहीं है। संवेदना के स्तर पर तो भक्त कवियों की महत्ता को स्वीकार किया है, उसे पूज्य माना है, किन्तु दार्शनिक धरातल पर स्त्रियों की घोर उपेक्षा की गई है। चेतना के स्तर पर कबीर भी स्त्री-विरोधी हैं, जबकि संवेदना के स्तर पर स्त्री-विरह में वे रोते दिखाई पड़ते हैं।" उसी सत्र में **डॉ० शंकर प्रसाद** ने अपने **'कबीर का समय और समाज'** विषयक व्याख्यान में कहा कि " कबीर का समाज धर्म परिचालित था। अत: स्त्री-निंदा के मूल में कबीर के यहाँ साधक एवं समाज में चरित्र की शुचिता को बचाना था।" 11 अप्रैल को प्रथम सत्र में जहां डॉ० श्यामनंदन शास्त्री ने अपने व्याख्यान **(कबीर के व्यक्तित्व का पृष्ठाधार: वैशिष्ट्य और प्रासंगिकता)** में सिद्धों-नाथों के साहित्य से ही कबीर के व्यक्तित्व का मुख्य पृष्ठाधार निर्मित होना बताया; वहीं अगले सत्र में **'कबीर-मठ में कबीर'** विषय पर बोलते हुए श्री भोला प्रसाद सिंह (एम०एल०सी०) ने कहा कि कबीर ने ही पहले पहल इस देश के उपेक्षितों-दलितों को ईश्वर दिया। बाद के 12 से 18 अप्रैल के विविध सत्रों में **डॉ० शैलेश्वर प्रसाद सती (पूरब के कबीर की खोज पश्चिम में), डॉ० अरविन्द कुमार (कबीर की परम्परा), डॉ० भगवान सिंह (हिन्दी आलोचना में कबीर), डॉ० मटुकनाथ चौधरी(ओशो की दृष्टि में कबीर), प्रो० अरुण कमल(कबीर की कविताई), डॉ० अमरनाथ सिन्हा(तुलसी और कबीर के राम), डॉ० रामदेव प्रसाद(कबीर की भाषा), डॉ० आनन्द मिश्र(कबीर में संगीत तत्व), डॉ० शोभाकांत मिश्र (कबीर के दार्शनिक विचार), डॉ० शरण सहेली(कबीर का जीवन-दर्शन)तथा डॉ० नरेश प्रसाद तिवारी (अद्वैतवाद और कबीर)** ने भी अपने-अपने विषयों के अनुरूप कबीर के विविध व्यक्तित्व, दर्शन, भाषा, समाज आदि से संबद्ध विचारोत्तेजक जानकारी देते हुए उन्हें अद्वितीय संतकवि घोषित किया।

कबीर की खोज में सम्पन्न तीन सप्ताह तक चलने वाली इस अकादमिक संगोष्ठी को चर्चित समालोचक एवं आयोजन-समन्वयक **डॉ० रामवचन राय** ने अपने जिस अद्भुत मेधा की त्वरा टिप्पणियों से संचालित किया, उससे संगोष्ठी की प्राणवत्ता आद्यन्त बनी रही और प्रतिभागियों में सदैव उत्साह का संचार होता रहा। **प्रतिभागियों में सदैव उत्साह का संचार होता रहा।** प्रतिभागियों में से डॉ० शिवनारायण, डॉ० श्रीकांत सिंह, डॉ० शशिभूषण चौधरी, डॉ० सुनील कमार, डॉ० मंगला रानी, डॉ० शिवशंकर मंडल, डॉ० गोपाल कुमार यादव, डॉ० हरिओम आर्य, डॉ० कलानाथ मिश्र, डॉ० सुरेन्द्र तिवारी, डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद, डॉ० विनोद कुमार 'मंगलम', डॉ० वीणा कुमारी आदि ने पूरे आयोजन के दौरान व्याख्यानों के उपरांत की बहस में हिस्सा लेकर गोष्ठियों को प्राणवंत बनाया। **'कबीर की खोज'** विषयक इस संगोष्ठी का समावर्त्तन समारोह 19 अप्रैल को हुआ, जिसकी अध्यक्षता पटना विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलपति **डॉ० एल० एन० राम** ने की। आज कबीर कई रूपों में लोक जीवन में व्याप्त हैं, जिसकी बृहत्तर झांकी इस पूरे आयोजन में देखने को मिली। जन मानस में व्याप्त कबीर, कबीर मठों में कबीर तथा विश्वविद्यालयों में कबीर इन सभी रूपों में कबीर का महत्व अपने समकालीन भक्त कवियों की तुलना में कहीं अधिक छन कर सामने आया, जो अनेक कारणों से आज सर्वाधिक प्रासंगिक हो गया है। यही निष्कर्ष 'कबीर की खोज' से निकलकर प्रतिभागियों में व्याप्त हुआ।

सम्पर्क: 1 सी, अशोक नगर, पटना

'विकासोन्मुखी नाटक' विषय पर राज्यस्तरीय सेमिनार

प्रस्तुति : अंजलि

समाज को शिक्षित करने, विकास के प्रति जागरूकता पैदा करने, अधिकार बोध की शिक्षा देने, संगठन बनाने तथा संघर्ष के लिए ताकत पैदा करने के उद्देश्य से विगत 14 जून को बिहार सरकार के **सांस्थिक वित्त एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन विभाग द्वारा बिस्कोमान भवन, पटना** में एक **'विकासोन्मुख नाटक'** विषयक एक राज्य स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता **'विचार दृष्टि'** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** ने की एवं संचालन विभागीय उपसचिव एवं कथाकार **हरिवंश नारायण** ने किया।

सेमिनार का उद्घाटन करते हुए विभागीय सचिव पी.पी.शर्मा ने कहा कि इस सेमिनार के द्वारा बिहार सरकार के विकास सम्बन्धी कार्यक्रमों को नाटकों द्वारा कैसे आमजन से जोड़ा जा सकता है, इस पर विचार के लिए यह संगोष्ठी आयोजित की गई है। लेखकों एवं नाटकारों के सहयोग के बिना आमजन को इस बात की जानकारी नहीं हो सकती है कि सरकार उनके विकास के लिए क्या-क्या कर रही है या फिर उनकी समस्याओं से सरकार परिचित नहीं हो सकती है।

सेमिनार में भाग लेते हुए **'विचार दृष्टि'** के कार्यकारी सम्पादक डॉ. **शिवनारायण** ने कहा कि किसी विकासशील समाज में साहित्यकार की भूमिका एक समर्थ विपक्ष की होती है, जबकि संक्रमण काल में एक साहित्यकार के लेखन में करूणा, संवेदना एवं समाज की भाषा को व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए, अन्यथा वह अपने समय के यथार्थ को जानकर भी उसे सृजन में तब्दिल करने में अक्षम ही रहेगा और इस तरह उसकी बातें निष्प्रभावी हो जाएंगी। उन्होंने कहा कि सांस्थिक वित्त विभाग लेखकों की भूमिका को समझते हुए 'विकासोन्मुख नाटक' पर संगोष्ठी कर रहा है, जिसका फलदायी परिणाम होगा।

विभागीय उपसचिव एवं कथाकार **हरिवंश नारायण** ने कहा कि सभ्यता के आदिकाल से ही गरीबी-अमीरी के बीच खाई रही है, जिसे पाटने की सार्थक कोशिश लेखकों-नाटककारों को करनी है, ताकि समाज की अन्तिम पंक्ति में खड़े लोगों को आगे आने की ताकत मिल सके।

सेमिनार में राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से आए अनेक नाटककारों, रंगकर्मियों, निर्देशकों, कलाकारों, पत्रकारों, रचनाकारों एवं स्वयंसेवी संगठनों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, जिनमें अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, अरुण कुमार सिंह, निविड़ शिवपुत्र, राधाकृष्ण सिंह, नरेन्द्र बाम, बाबुल प्रसाद, परिधि, वीणा सिंह, मीनाक्षी स्वराज, ध्रुव प्रसाद, सच्चिदानन्द सिंह 'साथी', सतीश कुमार मिश्र आदि प्रमुख थे।

अपने अध्यक्षीय सम्भाषण में समाजसेवी **सिद्धेश्वर** ने कहा कि आज समाज में मूल्य घटता जा रहा है और विश्वास टूटता जा रहा है, हर व्यक्ति एक-दूसरे पर आरोप लगाकर संतुष्ट होने का प्रयास कर रहे हैं। साहित्यकारों को ऐसी विकृतियों से बचने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि मैंने पूरे देश में भ्रमण के दौरान पाया है कि लेखकों और साहित्यकारों ने समाज को सही दिशा देने का प्रयास अपने लेखन से किया है। मैं इस बात से पूरी तरह आश्वस्त हूँ कि बिहार सरकार का यह सांस्थिक वित्त विभाग नाटक के माध्यम से राष्ट्रीय कृषि नीति तथा अन्य नीतियों से सम्बन्धित योजनाओं को गांव-गांव तक पहुंचाने के लिए सार्थक प्रयास करेगा ताकि ग्रामीण कृषि व्यवस्था के विकास में बैंकों की भूमिका सही हो सके। बैंकों में जनता की पूंजी है, जिसे जनता के विकास में खर्च होनी ही चाहिए।

प्राय: दिनभर चली इस संगोष्ठी का समापन वक्ताओं द्वारा विभागीय पहल की प्रशंसा के साथ हरिवंश नारायण के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

विचार कार्यालय, पटना

सर कलम हो रहा, नजरों के सामने ....

पिछले दिनों बांका के डोमो कुमारपुर में प्रथमबार आयोजित कवि सम्मेलन में मथुरा नाथ सिंह रानीपुरी ने भ्रष्टाचार पर चोट इन पंक्तियों में किया--सर कलम हो रहा, नजरों के सामने, पहरे पर हैं चोर खड़े हाथों में ढाल है। बिक रहे हैं आदमी, कौड़ियों के दाम गली-गली हर कुचे पर बैठा दलाल है। बाराहाट महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० अचल भारती की अध्यक्षता में सम्पन्न इस कवि सम्मेलन में पार समुंज भागलपुरी, दीपक ज्योति, डॉ० प्रेमचन्द पाण्डेय, प्रो० विक्रमादित्य विहंगम, हीरा प्रसाद हरेन्द्र, महेन्द्र प्रसाद निशाकर, कैलाश ठाकुर, निकाश प्र० सिंह सत्यनारायण प्रसाद यादव,जयशंकर परवाना, सुबोध चन्द्र झा तथा डॉ० योगेश कौशल ने अपने-अपने ढंग से देश में तेजी से पनप रही कुप्रवृतियों पर प्रहार किया। अर्जुन प्र० यादव ने आगत कवियों का स्वागत करते हुए हर वर्ष यहाँ साहित्यिक मेला लगाने का आयोजन करने का वायदा किया।

प्रस्तुति: योगेश कौशल, भागलपुर -813206

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, इसे आगे बढ़ाने से ही देश की उन्नति संभव है।

हिन्दी के नाम पर पटना में बना हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन लूट-खसोट का अड्डा

विचार प्रतिनिधि, पटना

भारत के पूर्व राष्ट्रपति **डॉ० राजेन्द्र प्रसाद** के सद्प्रयास से पटना के कदमकुआँ में हिन्दी साहित्य के सम्पूर्ण विकास के लिए निर्मित **बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन** आज गुटबाजी और घपलेबाजों के कारण अपने मूल उद्देश्यों से भटककर लूट-खसोट का अड्डा बन गया है। 1938 में जिस सम्मेलन भवन का शिलान्यास जाने माने साहित्यकार **छविनाथ पाण्डेय** द्वारा और 1951 में समारम्भ **रामवृक्ष बेनीपुरी** ने किया और जहाँ महादेवी वर्मा, बेनीपुरी, आचार्य जानकी बल्लभ शास्त्री, दिनकर से लेकर आधुनिकतम साहित्यकारों ने अपनी बौद्धिक यात्रा कर अपने काव्य-पाठ से गरिमा प्रदान की वहीं इन दिनों तथाकथित साहित्यकार जोड़ी-बदल-बदलकर साहित्यिक एवं समाज के प्रबुद्ध जनों को मूर्ख बनाने में लगे हैं। अपनी गौरवशाली अतीत लिए अनूठी पहचान बनाने वाला यह सम्मेलन अब मुख्य रूप से वैवाहिक स्थल, पार्टी या फिर कपड़ों की सेल के रूप में ही जाना जाने लगा है। एक खास जाति के लोगों ने साहित्य का लबादा ओढ़कर अपनी जागीर समझ इसे घपलेबाजों, दलालों एवं असामाजिक तत्वों का रैन बसेरा बना डाला है। वरिष्ठ साहित्यकारों का मानना है कि **आचार्य नलिन विलोचन शर्मा** के देहावसान के साथ ही इस हिन्दी साहित्य सम्मेलन का भी देहावसान हो गया। इस संस्थान को अब हिन्दी विकास एवं प्रचार से अब दूर-दूर का रिश्ता नहीं रहा। बल्कि सच तो यह है कि समय-समय पर नगर के साहित्यिक संगठनों को छोटी-मोटी काव्य गोष्ठी के आयोजन की अनुमति प्रदान कर आम नागरिकों तथा साहित्यकारों की आँखों में धूल झोंकने का काम इसके अधिकारियों ने किया है। पाँच-सात स्थानीय कवियों के गप-शप को भी अखबारों में छपवाने का काम इन अधिकारियों ने किया ताकि आम नागरिक यह समझे कि इस संस्थान में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का काम चल रहा है। दरअसल इस सम्मेलन भवन को गैर-साहित्यिक, सांस्कृतिक आयोजनों का सिलसिला **आचार्य केसरी कुमार** के कार्यकाल से चला हलाँकि उन दिनों इसकी मर्यादा का ख्याल रखते हुए इसे इतना व्यावसायिक नहीं बनाया गया था। आज तो स्थिति यहाँ तक आ गयी है कि संस्थान के नियम-कानून को ताख पर रख गैर साहित्यिक एवं असामाजिक तत्वों को भी प्रवेश दिलाने के नाम पर सदस्यता अभियान भी काफी तेजी से चलाया गया। मकसद मात्र इतना ही था कि उनसे पैसा वसूल कर उनके मत का उपयोग पुन: पदाधिकारियों के चुनाव में किया जा सके। इन पदाधिकारियों ने दुकान बनाने के नाम पर राजधानी के व्यापारियों से लाखों रुपये वसूल किए।

इसके पूर्व भी यहाँ के पदाधिकारियों ने भवन की दुर्दशा दिखाकर कांग्रेस के नेता **स्व० सीताराम केसरी** से एक लाख पचास हजार, वर्तमान राजनयिक **कमला सिंह** से पच्चीस हजार, पूर्व सांसद **स्व० शंकर दयाल सिंह** से पच्चीस हजार, पूर्व प्रधान मंत्री **इन्द्रकुमार गुजराल** से पचहत्तर हजार तथा राज्य सरकार से तीन लाख रुपये की सहायता ली और उस राशि को वे हजम कर गए। आश्चर्य की बात तो यह है कि इसके अध्यक्ष भी इन पैसों की अगाही एवं दुरुपयोग की बात स्वीकार करते हैं। वर्तमान अध्यक्ष वयोवृद्ध सहित्यकार **रामदयाल पाण्डेय** भी स्वयं सवाल उठाते हैं कि यहाँ के कर्मचारियों को वर्षों से वेतन नहीं मिला, नगर निगम का बकाया, टेलीफोन व बिजली बिल का भुगतान न करने की वजह से कनेक्शन कटा, तो आखिर किस मद में खर्च किए गए इतने रुपये? सही माने में पदाधिकारियों ने इस भवन के उद्धार के बारे में कभी नहीं सोचा। इनकी आँखें इसे कामधेनु के रूप में निरन्तर दूहने की रही है।

ऐसा भी नहीं कि नगर के विभिन्न साहित्यिक-सांस्कृतिक संगठन के लोग तथा अन्य साहित्यकार इस भवन के जीर्णोद्धार तथा इसके उद्देश्यों को मूर्त रूप देने के लिए आगे नहीं आए किन्तु उन्हें भी कुछ चटाकर उनका मुह बन्द कर दिया जाता रहा। कहा जाता है कि बिहार सरकार के कुछ पूर्व मंत्री तथा विधायक भी सम्मेलन के पदाधिकारियों से उनकी कवच बनने के एवज में उनसे समय-समय पर कुछ दूहते रहे। इस बीच सम्मेलन के नए अध्यक्ष रामदयाल पाण्डेय के नेतृत्व में कदमकुआँ थाने में इस सन्दर्भ में पदाधिकारियों तथा साहित्यकारों के एकदल ने शिकायत दर्ज करा दी है। कहा जाता है कि पिछले एक दशक से सम्मेलन के करीब 50 लाख रुपये के घपले की बात यहाँ के साहित्यकारों के बीच चर्चा का विषय बना है।

डॉ० राम निवास 'मानव' के सम्मान में संगोष्ठी

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार तथा सी०आर०एम० जाट स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा) के हिन्दी विभागाध्यक्ष के सम्मान में भागलपुर में आयोजित संगोष्ठी में डॉ० 'मानव' के व्यक्तित्व व कृतित्व पर चर्चा करते हुए डॉ० अजीत कुमार वर्मा ने कहा कि उन्होंने हरियाणा के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य को अपने साहित्य में उकेरा है। उनकी विद्वता में उनके संस्कार के दर्शन होते हैं। इस अवसर पर तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० तपेश्वर नाथ ने कहा कि डॉ० 'मानव' हिन्दी साहित्य प्रबन्ध काव्य विधा के अधिकारी विद्वान हैं। इनके "हरियाणा के हिन्दी-महाकाव्य" जैसे शोधकार्य में काव्य शास्त्रीय चिन्तन और दर्शन को भाषा मिली है। संगोष्ठी के अध्यक्ष डॉ० तेजनारायण कुशवाहा ने इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए हरियाणा स्थित कुरूक्षेत्र के महाभारत युद्ध में अंगदेश की भूमिका का उल्लेख किया।

संगोष्ठी के दूसरे चरण में आयोजित कविगोष्ठी में डॉ० तपेश्वर नाथ, प्रो० मुख्तार आलम, डॉ० रामनिवास मानव' डॉ० तेज नारायण कुशवाहा, परशुराम ठाकुर ब्रहमवादी तथा डॉ० योगेश कौशल ने उपस्थित सुधीश्रेताओं को काव्य-सुधारस का पान कराया। मंच-संचालन डॉ० आमोद कुमार मिश्र ने किया।

प्रस्तुति: डॉ० योगेश कौशल, भागलपुर

शब्दों के कठघरे में खड़े बेकसूर मुजरिम से एक जिरह

वंशीधर की कविताओं पर प्रतिकिया

❑ नचिकेता

एजरा पाउण्ड के लिए कविता सिर्फ एक स्थाई खबर हो सकती है, लेकिन कविता केवल स्थायी या अस्थाई खबर भर नहीं है। यह सच है कि जानकारियां या सूचनाएं देने वाले दूसरे तमाम माध्यमों की भांति ही कविता भी अपने समय की गवाही देना चाहती है, परन्तु इस गवाही में फकत तथ्यों का इकट्ठा कर लेना भर शामिल नहीं है। कविता, दरअसल, मानव-सभ्यता की सबसे विकसित संवेदना, ऐंद्रियता, अनुभूतियों और सांस्कृतिक चेतना का सर्वोतम निचोड़ है। महज अपने हालात की एक साफ समझ, अपने ऐतिहासिक विकास की एक खास तारीख में होनेवाला बोध, रोजमर्रे के जीवन में घटित होनेवाले असंख्य सूक्ष्म सन्दर्भों का अहसास और वास्तिविक की अन्तश्चेतना का एक अत्यंत ही संवेदनशील और प्रभविष्णु रूपांकन नहीं। कुछ ऐसी ही शंका कभी **धूमिल** के मन में भी उद्‌भूत हुई थी, जिसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा था कि **"कविता क्या है?/कोई पहनावा है?/कुर्ता-पजामा है?/ना, भाई ना/कविता/शब्दों की अदालत में/मुजरिम के कठघरे में खड़े बेकसूर आदमी का/हलफनामा है/क्या यह व्यक्तित्व बनाने की/खाने-कमाने की/ चीज है?/ना, भाई, ना/कविता/भाषा में आदमी होने की तमीज है।"**

'मुजरिम के कठघरे मे खड़े बेकसूर आदमी का हलफनामा' और 'भाषा में आदमी होने की तमीज' का दावा पेश करनेवाली समकालीन कविता प्रथम दृष्टि में ही अपने अधुनातन स्वरूप, रूपाकार और ढांचा-ढब के कारण विजातीय कविता का प्रतिरूप दिखलाई देती है। दर हकीकत भारत की जातीय कविता की परम्परागत पहचान लय-छंदयुक्त तुकांत कविता की है। मानता हूं कि पुनरुत्थानवाद और उपभोक्तावादी बाजारवाद की छाया-तले विकसित आज की नयी सभ्यता और प्रदूषित अपसंस्कृति ने सारी मानवीय संवेदनाओं, समाज के काव्यात्मक संबंधों और लयात्मक जीवन-पद्धतियों की चूलें हिला दी हैं। मगर वहीं यह भी सच है कि भारतीय समाज में तमाम गतिरोधों, आंतरिक बिखरावों और अंतर्विरोधों के बाद भी सामूहिक परिवार और काव्यात्मक सामाजिक रिश्तों की सकारात्मक अवधारणा और संभावना नि:शेष नहीं हो गयी है तथा तमाम यांत्रिकता, जटिलता, मौकापरस्ती, अलगाववादी सांप्रदायिकता और जातिवादी नकारात्मक जीवन-मूल्यों की गिरफ्त में आ जाने के उपरांत भी भारत का अधिसंख्य सामाजिक जीवन पूंजीवादी व्यक्तिवाद के चंगुल में फंसकर नितांत अमानवीय नहीं हो गया है। तात्पर्य है कि जब तक इन सारी अमानवीय कुरीतियों का आज का संपूर्ण भारतीय जन-मानस पूरी तरह गुलाम नहीं हो जाता, उसके जेहन में, संस्कार और परम्परागत विश्वास में लय-छंद युक्त तुकांत कविताएं ही जातीय कविता के रूप में अंकित और विद्यमान रहेंगी। सामाजिक विकास की वर्तमान गति को देखते हुए यह मान लेने में ज्यादा हर्ज नहीं है कि यह स्थिति अभी हजारों वर्षों तक बरकरार रहेगी।

जैसे आज के उत्तर आधुनिक पूंजीवाद के यहां विचारों के अंत की घोषणा का मतलब केवल मार्क्सवादी विचारधारा का अंत है। यह बात दीगर है कि वह तमाम समूहवाची सामूहिक प्रत्ययों को विश्वस्त, भूमण्डलीकरण, भूमंडीकरण आदि प्रत्ययों में रूपांतरित अपने शोषण-तंत्र को और अधिक धारदार,पैना, खूखांर, निरंकुश और मानव-विरोधी बनाने में कामयाब हो रहा है, ठीक वैसे ही अपनी इस पूंजीवादी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अत्याधुनिक और सर्वोत्तम रूप कविता के वर्तमान स्वरूप और संरचना में लय, छंद और संगीत को अति सूक्ष्म और अमूर्त बनाकर प्रस्तुत कर रहा है जिससे,इसकी धार कुंद हो गयी है। इसे स्मृति-विमुख अर्थ की लय, बिम्ब और प्रतीकों की लय आदि अति सूक्ष्म और अमूर्त संज्ञाओं को स्वीकारने मे कोई दिक्कत नहीं है, सिर्फ जन-साधारण की स्मृतियों में सुरक्षित और रची-बसी छांदसिक लय जिसे ये लोग स्थूल लय कहते हैं, से परहेज या घृणा है। 'आधुनिक कला अलोकप्रिय और सीमित वर्ग की कला होती है' जैसी जनविरोधी अवधारणा की ही संपुष्टि इस लय की सूक्ष्म और अमूर्त पहचान के छद्म में दृष्टिगोचर नहीं होती क्या? इसका खामियाजा समकालीन गद्य कविता को भुगतान पड़ रहा है। आज इसके पाठकों का दायरा सिकुड़ते कवियों,आलोचकों और मुट्ठी भर परजीवी बुद्धिजीवियों एवं अतिविशिष्ट तबकों तक सिमट गयी है। जिन लोगों को छंद अब अतीत की वस्तु दृष्टिगत होता है,उनके लिए व्यापक जन-समुदाय में कविता का लोकप्रिय होना एक स्वप्नशील मृगतृष्णा या छलना ही रहेगा।

युवा कवि **संजय कुन्दन** के शब्दों में **"यह समझदार लोगों का दौर है/यह चालक कवियों का दौर है/काश! इस दौर के बारे में/ मैं एक सटीक कहावत कह सकता।"** जगजाहिर है कि सटीक कहावतें बहुसंख्यक श्रमजीवी जनता के कठिन जीवन संघर्ष की सामूहिक चेतना के सीधा साक्षात्कार से उत्पन्न होती हैं, जिनमें संघर्षशील मेहनतकश अवाम के व्यापक जीवनानुभव का सारतत्व संचित रहता है। आज की कविता की सबसे बड़ी विडम्बना यही है कि वह अब व्यापक जनसाधारण से आत्मीय लगाव और नाभिनालबद्ध जुड़ाव महसूस करने में असमर्थ हो गयी है। इसलिए सटीक कहावतें वह हरगिज नहीं कह सकती। बहरहाल,आज के समझदार, चालाक, शातिर और गोटीबाज समकालीन कवियों की आत्मविमुग्ध जमात में **वंशीधर सिंह** जैसे भावुक,सरलचित्त और निश्छल कवि का प्रवेश कितना स्वागतेय होगा,यह भविष्य के गर्भ में है। कहावत है कि **होनहार विरवान के होत चीकने पात। वंशीधर सिंह** के काव्य-वृक्ष के पात चिकने हैं या भंगुराये हुए-इसका फैसला इन्हीं समझदार और चालाक कवियों को करना है' जिसकी दुनिया में घुसपैठ करने के निमित्त वंशीधर सिंह कटिबद्ध और बेताब हैं। मुझे विश्वास है कि उनका इस वर्जित प्रदेश में आगमन एक छोटी-सी ही सही, मगर हलचल जरूर मचायेगा।

परमानंद श्रीवास्तव की राय में तात्कालिक महत्व की कविता अच्छी कविता हो सकती है,महान नहीं। गरज कि महान कविताएं शाश्वत होती

हैं,तात्कालिक नहीं। **"सच्ची महत्वपूर्ण कविता जीवन-वास्तव से मुठभेड़ भर नहीं चाहती। वह जीवन में छिपे गोपन अज्ञात रहस्यमय का पूरा स्वाद चाहती है।"** तात्कालिक महत्व की कविता सामाजिक ज़ीवन के तात्कालिक संघर्ष वर्ष के जीवंत अनुभवों के आभ्यंतरी करण का परिणाम होती है। **नागार्जुन** की अधिकांश कविताएं तात्कालिक महत्व की महत्वपूर्ण कविताएं हैं। **परमानंद श्रीवास्तव** की निष्पत्ति नागार्जुन से टकराते ही चकनाचूर होकर बिखर जाती है। नतीजतन उन्हें स्वीकार करना पड़ता है कि नागार्जुन की अनेक कविताएं तात्कालिकता में धंसी कविताएं है। उन्ही में कई कालजयी कविताएं हैं। तात्कालिकता कविता की सीमा नहीं ताकत भी है,यह नागार्जुन की कविता हमें दिखाती है। बर्तोल्त बेख्त मानते हैं कि यथार्थ बदलता है तो अभिव्यक्ति के तरीके भी बदलते हैं। नागार्जुन ने बेलछी में हुई हरिजनों को जिंदा जला देनेवाली अमानुषिक घटना को केन्द्र में रख कर 'हरिजन-दहन' जैसी तात्कालिक महत्व की कालजयी कविता लिखी है। वंशीधर सिंह ने भी अपने समय की लहूलुहान हकीकत को पहचान पकड़कर यानी बिहार में हो रहे भूमिहीन किसानों और मजदूरों के अमानुषिक और नृशंस सामूहिक नरसंहार को आधार बनाकर 'जहानाबाद' जैसी अत्यंत ही मार्मिक और संवेदनशील कविता की रचना में सफलता पायी है। तात्कालिक महत्व की यह एक सार्थक, प्रभावशाली, सशक्त और महत्वपूर्ण कविता है। कोई ताज्जुब नहीं होगा, अगर यह कविता कालाकांतर में 'हरिजन-दहन' जैसी ही कालजयी कृति होने का गौरव प्राप्त कर ले।

कविता और राजनीति के अंतर्सम्बन्ध को लेकर आजकल काफी बहस चलायी जा रही है। राजनीतिक कविताएं लिखना यानी कविता के माध्यम से एक रचनात्मक विकल्प की तलाश करना हर कवि के लिए एक जोखिमभरी चुनौती होता है। क्योंकि निर्विकल्प विरोध की राजनीति जिस तरह राजनीतिक जीवन में अराजकता को जन्म देती है, उसी प्रकार कविता की बनावट को भी अराजकतापूर्ण बना देती है, वंशीधर सिंह इस खतरनाक चुनौती को अनुभूति के स्तर पर बड़ी संजीदगी से स्वीकार करते हैं और कई महत्वपूर्ण राजनीतिक कविताएं लिखने में सफल होते हैं। **'जुलूस'** वंशीधर सिंह की राजनीतिक कविता में एक अत्यंत ही प्रखर राजनीतिक बोध है। पर सिर्फ अवधारणा के स्तर पर नहीं, प्रत्युत जीवन के छोटे-छोटे, सूक्ष्म मानवीय अनुभवों और मार्मिक स्थितियों के स्तर पर भी। इसलिए इस कविता में गहरी हार्दिकता है। घर-परिवार और पास-पड़ोस की जिस दुनिया से कवि हमारा साक्षात्कार कराता है, उसमें केवल रोजमरे के जीवनानुभवों की राजनीतिक संस्कृति के वर्तमान स्वरूप का ही उद्घाटन नहीं होता,अपितु यथास्थिति को तोड़कर एक नितांत नयी और मानवीय अुनिया रचने के दीर्घकालीन संघर्ष का उद्घोष और प्रक्रिया का भी दर्शन होता है। **'कविता का अर्थात'** गढ़ते हुए परमानंद श्रीवास्तव इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि बड़े कवि इसलिए भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं कि उनकी स्मृतियां आगे की कविता में तथा पाठकों के मन में देर तक जीवित हों -जिस तरह एक युवा कवि की क्षमता इसमें आंकी जाती है कि उसमें पहले की स्मृतियां सहज ही रची-बसी हों। वंशीधर सिंह की 'जुलूस'कविता के भीतर से गुजरते समय अगर पाठक को 'अंधेरे में', 'एक सूरज मां के लिए', 'जंगलगाथ', 'जनता का आदमी' आदि की स्मृतियों से होकर गुजरने को मजबूर होना पड़े तो कोई हैरत की बात नहीं होगी।

शमशेर बहादुर सिंह की प्रसिद्ध अक्ति है कि मां जब होती है,जब बच्चे को दूध पिला रही होती है तो वह वात्सल्यमयी मां होती है, जब वह पिता के साथ घर की समस्याओं पर बात कर रही होती है तो वह गृहिणी होती है, जब वह प्रेमालाप कर रही होती है तो प्रेयसी होती है, बाहर वह डाक्टर होती है। तो वह समाज-सुधारक होती है। ठीक इसी प्रकार कविता है। कविता केवल राजनीति से ही संयुक्त हो, केवल धर्म से ही संयुक्त होगी । उसमें धर्म, राजनीति, दर्शन, प्रेम,क्रांति -सभी कुछ आ जाता है। वह बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। वंशीधर सिंह ने अपने छोटे-से रचना-संसार में जिस रंग-विरंगी दुनिया का सृजन और समायोजन किया है, वह विविधवर्णी, विविध गंधी और विविध स्वादोंवाली है। प्रेम,प्रकृति और सौन्दर्य के कई अनावृत चित्र उनकी सजग रचना-दृष्टि की व्यापकता की चुगली खाते प्रतीत होते हैं। **शरद चांदनी, जलहंस, नदी, उषाके आंगन में, बाढ़, पत्थर, चिड़िया का दर्द** आदि कविताओं की अंतर्यात्रा करके इस तथ्य की सचाई की बानगी ली जा सकती है। वह अगर मौजूदा भारतीय समाज के सामंती ढाचां के टूटने, उसी की कब्र पर पूजींवादी अर्थ-व्यवस्था को बदलकर मानवीय समाज-व्यवस्था की निर्माण-प्रक्रिया की प्रतीकात्मक कहानी 'घोड़े' कविता में कहते हैं, तो आज के उत्तर आधुनिक स्त्री-विमर्श का **'कल्याणी** और **'लड़की'** जैसी कविताओं में तात्विक मीमांसा करते हैं। इस प्रकार वंशीधर सिंह अपनी विविधवर्णी रचनात्मकता के फलक-विस्तार का, सामाजिक सरोकार का सबाक परिचय देते हैं।

इन तमाम सकारात्मक उपलब्धियों के बावजूद वंशीधर सिंह की कविताओं का आंतरिक संघटन छीहर है, उनकी रचनाओं की वैचारिक अंतर्वस्तु और प्रभावी अंतर्वस्तु की द्वन्द्वात्मक एकता में गहरी फांक है। अपनी रचना की इमारत खड़ी करने की खतिर ईटों को वह जिस गिलेवा से जोड़ते हैं, वह अपर्याप्त दृष्टिगोचर होती है, जिससे दो ईटों के बीच में दरार-सी रिक्ति रह जाती है। उन्हें इस सत्य का अहसास शिद्दत के साथ होना चाहिए कि एक प्रौढ़ और प्रभावशाली रचना के लिए रूप और वस्तु में समानुपातिक समन्वय और सामंजस्य का महत्व उतना ज्यादा अहमियत रखता है, जितना विषय -वस्तु यानी कथ्य के चुनाव की अहमियत होती है। उम्मीद की जा सकती है और यह लाजिमी भी है कि वंशीधर सिंह से अगले पड़ाव पर जब मूलाकात होगी, तो वह अपने इन अंतर्विरोधों और खामियों पर काबू पा चूके होंगे। **लेनिन** की यह सलाह उनकी स्मृति में जरूर सुरक्षित होगी कि **"जो बात व्यकितयों पर लागू होती है, वही बात जरूरी संशोधनों के साथ राजनीति और पाटियों पर भी लागू होती है। बुद्धिमान वह नहीं है, जो कभी गलती नहीं करता। ऐसे आदमी न कहीं हैं, न कहीं हो सकते हैं। बुद्धिमान वह है जो ज्यादा बड़ी गलतियां नहीं करता और जो उन गलतियों को आसानी से और जल्दी से ठीक करना जानता है।"**

सम्पर्कः- द्वारा-प्रेमचंद प्रसाद
पथ सं०-1,आजाद नगर,
कंकड़बाग, पटना-20

शहनाई सम्राट को 'भारत रत्न'

विचार कार्यालय, नई दिल्ली

भारतीय संगीत परम्परा के जीवंत प्रतीक शहनाई सम्राट विस्मिल्लाह खां को विगत 4 मई को राष्ट्रपति भवन में जब भारत के राष्ट्रपति ने देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया तो शायद वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति के कानों में शहनाई के वे शहद भरे स्वर अवश्य ही गूंज उठे होंगे, जो पिछले सात दशकों से निरन्तर हमारे मन-मस्तिष्क को अपने चमत्कारिक स्वर लहरियों की चादर में लपेटते रहे हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत के इस महान साधक के ओठों से लगी शहनाई जब गूंजती है तब न कोई हिन्दू रहता है,न काई मुसलमान या इसाई, वह मात्र इंसान भर रह जाता है, जिसने अपना ही कथन सिद्ध कर दिखाया है कि कलाकार जैसे-जैसे बूढ़ा होता है उसकी कला जवान होती जाती है। इस कथन का राज भी उन्हीं का जीवन आदर्श है-साधना।

बिहार में उमराव गांव में जन्में पर वर्षों से वाराणसी के इस महान उस्ताद के स्वर ने वाराणसी में गंगा की पावन लहरों से लेकर देश-विदेश के मंदिरों, मस्जिदों, राष्ट्रीय समारोहों और संगीत सम्मेलनों के श्रोताओं को अपने सम्मोहन में बांधा है। पारम्परिक संगीत के इस 85 वर्षीय ध्वजवाहक को भारत सरकार ने भारतरत्न से सम्मानित कर न केवल भारतीय संस्कृतिक चेतना को अक्षुण्ण रखा है बल्कि देश की मूल भावना का आदर किया है।

डॉ० कुमार विमल को सुब्रह्मण्यम भारती पुरस्कार

राष्ट्रपति **के० आर० नारायणन** ने हिन्दी साहित्य के शिखर चिंतक और आलोचक **डॉ० कुमार विमल** को हिन्दी के विकास से सम्बन्धित सृजनात्मक तथा आलोचनात्मक क्षेत्र में उल्लखनीय योगदान के लिए **सुब्रह्मण्यम भारती** पुरस्कार से विगत 15 जून को राष्ट्रपति भवन के भव्य पीत प्रशाल सभागार में एक लाख रुपये की राशि, प्रशस्ति पत्र और शाल प्रदान सम्मानित किया है। इस अवसर पर चीन के पेइचिंग विश्वविद्यालय के **प्रो० जिन हिंग हान** को डॉ० जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। डॉ० विमल तथा प्रो० हान को **विचार दृष्टि** परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

-विचार दृष्टि कार्यालय, पटना से

सरोद वादक अमजद अली

अमेरिका में सम्मानित

भारत के विश्व प्रसिद्ध सरोद वादक अमजद अली खान को अमेरिका स्थित **एसोसिएशन ऑफ इन्डियन्स** ने भारत-अमेरिका के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध मजबूत करने के उनके प्रयासों के लिए एक विशेष प्रकार से सम्मानित किया है।

भारत के मदानी को आर्डर ऑफ कनाडा

भारतीय मूल के नागरिक **बहादुर मदानी** को कनाडा का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार **आर्डर ऑफ कनाडा** प्रदान किया गया है।

छोटी उम्र का तथागत 'भारत की शान' से सम्मानित

❑ **रजनीकान्त**

सबसे कम उम्र में मैट्रीक, स्नातक तथा स्नातकोत्तर की परीक्षा में उतीर्ण होकर रिकर्ड बनाने वाले बिहार के विलक्षण प्रतिभा के धनी **तथागत अवतार तुलसी** को भारत सरकार के विज्ञान और प्राधौगिकी मंत्रालय ने 24 से 28 जून तक जर्मनी के लिनडो में आयोजित नोबेल पुरस्कार विजेताओं की बौठक में सत्रह अन्य भौतिक विदों के साथ भारत का प्रतिनिधित्व करने का निमंत्रण दिया। तथागत ने मात्र तेरह साल तीन महीने की उम्र मे ही **'नेशनल एलिज-बिलिटी टेस्ट'** नेट भी पास की है तथा अब वे लेक्चरर के लिए आवेदन करेंगे। फिलहाल उनका उद्देश्य **एक्सपेरीमेन्टल सालिड स्टेट फिजिक्स** के क्षेत्र में अनुसन्धान करने का है और वह भारत एवं विदेशों में इसकी सम्भावनाओं का पता लागाएंगे।

नई दिल्ली में आयोजित विश्व ज्योतिष सम्मेलन में भाग ले रहे **तथागत** को **भारत की शान** पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इससे पूर्व इस पुरस्कार से पूर्व राज्यपाल बी०सत्य नारायण रेड्डी भी सम्मानित हो चुके हैं।

बिहार वन्डर ब्वाय तथागत ने मात्र ग्यारह वर्ष दस महीने की उम्र में पटना विश्वविद्यालय के भौतिकी में स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण होकर तथा **गिनीज बुक ऑफ द वर्ल्ड रिकर्डस** में अपना नाम दर्ज कराकर न सिर्फ भारत में बल्कि पूरी दुनिया के शिक्षा जगत में तहलका मचा दिया था। इसके पूर्व इसने 9 वर्ष 6 महीने में मैट्रिक की परीक्षा पासकर पहला कीर्तिमान बनाया था। इसके बाद तथागत ने 10 वर्ष 6 महीने में भौतिकी में प्रतिष्ठा के साथ स्नातक की परीक्षा उतीर्ण कर दूसरा विश्व कीर्तिमान स्थापित किया था।

साम्प्रदायिक सद्भाव की अनूठी मिसाल प्रस्तुत करती मर्मस्पर्शी कहानी

मजहब नहीं सिखाता.......

❑ कृष्ण कुमार राय

एक जमाने से वैधव्य का भार रही सरोज पर उस समय सहसा वज्रपात हो गया जब पिछले दिनों नगर में भड़की साम्प्रदायिक हिंसा की एकमात्र निशानी मातृहीन पौत्र शरद को दामन में समेटे, घोर मानसिक अवसाद की स्थिति में भी वह किन मुसीबतों के साथ अपनी ममता के छाँव में पाल पोस रही थी, यह उसी का कलेजा जानता था। हर गुजरते दिन उसकी जिन्दगी को बोझिल बनाते जा रहे थे। एक रात सहसा उसकी उद्विग्नता इतनी बढ़ गयी कि वह अपना धैर्य और विवेक खो बैठी। प्यारे शरद के भाग्य और भविष्य की चिन्ता त्यागकर, उसे अकेला सोता छोड़, वह आत्मघात के इरादे से घर से बाहर निकलने को आगे बढ़ी, लेकिन दहलीज लाँघते ही उसका सोया हुआ अन्तर्बोध जाग उठा। उसकी अपनी ही अन्तर्ध्वनि मानो वेदवाणी के रूप में कानों में गूँज उठी-'एक असहाय अबोध बालक को इस तरह बेसहारा छोड़कर कहाँ जा रही हो सरोज! दूध पीता छोड़कर अभागे की माँ सुरलोक सिधार गई। बाप बेचारा साम्प्रदायिक दंगे में मारा गया। अब तुम भी इस तरह अपनी जिम्मेदारी से मुँह मोड़कर आत्महत्या जैसे कायरतापूर्ण कुकृत्य पर उतारू हो जाओगी तो इस अनाथ बच्चे को सहारा देने वाला दुनिया में कौन रह जायेगा?'

यदि सौंदर्य में मने को निचोड़ लेने की शक्ति है तो प्यार में जीवन को मोड़ देने की क्षमता। प्रेम की शक्ति दण्ड की शक्ति से हजार गुना अधिक प्रभावशाली और स्थायी होती है। जिस खूँख्वार अपराधी को कठोर से कठोर यातना या दण्ड भी विचलित नहीं कर पाता वह प्रेम के आगे पलभर में झुक जाता है।

घर से बाहर निकले सरोज के डगमगाते कदम सहसा रुक गये। वह उल्टे पैरों अन्दर लौट आयी और जाकर प्यारे शरद को कलेजे से लगाकर उसके पास लेट गयी। इस हलचल से नन्हा शरद चौंक उठा। कमरे में अन्धकार छाया हुआ था। अपनी तोतली बोली में उसने दादी-अम्मा को आवाज दी, लेकिन हाथों से टटोलने पर जब वह आश्वस्त हो गया कि दादी-माँ उसके पास ही सोई हुई है तो जल्दी से उसके आँचल में समाकर दुबक गया। उनींदे शरद को तो पलभर में ही नींद ने फिर धर दबोचा, लेकिन सरोज की आँखों में नींद कहाँ। मानसिक उद्वेलन की स्थिति में वह चुपचाप खाट पर पड़ी विचारों के भँवर में फँसी डूबती-उतराती रही। उसी समय किसी ने सहसा घर के बाहरी दरवाजे की साँकल खटखटायी। इतनी रात गये उस दुखियारी के दरवाजे पर किसने दस्तक दी, यह सोचकर वह चौंकी तो जरूर, लेकिन सर्वस्व लुट जाने के बाद से उसके मन से मानों डर-भय

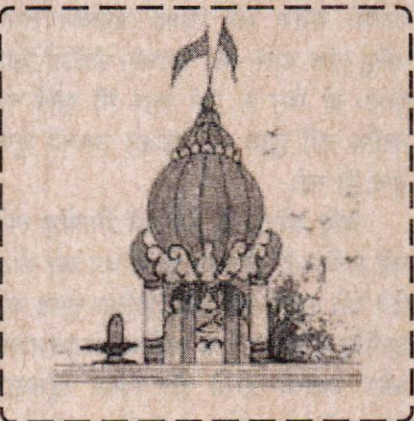

मिट चुका था। उसने बरामदे में जाकर टिमटिमाती हुई लालटेन की लौ को थोड़ा उसकाया। उसका मद्धिम पीत प्रकाश आँगन तक पसर गया। दरवाजे के समीप जाकर उसने पलभर ठिठक कर आहट ली और फिर बिना आगा-पीछा सोचे दरवाजा खोल दिया। सामने उसने एक अपरिचित नौजवान को बदहवासी की हालत में खड़ा काँपते देखा। आगन्तुक के चेहरे से दीनता टपक रही थी और आँखों में भय समाया हुआ था। सरोज ने दयार्द्र स्वर में पूछा, "तुम कौन हो बेटा? इस तरह डरे-सहमे और परेशान क्यों हो?"

"एक बेसहारा, मुसीबत का मारा इन्सान हूँ माँ। कई दिनों से न कुछ खाने को मिला है और न सोने की जगह। दर-दर की ठोकरें खाता फिर रहा हूँ। मुझे भी अपना बेटा समझ कर कुछ खिला दो माँ। बड़ा सवाब मिलेगा।"

सरोज का कोमल कलेजा पसीज उठा। युवक को अंदर बुला लिया और दरवाजे की साँकल चढ़ाकर उसे आँगन में लिटा आई। वहाँ पड़ी एक मचिया पर उसे बैठने का इशारा करते हुए वह बोली,"घबराओ नहीं बेटा तुमको यहाँ डरने की जरूरत नहीं। मैं अभी कुछ खाने को लाती हूँ।"

रात की दो मोटी-मोटी रोटियाँ बची थीं। एक थाली में अचार के टुकड़े और गुड़ की दो पिंडियों के साथ उसे रखा और एक लोटा पानी सहित लाकर युवक के सामने रख दिया। इतनी ही देर में युवक को घर का वातावरण देखकर यह आभास हो चुका था कि वह गलती से एक हिन्दू परिवार के बीच आ गया है, लेकिन सरोज के दयाभाव के कारण वह अधिक भयभीत नहीं हुआ। फिर भी उसने सकुचाते हुए दबी जबान से कहा, "मैं मुसलमान हूँ माँ। मेरा हाथ लगने से बर्तन नापाक हो जायेंगे। रोटियाँ मेरे हाथ पर दे दो, मैं खा लूँगा।"

"तुम,मुसलमान हो!" चौंककर सरोज ने विस्फरित नेत्रों से युवक पर एक नजर डाली, लेकिन दूसरे ही पल अपने को सामान्य स्थिति में लाते हुए बोली,"तो क्या

हुआ बेटा। तुमने मुझे माँ कहकर पुकारा है और मैंने तुम्हें ठाँव दी है। घर आया मेहमान भगवान के समान होता है। उसका सत्कार करना हमारा धर्म है। तु बेफिक्र होकर खाओ और यहीं आराम करो। इतनी रात को अब कहाँ जाओगे?"

सरोज के इस निश्छल प्रेमपूर्ण व्यवहार से युवक अभिभूत हो उठा उसने रोटी तोड़ते हुए पूछा,"माँ, घर बड़ा सूना-सूना सा लग रहा है। कोई और नहीं है क्या?"

"बस यही नन्हा सा लाल है, मेरे इकलौते बेटे की अकेली जीती-जागती निशानी।" खाट पर सो रहे बच्चे की तरफ इशारा करते हुए सरोज ने कहा। फिर एक गहरी उसाँस के साथ आगे बोली,"इसके अलावा मेरा सबकुछ लुट चुका है बेटा। पिछले दिनों के दंगे में मेरा बेटा मार डाला गया। लोगों ने भागते हुए हत्यारे रहमत का पीछा भी किया, लेकिन वह छुरा चमकाता हुआ भाग निकला। आज तक वह कातिल सबकी आँखों में धूल झोंककर फरार है। मैं तो बस इसी पोते की खातिर जिन्दा हूँ बेटा, वरना मेरे लिए तो अब दुनिया सूनी हो चुकी है।"

सरोज की आपबीती सुनते ही युवक के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। इसकी स्थिति सहसा असामान्य होने लगी। भय मिश्रित विस्मय की रेखाएँ उसके माथे पर स्पष्ट झलकने लगीं और हाथ खुद-बखुद रुक गये। उसे इस तरह परेशान और असमंजस की स्थिति में देखकर सरोज को यह समझते देर न लगी कि मुसलमान होने के नाते एक मुसलिम हत्यारे द्वारा इसके इकलौते बेटे की हत्या की बात सुनकर शायद वह भयवश असामान्य हो उठा है। भयभीत युवक को आश्वस्त करने के लिए उसने तत्काल पलट कर कहना शुरू किया,"तुम क्यों चिन्तित हो बेटा? मन से सारा डर-भय निकालकर आराम से खाना खाओ। सच पूछो तो मेरे बेटे का कातिल वह जालिम मुसलमान नहीं हैवान था जिसकी न कोई जाति होती है और न धर्म। कौन सच्चा मुसलमान भला इस तरह का वहशियानापन कर सकता है? क्या कोई मजहब बेगुनाहों का खून करना सिखाता है? क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, सब एक ही खुदा के तो बन्दे हैं। एक ही ईश्वर के बनाये हुए हैं, भले ही हम उसे अलग-अलग नामों से पुकारते हों। मंजिल सबकी एक है, भले ही हमारे वहाँ तक पहुँचने के रास्ते जुदा हों। सभी के खून का रंग एक होता हे, चमड़ी भले ही काली या गोरी हो। फिर हमारे बीच भेद-भाव और दुराव कैसा? हमारा पहला धर्म तो इंसानियत है, बाद को कुछ और। इंसान धर्म और मजहब से ऊपर होता है बेटा। मजहब की दीवारें तो खुद उसने अपनी खुदगरजी के लिए खड़ी की हैं। इस वक्त तुम मेरे मेहमान हो। मैंने तुम्हें हिन्दू या मुसलमान के नाते नहीं, एक मुसीबतजद इन्सान समझकर पनाह दी है। घर में जो कुछ रूखा-सूखा मौजूद था, मौंने तुम्हारे सामने पेश कर दिया। तुम इतमीनान के साथ खाओं और यहीं आराम करो।"

माधुर्य और स्नेह से सराबोर सरोज की वाणी और भाव-भीनी बातों ने युवक पर मानो जादू फेर दिया। उसकी आँखें भर आयीं। सरोज की निगाहें बचाकर उसने आँसू पोंछ डाले और चुपचाप रोटियाँ खाने लगा। दो दिन से उसे कुछ भी खाने को नसीब नहीं हुआ था। खाकर उसकी क्षुधा तृप्त हो गई।

यदि सौंदर्य में मने को निचोड़ लेने की शक्ति है तो प्यार में जीवन को मोड़ देने की क्षमता। प्रेम की शक्ति दण्ड की शाक्ति से हजार गुना अधिक प्रभावशाली और स्थायी होती है। जिस खूँख्वार अपराधी को कठोर से कठोर यातना या दण्ड भी विचलित नहीं कर पाता वह प्रेम के आगे पलभर में झुक जाता है। युवक बड़ी देर तक अन्तर्मथन की स्थिति में पड़ा सोने की कोशिश करता रहा, लेकिन नींद नहीं आयी। आखिरकार निस्तब्ध रात्रि के तीसरे पहर में, जब चारों तरफ गहन अन्धकार का अखण्ड साम्राज्य छाया हुआ था,वह उठ बैठा। सरोज की आत्मीयता, मातृ-तुल्य वात्सल्य और सर्व-धर्म समभाव की अभिव्यक्ति ने उसके अन्तस को झकझोर दिया था। उसकी अंतर्ज्योति जगमगा उठी। उसके अपराधी जीवन ने आज अचानक एक नया मोड़ लिया। पापों से भरे अपने अतीत और पाशविक हिंसक वृत्ति की याद करके अनायास ही उसे रोना आ गया। कमर में छुपाकर रखा अपना रक्त-रंजित खंजर निकालकर उसने हाथ में लिया और घृणा भरी नजरों से घूर-घूरकर उसे देखने लगा। इसी कटार के वार से उसने न जाने कितने बेगुनाहों का खून किया था। सहसा वह विक्षिप्त की भाँति उठा और उस जगह जा पहुँचा जहाँ सरोज अपने पौत्र को आँचल में समेटे सोई हुई थी। उसने धीरे से आवाज दी, "माँ, सो रही हो क्या?"

सरोज सकपका कर उठ बैठी। इतनी रात गये युवक को अपने सामने अपराधी की भाँति सिर झुकाये खड़ा देखकर पहले तो वह चौंकी, लेकिन फिर आत्म-विश्वास भरे स्वर में बोली," क्या बात है बेटा? अभी तक तुम सोये नहीं क्या?"

युवक ने सहसा आत्म- समर्पण की मुद्रा में अपना खंजर सरोज की तरफ बढ़ाते हुए कहा," माँ, मज़हबी जनून में गुमराह होकर, चन्द लोगों के इशारे पर, तुम्हारे बेगुनाह बेटे और वैसे ही न जाने कितने और बेगुनाहों का खून करने वाला खूँख्वार हैवान रहमत तुम्हारी आँखों के सामने इन्सान की खाल ओढ़े खड़ा है। पुलिस सरगर्मी के साथ उसकी तलाश कर रही है। लुकता-छिपता वह अपनी जान बचाता फिर रहा है। उसकी लाश पुलिस ने एक लाख रुपये का इनाम देने का एलान कर रखा है। यह अजीब संयोग है कि खुदा ने आज मुझे राम और सितम की मारी उसी माँ के सामने लाकर खड़ा कर दिया है जिसके इकलौते बेटे का कत्ल कर मैंने उसे निपूती बनाया है। मैं चाहता हूँ कि जिस माँ की गोद मैंने सूनी की है और जिस मासूम बच्चे को मैंने अनाथ बनाया है, उनकी जिन्दगी आँसू

बहाते और दर-दर की ठोकरें खाते न बीते। माँ को अपने बेटे और नन्हें बालक को अपने बाप के अभाव में सारी जिन्दगी मुसीबतों का पहाड़ न ढोना पड़े। खून से रँगा हुआ यह खंजर लो माँ और अपने बेटे के क्रूर हत्यारे को पुलिस के हवाले करके एक लाख रुपये का इनाम हासिल करो ताकि तुम्हारी और इस मासूम बच्चे की जिन्दगी सुख-चैन से गुजर सके और मुझ जैसे दरिन्दे को अपने गुनाहों की माकूल सजा मिल सके।"

इस आकस्मिक घटना-चक्र ने सरोज को बिल्कुल हतप्रभ कर दिया। कुछ देर तक वह भौचक्क सी खड़ी आँखें फाड़-फाड़कर रहमत की ओर घूरती रही, मानो अपने बेटे के निर्मम हत्यारे की तस्वीर अपनी आँखों में उतार लेना चाहती हो। फिर अचानक अप्रत्याशित ढंग से आगे बढ़कर उसने हत्यारे रहमत के हाथ से कटार लेकर एक तरफ फेंक दी और उसे गले से लगाती हुई बोली, "**बेटा रहमत, तुमने मुझे माँ कहकर मेरे सामने आत्म-समर्पण किया है, इसलिए तुम मेरे लिए पुत्र के समान हो। तुमने मेरे बेगुनाह बेटे की निर्मम हत्या की होगी, लेकिन उस जघन्य अपराध के लिए दंडित होकर फाँसी के तख्ते पर झूलने के लिए मैं तुम्हें कानून के हवाले करके माँ की ममता को कलंकित नहीं कर सकती।** एक लाख रुपये हासिल कर मुझे न तो मेरा बेटा वापस मिलेगा और न इस बच्चे को उसका बाप। मैं तो तुम्हीं को पुत्र के रूप में अंगीकार कर ज्यादा सुख और शान्ति का अनुभव करूँगी। मैं चाहती हूँ कि तुम जीवित रहकर इसी देह से अपने गुनाहों का प्रायश्चित करो। अब से सभी धर्मों का आदर करते हुए गुमराह लोगों के दिलों की कौमी एकता का अलख जगाने के लिए अपनी बाकी जिन्दगी समर्पित कर दो। यही तुम्हारे पिछले पापों और दुष्कृत्यों का सबसे बड़ा प्रायश्चित होगा।"

"तुम धन्य हो माँ। बेटे का बड़े से बड़ा गुनाह माँ के सिवाय भला और कौन माफ कर सकता है। तुमसे मुझे यही उम्मीद थी। आज से तुम मेरी सच्ची माँ बन चुकी हो। मैं सारी जिन्दगी तुम्हारी खिदमत और इस मासूम बच्चे की परवरिश करने की जिम्मेदारी तहेदिल से ओढ़ता हूँ। बचपन में माँ के दामन का साया उठ जाने से कुसंगत में पड़कर मैं गुमराह हो गया था माँ, आज तुमने मेरी आँखों का पर्दा हटा दिया है।" कहते-कहते रहमत रो पड़ा और उसकी हिचकियाँ बँध गई। आँखों से अश्रु-धार फूट पड़ी।

प्यार से पराभूत रहमत आज अपने दिल के जज्बात को उगलकर अपने दिल का सारा गुगार निकाल डालना चाहता था। उसने अवरुद्ध कण्ठ से कहना जारी रखा, "मैंने ख्वाब में भी यह नहीं सोचा था कि इतने सालों बाद मुझे फिर से एक ऐसी नेक दिल माँ की मुहब्बत और प्यार का सहारा मिल सकेगा जो मेरी जिन्दगी को एक नया मोड़ देगा। माँ का खोया हुआ प्यार वापस पाकर मैं आज खुशी से फूला नहीं समा रहा हूँ। अबतक मैं गुमराह होकर पाक कुरान की नसीहतों को नजरअंदाज करके अपनी वहशियाना हरकतों से इस्लाम को कलंकित करता रहा। मुल्क और कौम के चन्द खुदगर्ज दुश्मनों के इशारे पर मैं थोड़े से पैसों के लालच में बेगुनाह इन्सानों के खून से अपना हाथ रँगता रहा। लेकिन उस खूँरेजी के बदले आज मैंने तुमसे न सिर्फ नई जिन्दगी पाई है बल्कि तुम्हारे दामन के साये में पनाह पाकर मैं दिली सुकून महसूस कर रहा हूँ। तुम्हारी मुहब्बत के जज्बात ने मेरे दिलो-दिमाग को जीत लिया है। अब से तुम अपने को निपूती न समझना माँ और न इस अबोध बालक को बेसहारा समझना। तुम दोनों की ही खातिर अब मैं जिऊँगा और वक्त पड़ने पर अपनी जिन्दगी भी कुर्बान कर दूँगा। तुम्हारे कदमों की धूल माथे से लगाकर आज मैं खुदा की कसम खाकर यह अहद करता हूँ माँ कि अबतक जो हाथ बेगुनाहों का खून करने के लिए उठते थे, कल से बेसहारा, मुसीबतजद और जुल्मो-सितम के सताये लोगों की इमदाद और सहारे के लिए उठेंगे। या परवरदिगार, इस नेक काम में मेरी मदद करना और बराबर रोशनी दिखलाकर फिर गुमराह होने से बचाना। तुम भी दुआ दो माँ कि मैं अपना वादा ताजिन्दगी निभा सकूँ।"

सरोज ने उसकी पीठ थपथपा कर हौसला बढ़ाया और ढाढ़स बंधाते हुए बोली, "सुबह का भूला हुआ अगर शाम तक घर लौट आता है तो उसे भूला नहीं कहा जाता बेटा। अभी तुम्हारे सामने लम्बी जिन्दगी पड़ी है। तुमने सही वक्त पर सही फैसला करके जो दिलेरी दिखलाई है उसकी जितनी भी तारीफ की जाय कम है। अपनी बाकी जिन्दगी में नेक काम करके पिछले गुनाहों को धो डालने के लिए अब भी तुम्हारे पास बहुत मौका है बेटा। मेरी दुआएँ तुम्हारे साथ हैं।"

कल का कातिल रहमत सरोज के पैरों से लिपटकर बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगा। उधर सरोज के असीम सागर सरीखे हृदय में मानो ममत्व और करुणा का अगाध जल उमड़ पड़ा था। उसकी रगों में बहने वाला लहू दया और करुणा का सघन मिश्रण बन चुका था। रहमत को बाहों में भरकर कलेजे से लगाती हुई वह बोली, "आज मैं कितनी खुशनसीब हूँ कि अपने लाड़ले जवान बेटे को खोकर मुझे तुम जैसे दूसरे बेटे की माँ बनने का मौका मिला है। कल से ही तुम जी-जान से नेक कामों में जुट जाओ, यही मेरी आखिरी तमन्ना है। तुम्हें एक बदले हुए इन्सान के रूप में देखकर मेरा कलेजा जुड़ा जायेगा बेटा।"

रहमत उसी रात भेष बदलकर अपनी नई माँ और दत्तक पुत्र के साथ शहर छोड़कर अपनी नई जिम्मेदारियों को पूरा करने के दृढ़ संकल्प के साथ, पुलिस की नजरों से बहुत दूर, अपना नया संसार बसाने के लिए निकल पड़ा। मझधार में डूबती सरोज को अब मानो किनारा मिल गया था।

संपर्क: एस० 2/5/-ए, अर्दली बाजार,
(अधिकारी हॉस्टस के समीप),
वाराणसी (उ०प्र०)-221002

कहानी-एक हवेली की:

(धारावाहिक लम्बी कहानी)

❑ उर्मिला शुक्ल

वनांचल की इस हवेली में आज बड़ी रौनक है। महीनों की रगड़ घिस और रंग-रोगन ने तो इसकी काया ही पलट दी है, कौन कहेगा कि यह वही हवेली है............ .... वैसे ही जैसे फुलकुवँर? कौन कह सकता है कि ये वही वनकन्या है जिसे....... .... "मैडम, ये बताइये कि आप इस अंचल के लिए क्या करेंगी?" इस प्रश्न के साथ ही वेत्रकारों की दृष्टि के घेरे में थीं।

"पहले तो मैं आपके सवाल में थोड़ा सा संशोधन कर दूँ। मैं जो कुछ करूँगी। यह अँचल मेरा अपना है कोई पराया नहीं।"

उनके सवालों और उनके कैमरे से मुखातिब उस चेहरे पर एक चमक थी। यह चमक राजनीति की नहीं थी। किसी पद विशेष से भी इसका सम्बन्ध नहीं था। इसका सम्बन्ध था उस आत्मविश्वास से जिसे उन्होंने धीरे-धीरे सहेजा था। उनकी बरसों की लगातार मेहनत का प्रतिफल थी यह चमक।

"मैडम! नक्सलवाद इस अँचल की अहम् समस्या है। आपको इस समस्या उन्मूलन का प्रभारी भी बनाया गया है। आप इस दिशा में क्या कदम उठायेंगी?" कैमरा और कलम फिर सचेत हो उठे थे। "पहली बात! नक्सलसवाद किसी अपराधी गिरोह का नाम नहीं है जिसका उन्मूलन किया जायेगा। हमारे अपने ही लोग हैं। नाराज हैं हमसे। जैसे बहुत से लोग नाराजगी के क्षणों में अपने ही घर का सामान तोड़-फोड़ देते हैं और अपने परिवार के लोगों पर गुस्सा जाहिर करते हैं, वैसे ही ये भी गुस्सा जाहिर कर रहे हैं।"

"इसका मतलब आपकी नजर में ये जो हत्यायें, लूटपाट कर रहे हैं सब जायज है" एक युवा पत्रकार था उसके शब्द से आक्रोश फूट रहा था।

"अभी मेरी बात पूरी नहीं हुई है। मैं आपके इसी प्रश्न पर आ रही हूँ। तो मैंने कहा कि ये लोग हम पर अपना गुस्सा जाहिर कर रहे हैं। इस गुस्से में बहुत कुछ ऐसा भी हुआ है जो नहीं होना था और.वह अपराध की श्रेणी में भी आता हैं इससे आज वे अपराधी बन गये हैं। मगर इसका समाधान भी है। यह समाधान उनकी मूल समस्याओं को समझ कर उनका निराकरण करना है। उन्हें विश्वास दिलाना होगा कि हम उनके अपने हैं। यह देश और देश का तिनका-तिनका उनका है। ये उसके स्वामी हैं, और रक्षक भी। और उससे होने वाली आय के हकदार भी . ...।"

कहते-कहते वे दूर जंगलों में खो गयी थी। उनकी आँखों में व्यापारी, ठेकेदार और अधिकारी घूम गये थे, जो उन्हें उनके ही जंगलों से बेदखल करने में लगे थे। वे जंगल जो बरसों से उनके निस्तार के साधन थे, आज उनके अपने नहीं थे। जीविका का कोई साधन इस दुर्गम वन में था नहीं, सो युवा वर्ग का आक्रोश उभर आया था और उसे शासन ने नाम दिया था-नक्सलवाद। वे महसूस कर रही थीं उस पीड़ा को जिसने उन्हें मरने-मारने पर मजबूर कर दिया था।

"मैडम, आप ऐसा क्या करेंगी जो औरों से अलग होगा? हमारा मतलब है आपके मुख्यमंत्री जी से इस क्षेत्र और इसकी समस्या का प्रभार माँग कर लिया है जबकि अँचल के बड़े नेता इस पर बड़ी मेहनत और लगन से काम कर रहे थे।"

इस प्रश्न से वे वर्तमान में लौटी थी प्रश्नकर्त्ता का इशारा जिस ओर था उसे लोग भी समझ गये थे। लोगों के चेहरों पर मुस्कान उभरी। वे भी समझ रहीं थीं उस मुस्कान को। मगर चेहरे पर उसकी झलक भी नहीं थी। "हाँ, मैंने इस क्षेत्र को मांगा है क्योंकि ये मारा अपना क्षेत्र है। कोई भी शुरूआत अपने घर से हो तो उसकी सफलता दीर्घजीवी होती है और काम अगर मनचाहा हो तो वह बोझ नहीं लगता, सहज हो जाता है। .... जहाँ तक समस्या का सवाल है, ये मरी स्वयं की समस्या है। मैं भी तो उन्हीं में से एक हूँ। मैं भी उनकी तरह वर्तमान स्थिति का विरोध करती हुँ; फर्क सिर्फ इतना है कि उनहोंने हाथों में अथियार उठा लिये हैं और मैंनं आवाज लठाई है...................... मैं उनकी अपनी हूँ, उनके बीच रहकर उनकी समस्या को दूर करने की कोशिश करूँगी"-कहते हुए उनकी आँखों में अनेक घटनायें घू गयी थीं।

"सचमुच अगर छोटी सी फुंसी का भी सही इलाज न किया जाये तो वह नासूर बन जाती है। यह समस्या भी वैसी ही है। बरसों से वनवासी देश की मुख्यधारा से अलग-थलग हो जाने की पीड़ा भोगते रहे हैं। प्रशासन और उसके अधिकारियों ने उन्हें डराया था और ठेकेदारों/व्यापारियों ने उनका शोषण किया। उन्हें याद आये बचपन के वे तमाम दृश्य जब गांव में कोई भी वर्दीधारी आता तो सारा गांव ही खाली हो जाता, लोग डरकर जंगलों में जा छुपते। कारण उनका शोषण ही था, कुछ भी तो सुरक्षित नहीं था। न धन, न ही इज्जत। उन्हें तो वे उपभोग का साधन आय समझते थे। उसी व्यवस्था ने उन्हें हथियार उठाने पर विवश किया था। फिर डर की भी कोई सीमा होती है। अब तो आर-पार की लड़ाई है। उन्होंने सोचा, मगर कहा नहीं। आज वे भी उसी प्रशासन का एक अंग है, मगर........।

"मैडम आपने सरकार से ये हवेली भी माँगी है क्यों? इस वनांचल के लिए क्या उपयोग है इसका?" पूछते समय उस पत्रकार के चेहरे पर बहुत कुछ अनकहा भी उभर आया था। उसकी दृष्टि और पैनी हो उठी थी बिल्कुल भीतर तक उतरती हुई।

उन्होंने महसूसा था-उस मुस्कान को और उस दृष्टि को। अब वे भोली-भाली वनकन्या तो थी नहीं कि कुछ भी समझ न सकें। सो चेहरे पर वही सौम्य मुस्कान थी। कुछ देर खामोश रहकर उन्होंने वहाँ मौजूद चेहरों को थकाने के बाद कहा-"यह मैं अभी नहीं बता पाऊँगी। आपके इस प्रश्न का जवाब भविष्य की कोख में है। वैसे भी मैं कहने में नहीं, कर दिखाने में विश्वास करती हूँ।"

उनके इस कथन से कई अर्थ उभरे थे। कुछ ने उन्हें अन्य नेताओं के समान सुविधा भोगी माना तो विरोधियों की नजर में यह वीरेन्द्र बहादुर सिंह की पुश्तैनी हवेली हथियाने की बेतरती चाल थी। आज हर नजर खामोश रहकर भी बोल रही थी।

"आप लोगों को कुछ और तो नहीं

पूछना है-" प्रेस कांफ्रेंस को समेटना चाहा था।

"मैडम, एक निजी सवाल और, आपने अब तक विवाह नहीं किया। यह चिर कुँवारी रहने का फैसला क्यों?"

"कौन कहता है कि मैंने विवाह नहीं किया। मेरा विवाह तो हो चुका है। प्रेम विवाह किया है मैंने।"-एक धमाके की तरह गूँज गया था अन्तिम वाक्य। अब लोग एक दूसरे का मुँह ताकने लगे थे।

कब हुआ यह विवाह? और किसके साथ? कब से रोमांस चल रहा था? ऐसे अनेक प्रश्न हर आँखों में तैर रहे थे। अब उनकी कलम एक नयी प्रेम कहानी लिखने को अकुला रही थी। उनमें से हर पत्रकार सुबह के नाश्ते में इस नमकीन समाचार को परोसना चाह रहा था। उनकी कल्पना में अनेक नेताओं के चेहरे उभरने लगे थे। बस उनमें रंग भरना ही शेष था।

और अपने चेहरे पर सवालिया नजरों को महसूस करती हुई वे घिर गयी थीं। वैसे ही जैसे गहराई में सागर घिर ही जाता है। क्षणभर को वे दूर जंगलों में खो गई थीं, पहाड़ी की ढलानों पर फिसल गयी थीं। अनेक-अनेक दृश्य आँखों में उभरे और उनकी आँखे पनीली हो उठीं। वे जवाब तो दे रही थीं, मगर अभी भी अतीत में डूबी हुई थीं। लग रहा था जैसे उनकी आवाज दूर जंगल में भटक रही हो।

"हाँ! मेरा विवाह हो चुका है प्रेम विवाह। आप जानना चाहेंगे, कि मेरा वह प्रेमी कौन है?"........एक लम्बी साँस के साथ उन्होंने जो कहा उसे सुनकर कलम रुक गयी थी और वे कह रही थीं अपने आप में डूबकर मैंने प्रेम किया है अपने इस अंचल से; जिसने मुझे सांसें दी हैं, इसकी मिट्टी से जिसने गढ़ा है मुझे। जंगल के पेड़ों के साथ फेरे लिये हैं मैंने।"

आशा के विपरीत जवाब सुनकर पत्रकारों की सारी आकुलता पथरा गयी थीं। कहाँ तो वे एक सनसनी फैला देना चाहते थे और कहाँ मातृभूमि-जन्मभूमि की घिसी पिटी बातें।

"साली झूठ बोलती है। आँखे देखो न, याद में कैसी नशीली हो गयी हैं, बनती है साली।"-पीछे की पंक्ति में एक अधेड़ पत्रकार दूसरे के कान में फुसफुसा रहा था।

और उससे बेखबर वे अपनी रौ में कह रही थीं-"मेरा अपना मानना है कि जो देश सेवा का बीड़ा उठाये, उन्हें सांसारिकता से दूर रहना चाहिए। परिवार की जिम्मेदारियाँ व्यक्ति को विभाजित कर देती हैं और उसका सारा प्रयास टुकड़ों में बँट जाता है। जबकि समर्पण समूचा होता है। सम्पूर्णता ही समर्पित की जाती है"-कहते हुए वे फिर दूर चली गयी थीं। अब उनकी आँखों में सम्पूर्णता की जीती जागती मिसाल उभरने लगी थी।

"आपकी वाणी में दिल्ली का स्वर झलक रहा है। कहीं आप दिल्ली से प्रभावित तो नहीं? वैसे तो वे आपके विपक्षी हैं-"तीर जानबूझकर छोड़ा गया था। वे चाहते थे कि इस पूरे प्रस कॉफ्रेंस में कुछ तो ऐसा हो, जो सनसनी फैला दे।

"अच्छाई कहीं भी हो, वह अच्छाई ही होती है। मेरे विचार से विपक्ष में होने मात्र से कोई अच्छाई अस्पृश्य नहीं हो जाती।..... ......अच्छा तो आज के लिए इतना ही बहुत है। अब इजाजत दें।"

उनके इस प्रश्न के साथ ही ऐसे ही अनेक सवालों पर विराम लग गया। वे जानती थीं कि ये बातें शुरू होकर कहाँ तक पहुँचेंगी। वे ये भी जानती थीं कि अब अखबारों में उनकी धज्जियाँ उड़ाई जायेंगी। विपक्ष से ज्यादा उनकी अपनी पार्टी का विरोधी खेमा ही उसे उछालेगा।

उन्हें मालूम था कि आज की यह प्रेस कांफ्रेंस कहाँतक जायेगी। इसमें मौजूद अनेक पत्रकारों से भलीभांति परिचित थीं। वे उनकी योजना को हवेली हड़पने की साजिश ही कहेंगे। ये सब किसके समर्थक हैं, ये भी वे जानती थीं। उन्होंने चुनौती के रूप में इस कांफ्रेंस को स्वीकार किया था।

उनकी आँखों में विगत के दृश्य उभर आये, कल तक वे जिनके साथ थीं, आज वे ही उनके विरोधी हो उठे थे। स्वार्थ की इसी राजनीति ने ही तो हमें कहीं का नहीं छोड़ रखा है।

उनकी आँखों में अब हवेली उभरने वाली थी और साथ ही उभरे थे राजा वीरेन्द्र बहादुर सिंह। इस अँचल के कर्णधार। प्रदेश और देश की राजनीति के प्रमुख स्तम्भ। मगर उन्हें स्तम्भ बनाया किसने? ये बात वे विगत कई वर्षों से भूल से गये थे। लम्बे समय से उनका सम्बन्ध सिर्फ राजधानी तक सिमट गया था और यही वह रेखा थी जहाँ से अँचल की राजनीति का स्वरूप बदलने लगा था।

वैसे तो वे ही उनके राजनीतिक गुरु थे और गुरु होने के नाते उनसे दक्षिणा की चाह भी रखते थे। यह सच भी है कि उनसे उन्होंने बहुत कुछ सीखा था। दूर रहकर वे एकलव्यक की तरह उनसे दीक्षा लेती रहीं थीं! मगर उन्होंने एकलव्य की तरह अपना अँबूठा बचा लिया था। अँचल से नये नेतृत्व की बात पर उन्होंने कुँवर विजय बहादुर का भरपूर विरोध किया था। उन्होंने यह बात मनवा ली थी कि अँचल की राजनीति में यहाँ के लोगों की सक्रिय भागीदारी होनी चाहिए, तभी उनकी समस्याओं का निदान सम्भव हो पायेगा।

वे जानती थीं कि यह हवेली सिर्फ ईट पत्थरों की इमारत मात्र नहीं है, हमेशा से इस अँचल की राजनीति का आधार रही है यह। आज भी वह आधार कायम है.........वे हवेली को देख रही थीं, आँखों में हवेली थी मगर मन..........कितनी समानता है, उनमें और इस हवेली में। आज वे अतीत की बावड़ी में उतरने लगी थीं...........जहाँ उनकी प्रेरणा का मूल स्रोत है। वे नहीं जानतीं कि आज वे कहाँ हैं? मगर आज भी वे उनके साथ हैं उनके भीतर। वे तो उन्हीं की बतायी राह पर चलने की कोशिश भर करती रही हैं. .....।

लम्बा कद, भरापूरा शरीर, आकर्षक मुखमण्डल और अपनी ओर खींचती हुई सुन्दर निश्छल आँखें। जो देखता वह चुम्बक की तरह खिंचता चला जाता। उनके वस्त्र न तो श्वेत थे और न ही गेरुआ। सूती खादी के अति साधारण वस्त्रों में ही वे असाधारण हो गये थे।

वे आये थे उस गाँव में प्रवासी बनकर और उनके अपने हो गये थे। पहले तो लोगों को लगा था कि जैसे गाँव में मदर-फादर और सिस्टर या गेरुआ वस्त्रधारी धर्म गुरु आते रहे हैं। वे भी उन्हीं में से रहे होंगे। अब उन्हें एक नया नाम और नयी प्रार्थना दी जायेगी।

– दूसरा किस्त अगले अंक में जारी.........

सम्पर्कः नर्मदा नगर, बिलासपुर, छतीसगढ़

आचार्य रामेश्वर नाथ तिवारीः वैनिबंध एव लघुकथा के प्रणेता

❑ डॉ० सुरेन्द्र प्रसाद जमुआर

1948 से 1955 तक बिहार सरकार के हिन्दी प्रचार अधिकारी और 'स्मृतिकुंज' गद्य-काव्ययोपयोगी उपन्यास के सर्जक **आचार्य रामेश्वर नाथ तिवारी**, अपने वैयक्तिक निबंध , लघु-कथा लेखन के अद्वितीय रचनाकार एवं सफल प्राध्यापक रहे हैं। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना द्वारा पुरस्कृत वैयक्तिक निबंध संग्रह **'खजूर के पेड़'** दो शब्द में कहा गया है कि भारतेन्दु-युग में इस साहित्यिक रूप-विधान को मान्यता मिलने के बाद द्विवेदी-युग में शास्त्रीयता पांडित्य में वैयक्तिक निबंध दब-सा गया था। छायावाद-युग में इसे नया जीवन मिला। सचमुच यह संग्रह तिवारीजी के विद्वत प्रयासों का परिणाम है। पांचवें दशक से शुरू होकर वैयक्तिक ललित निबन्ध , कई प्रख्यात साहित्यकारों की कलम से, आज के दसवें दशक में भी जारी है। 'प्रस्तावना' में भी हिन्दी के भीष्मपितामह छविनाथ पाण्डेय (1890-1986) ने उपयुक्त बात लिखी है कि विद्वान लेखक तिवारीजी ने जनसाधारण से परिचित सामान्य विषयों को लेकर उनके प्रति अपने मन में उठे भावों को शब्दों में पिरोया है। लघुकथा के क्षेत्र में तिवारी जी की रचनात्मक जिजीविषा उतनी ही जानदार और ऐतिहासिक रही है। उन्होंने सर्वप्रथम 47 लधुकथाओं की रचना करके, उसका संग्रह अगस्त, 1964 में **"रेल की पटरियां"** हिन्दी-जगत को दिया और लघुकथा में अभिनव प्रयोग किए। वे 13 वर्ष की सेव-निवृतित्व के बाद भी, 2001 तक अत्यंत भव्य ढंग से अपना जीवन बिताते रहे। वे मददगार शिक्षक-अध्यापक रहे थे। वे जीवन के एक अध्ययन व्रती शुरू से रहे।

कुल मिलाकर वे सजग आंखों, जागरूक बुद्धि और मर्मन्तु हृदय से जीवन को देखते थे। लेखन तथा आचरण दोनों स्तरों पर नैतिकता को प्राथमिकता देते थे। पाठकों में भी वैयक्तिक निबंधों के प्रति वैसी ही रुचि बढ़ती जा रही है। इस निबन्ध में भाषा और शैली की प्रौढ़ता है। पहले वैयक्तिक निबंध **"खजूर के पेड़"** में लेखक जीवन की अरुणिमा से उद्‌भासित होकर और कल्याण-भावना से मुखरित होकर लिखते हैं -किसान अपने नग्न और ध ूप से स्याह बने हुए शरीर के अखिल स्वेद-प्रवाह को पोंछता हुआ, इन्हीं खजूर के पेड़ों की उस धनी छाया में आता होता, जो जीवन की क्षण-भंगुरता और नश्वरता का संकेत देती रहती है। खजूर के पेड़ विश्व-बंधुत्व की भावना से प्रेरित है। इनके राज्य में कोई पक्षपात नहीं, कोई भेद-भाव नहीं, कोई भेद-भाव नहीं, इनका द्वार सबके लिए समान रूप से खुला है। अखबार के अध्ययन को आज की प्रगतिशीलता का मापदंड करते हुए **"अखबार"** निबंध में वे लिखते हैं-अखबार देश-विदेश की भयावह खबरें सामने रखकर हमारे सामने चिंताओं का हिमालय खड़ा कर देता है। हम गांव के तुच्छनिवासी ही नहीं, अपितु विश्व नागरिक हैं तथा कालक्रम से जब विश्व सरकार का निर्माण होगा, हम सबों को ही एक भूमिका अवश्य खेलनी है। "ट्रक-यात्रा" में लेखक ने शेरशाह के जीवन से आत्मविश्वास की सीख लेने का कहा है-"संसार में कुछ भी अलभ्य नहीं है, केवल अदभ्य आत्मविश्वास,अडिग दृढ़ता और लक्ष्य की एक-निष्ठाता चाहिए। लेखक हास्य की चुटीली शैली में आज की भ्रष्टाचार-पद्धति पर करार व्यंग्य करता है, जो **खिड़की** निबन्ध में द्रष्टव्य है-जहां कभी ब्रह्मचर्य, सदाचार और पवित्रता की अखंड ज्योति जागती थी, वहां आज व्यभिचार, दुराचार और अपवित्रता की गंदी नाली बहती है। **"बबूल और गुलाब"** संग्रह का अंतिम वैयक्तिक निबंध है जिसमें लेखक ने सौन्दर्य की विराट शक्ति और संगीत को समझाने के लिए श्रमिक का हृदय अपनाने का आग्रह किया है।

संपर्कः वन्दना कुटीर
दुजरा, पटना-800001

लापरवाही भी दृष्टिहीनता का कारण

❑ डॉ० शुभंकर बनर्जी

प्राय: ऐसा देखा जाता है कि दुर्गा पूजा, काली पूजा तथा दिपावली के शुभ अवसर पर दुर्घटना का मातम-सा छा जाता है। ऐसी दुर्घटना इन अवसरों पर होने वाले विभिन्न काण्डों के दुष्परिणामस्वरूप होती है। उदाहरणत: प्रति वर्ष 2 प्रतिशत बच्चे इन्हीं अवसरों पर तीरंदाजी तथा अतिशबाजी के कारण आंखों की चोट के शिकार हो जाते हैं। सबसे दु:खद तथ्य यह भी है कि इनमें से 20 प्रतिशत बच्चे जीवन भर के लिए इन्हीं दुर्घटनाओं के कारण अंधत्व का शिकार हो जाते हैं। इनमें से सर्वाधिक अपनी आंख की ज्योति से हाथ धो बैठते हैं। इसके अलावा सफेद मोतिया, ग्लूकोमा जैसे रोग होन की आशंका भी बनी रहती है। अत: ऐसी दुर्घटनाओं से बचें रहने के लिए इन अवसरों पर विशेष सावधानी बरतने की अपील भी विभिन्न जनसंचार साधनों के माध्यम से की जाती है।

प्रति वर्ष 2 प्रतिशत बच्चे इन्हीं अवसरों पर तीरंदाजी तथा अतिशबाजी के कारण आंखों की चोट के शिकार हो जाते हैं। सबसे दु:खद तथ्य यह भी है कि इनमें से 20 प्रतिशत बच्चे जीवन भर के लिए इन्हीं दुर्घटनाओं के कारण अंधत्व का शिकार हो जाते हैं।

रामलीला के दौरान प्राय: ऐसा देखा गया है कि बच्चे रामलीला देखकर उसकी नकल की चेष्टा करते हैं। इस प्रकार से तीर-कमान से खेलने के कारण सदैव दुर्घटना होने की आशंका बनी रहती है। दरअसल मात्र नकल करने से ही तो उन्हें तीर-कमान चलाना नहीं आ जायेगा, अर्थात जानकारी तथा किसी प्रकार की रोकटोक न होने से यही खेल घातक बन जाता है तथा परिणामत: बच्चा या तो अंधेपन का शिकार हो जाता है या नेत्रहीन ही हो जाता है। चोटग्रस्त होने के कारण बच्चों में रेटिना की जगह हिल जाती है। फलस्वरूप आंखों में संक्रमण हो जाता है। अत: इन राष्ट्रीय पूजा उत्सवों के दौरान बच्चों की यथायोग्य निगरानी रखने की आवश्यकता सदैव बनी रहेगी।

यदि आंखों में चोट लग ही गयी हो तो बिना समय नष्ट बच्चे को तरंत किसी योग्य नेत्र विशेषज्ञ के पास ले जाना चाहिए। प्राय: ऐसा भी देखा जाता है कि आंखों में चोट लगने की अवस्था में बच्चे अपनी आंखों को मसल देते हैं या पानी डाल देते हैं। परंतु ऐसा करना लाभप्रद होना तो दूर बल्कि और भी हानिप्रद सिद्ध हो सकता है। चोट लगने की दशा से बचने हेतु बेहतर तो यही है बच्चों को बेरोकटोक तथा बगैर जानकारी के न तो तीर-कमार चलाने दिया जाए और न ही उन्हें स्वयं अतिशबाजी चलाने की छूट दी जाए। अर्थात अभिभावकों के स्वयं की देखरेख में ही, इन उत्सवों को इस ढंग से मनाने के लिए बच्चों को अनुमति देनी चाहिए।

कुछ महत्वपूर्ण सावधानियां ये हैं-

1) बच्चों या चलाने वाले के बीच पर्याप्त दूरी होनी चाहिए, 2) हाथ में पकड़ कर पटाखे कभी भी नहीं जलायें,

3) अनार को जलाते ही तुरंत पीछे हट जायें,

4) बाल्टियों, बंद बक्से या डिब्बों में पटाखों को चलाना घातक सिद्ध हो सकता है

5) तीर-कमान चलाने की खुली छूट बच्चों को न देकर उन्हें उसे चलाने की जानकारी तथा पर्याप्त सावधानी बरतने की यथायोग्य शिक्षा देनी चाहिए।

हाल के एक ताजे सर्वेक्षण के अनुसार पूरे विश्व में इस समय लगभग 4.5 करोड़ दृष्टिहीन दक्षिण पूर्व एशिया में रहते हैं। एक आकलन के अनुसार वर्ष 2011 तक अकेले हमारे देश में ही दृष्टिहीनों की संख्या दो करोड़ तक पहुंची जायेगी। वैसे तो अंधता के कई अन्य कारण भी है परंतु उत्सवों के अवसरों पर दुर्घटनावश होने वाली दृष्टिहीनता या आंखों को पहुंची हानि पर थोड़ी सी सावधानी बरत कर ही नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है। स्पष्ट है कि रामलीला की नकल करके उल्टे तीर-कमान चलाने तथा बगैर सावधानी बरते अतिशबाजी जलाने आदि के कारण से दुर्घटनावश होने वाली दृष्टिहीनता पर अवश्य काबू पाया जा सकता है।

इस संदर्भ में नेत्र विशेषज्ञों की राय यह भी है कि कुल दृष्टिहीन व्यक्तिओं में 90 प्रतिशत व्यक्ति मोतियाबिंद के कारण दृष्टिहीनता का शिकार हुए। यदि समय रहते उनकी चिकित्सा कर दी जाती तथा थोड़ी सावधानी बरती जाती तो इस रोग पर काबू पाने में स्वत: ही सफलता मिल जाती। एक सामान्य शल्यक्रिया द्वारा ही मोतियाबिंद की चिकित्सा की जा सकती है। परंतु ऐसे मामलों में केवल 30 प्रतिशत की ही शल्यक्रिया होती है तथा शेष बिना उपचार प्राप्त करके ही दृष्टिहीन होने को बाध्य हो जाते हैं। अत: सावधानी के साथ समय रहते उपचार की नीति ही सर्वाधिक कारगर सिद्ध हो सकती है।

सम्पर्क: सचिव "शांति मिशन" ए-46, सादतपुर, करावल नगर रोड, दिल्ली-94

याददाश्त बढ़ाई जा सकती है

सुधा सिन्हा

आम तौर पर यह देखा जाता है कि बहुतेरे लोग अपने दोस्तों का नाम भूल जाते हैं, उनका टेलीफोन नं० उन्हें याद नहीं आता, आलमारी की चाबी उन्होंने कहाँ रख छोड़ी है, याद नहीं, अपने पास बुक को कहाँ रखा है या उसके नम्बर क्या हैं उन्हें याद नहीं। इसे यदि भूलने की बीमारी कहें तो ज्यादातर लोग स्वयं को इसकी चपेट में पाएंगे। वैसे भी बढ़ती उम्र में याददाश्त कम होती जाती है। आज की इस आपाधापी के युग में कम उम्र के लोगों में भी ज्यादा से ज्यादा अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए बेहतरीन याददाश्त की इच्छा होती है। लोगों की इसी चाहत को मद्देनजर बाजार में कई सारी कम्पनियों ने दिमाग चमकाने की दवा बेचना प्रारम्भ कर दिया है। ये दवाइयाँ, किताबी नुस्खे, प्रशिक्षण या वेबसाइट कितने लाभदायक हैं, यह तो बाद की बात है। लोगों को यही नहीं मालूम कि वाकई वे किसी भूलने वाली बिमारी के शिकार हैं या फिर यह उनका वहम है।

एक जानकार का मानना है- "दरअसल याददाश्त की क्षमता से अधिक महत्वपूर्ण है उसकी सही तरीके से इस्तेमाल करना। कोई भी साधारण आदमी कुछ तरीकों का इस्तेमाल करके अपनी याद रखने की क्षमता को काफी बढ़ा सकता है। इस सन्दर्भ में कई ऐसी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जो लोगों की याददाश्त बढ़ाने का दावा करती हैं। जैसे-हैरी लारेन की **सेक्रेट्स ऑफ माइन्ड पावर, कैरोल टुकिर्गटन की 12 स्टैप ट् ए बेटर मेमोरी, और सिथिया गीन की टोटल मेमोरी वर्कआउट।** इसी प्रकार कुछ वेबसाइट्स भी हैं जो याददाश्त तेज करने में सहयोग करतें हैं या नाम पते आदि याद रखने में एक हद तक मददगार होते हैं। एक विशेषज्ञ का कहना है कि बढ़ती उम्र के साथ चीजें याद रखने की ताकत कम हो जाना कोई असाधारण बात नहीं है। दिमाग के कई भागों में यादें संरक्षित रहती हैं पर इसका सामने का हिस्सा जिसे **फ्रन्टल लोब** कहते हैं, सबसे खास होता है। जरूरत पड़ने पर **फ्रन्टल** लोब यादों को ताजा करता है। बाकी हिस्सों में आंकड़ें जुटाने का काम भी इसी के जिम्मे होता है। उम्र बढ़ने के साथ इसकी क्षमता कम हो जाती है। पर यह बहुत साधारण क्रिया है। साधारणतया 50-60 की उम्र तक आपके दिमाग की दीवारों के रंग-रोगन उखड़ जाते हैं पर दीवार की मजबूती पर ज्यादा असर नहीं होता। हाँ, कुछ लोगों के फ्रन्टल लोब की ताकत चिन्ताजनक रूप से कम जाती है। यह बीमारी की शक्ल अख्तियार कर लेती है, जिसे **एल्जाईमर्स** रोग कहा जाता हैं इसी प्रकार एक दूसरे जानकार का कहना है कि आप एक ही चुटकुला हर दूसरे दिन दोस्तों को सुनाने लगें अथवा अपने सम्बन्धी या शुभेच्छुओं के बीच कहने लगें या फिर किसी दोस्त के जन्म दिन पर उन्हें हर हफ्ते जन्मदिन की बधाइयाँ उन्हें देने लगें तो चिन्ता की जरूरत है और इस स्थिति में चिकित्सक की सलाह जरूरी हो जाती है।

चिकित्सकों का मानना है कि अधिक मात्रा में शराब या नशीली पदार्थों का सेवन करना दिमाग के लिए सबसे ज्यादा नुकसानदेह साबित होता है। इसके अतिरिक्त ब्लड प्रेसर या तनाव दूर करनेवाली दवाओं का प्रयोग भी याददाश्त को कमजोर कर सकता है। साथ ही यह भी सत्य है कि भूलने की बीमारी का शक करने वाले अधिकतर लोगों को हकीकत में यह बीमारी होती ही नहीं। मनोवैज्ञानिक दबाव व्यक्ति को नपुंसक तक बना देता है। यही कारण है कि देश में नपुंसक लोगों की संख्या बढ़ते-बढ़ते आज 20 प्रतिशत तक हो गयी है, यह कहना है मुंबई स्थित लीलावती चिकित्सालय के प्रख्यात चिकित्सक **डॉ० शशांक आर० जोशी** का। डॉ० जोशी बताते हैं कि अश्लील पुस्तकें तथा अश्लील फिल्मों की वजह से भी लोगों में नपुंसकता बढ़ रही है। ज्यादातर चिकित्सकों की अवधारणा है कि मानसिक तनाव का सर्वाधिक प्रभाव ऐसी बीमारियों पर अधिक पड़ता है। इसलिए छोटी-मोटी वारदातों व उलझनों से सदैव बचने का प्रयास करना चाहिए अथवा उसे नजरअंदाज करना ज्यादा श्रेयष्कर होता है। वैसे भी तनाव रहित होकर प्रफुल्लित मन से लक्ष्य का पीछा करनेवाला व्यक्ति अपनी स्मरणशक्ति को तो कायम रखता ही है वह असफल होने पर भी खीझता नहीं है। कहा भी गया है आशा ही जीवन है। इसलिए आशावादी बनें, ख्याली-पुलाव न पकाएं।

सम्पर्क: मनोवैज्ञानिक, इन्द्रपुरी, पत्रा०-केशरीनगर, पटना

अगला अंक

राष्ट्रीयता एकता विशेषांक

अक्टूबर में प्रकाशित **विचार दृष्टि** का 9वाँ अंक **राष्ट्रीय एकता विशेषांक** होगा क्योंकि अक्टूबर में न केवल बापू, शास्त्रीजी तथा सरदार पटेल की जयन्ती है बल्कि लोकनायक जयप्रकाश की जन्मसदी भी प्रारम्भ होती है। इन महान विभूतियों के व्यक्तित्व व कृतित्व के कुछ अनछुए पहलूओं को इस विशेषांक में संजोया जा सकेगा। विद्वान लेखकों व ब्यूरो प्रमुख से आग्रह है कि इसी के अनुरूप राष्ट्रीय एकता व अखण्डता पर आधारित अपने लेख 15 सितम्बर, 2001 तक भेजकर इस अंक को संग्रहणीय बनाएं।

प्रतिष्ठान मालिकों से अनुरोध है कि अक्टूबर में प्रकाशित राष्ट्रीयता एकता विशेषांक में अपने-अपने प्रतिष्ठान का अधिकाधिक विज्ञापन भेज कर न केवल भारत के इन चारों विभूतियों के प्रति सम्मान व्यक्त करें बल्कि इस पत्रिका के नियमित प्रकाशन में सहयोग प्रदान करें। सम्पादक, **विचार दृष्टि**

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1/दृष्टि, 6 विचार विहार, शकरपुर , दिल्ली-92

हैदराबाद में जुटा एक स्वस्थ सांस्कृतिक कुंभ मछली की अनूठी दवा

❑ डॉ० राजेन्द्र गौतम

थोड़े दिन पहले की बात है। प्रयाग में संगम स्थल पर देश की विराट संस्कृति का भव्य हाल था। हर नगर और हर प्रान्त से आए लोग एक राष्ट्र का बिम्ब प्रस्तुत कर रहे थे। ठीक इसी प्रकार जून की 8 तारीख को एक और विशिष्ट कुंभ का दृश्य उपस्थित था आन्ध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद में। हिन्दू मुस्लिम सिख, इसाई की सम्मिलित धारावाला तेलुगु, हिन्दी और उर्दू की त्रिवेणी वाला यह नगर मिली जुली भारतीय संस्कृति का अद्‌भुत दृश्य प्रस्तुत कर रहा था। यह एक वार्षिक कुंभ है और इसका सूत्रधार है यहाँ का बत्तिनी गौड़ परिवार, अब लगभग सारा देश जान गया है कि **आषाढ़ में मृगशिरा नक्षत्र में दमें की दवा यहाँ करेल नामक मछली के साथ निःशुल्क दी जाती है।** यह दवा मछली वाली दवा के नाम से भी प्रसिद्ध है। डेढ़ से तीन ईंच तक की लम्बाई वाली मरेल मछली के मुँह में रखने के लिए गौड़ परिवार मृगशिरा नक्षत्र की पूर्व सध्या में पर्याप्त मात्रा में एक विशेष औषध तैयार करता है। इस औषध का नुस्खा पिछले 150 वर्षों से भी पहले इस बत्तिनी गौड़ परिवार को प्राप्त हुआ था। ऐसी मान्यता है कि इस परिवार के लोगों के हाथों से एक विशेष प्रक्रिया से दी गई औषध ही रोगी को आराम पहुँचाती है। 10-15 वर्ष पहले इस दवा की प्रसिद्धि स्थानीय लोगों अथवा आस पास के लोगों तक ही सीमित थी परन्तु समाचार पत्रों एवं इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों ने इसकी सूचना दूर-दूर तक फैलानी शुरू की तो प्रति वर्ष यहाँ दवा लेने आने वालों की संख्या अप्रत्याशित रूप से बढ़ने लगी। इस वर्ष यह संख्या 5 लाख को भी पार कर गई। एक अपुष्ट अनुमान के अनुसार तो रोगी तथा उसके साथ आने वालों की संख्या 7-8 लाख थी। इस विराट संख्या का एक कारण यह भी है कि यह दवा लगातार तीन वर्ष तक लेनी पड़ती है, इस तरह नए रोगी पुरानी श्रृंखला में जुड़ते रहते हैं और कुछ पूर्ण लाभ के लिए तीन साल के बाद भी आते रहते हैं। यह एक अनूठा दवा वितरण है, जहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई ही नहीं, सभी भाषाओं के लोग, सभी प्रान्तों यहाँ तक कि विदेशी सामिष और निरामिष लोग भी जुटते हैं। यदि इसे विराट जनसागर के अनियंत्रित न होने देने का श्रेय यहाँ के प्रशासन के कुशल प्रबन्धन को जाता है तो लोगों को रहने-ठहरने तथा खाने-पीने की सुविधा मुहैया करवाने का श्रेय नगरद्वय-सिकन्दराबाद और हैदराबाद की जिन समाज सेवी संस्थाओं को जाता है उनमें अग्रवाल समाज, हरियाणा नागरिक संघ, पंजाबी सेवा समिति, राजस्थानी सैनिक क्षत्रिय माली समाज, उत्तर भारती संघ, माथुर वैश्य समाज, मानव उत्थान सेवा समिति तथा जयश्री श्याम-श्याम मेरे श्याम का नाम उल्लेखनीय है।

इस **नगरद्वय** शब्द की भी अपनी कहानी है। **हुसैन सागर** यहाँ की एक विराट झील है जिसके एक ओर बसा है हैदराबाद और दूसरी ओर सिकन्दराबाद। कुलीवुतुन शाह ने 1512 में अपने राजा को हराकर गोलकोंडा बसाया था, बाद में वर्तमान चारमीनार के आसपास हैदराबाद नगर विकसित हुआ। 1798 में निजाम और ब्रिटिश ईस्ट इन्डिया कम्पनी के बीच सामरिक गठबन्धन के बाद हुसैन सागर झील के पास सिकन्दराशाह के नाम पर सिकन्दाबाद बसा। गंगा-जमूनी संस्कृति के इस नगर में बत्तिनी गौड़ परिवार द्वारा दवा वितरण एक सांस्कृतिक मजबूती की नयी मिसाल कायम कर रहा है। जितना विशाल जनसमूह यहाँ आता है, उसके लिए रोगी के व्यक्तिगत परीक्षण या निदान की संभावना नहीं है। जो रोगी यह मान चुके हैं कि वे दमा या सम्बन्ध रोग से ग्रस्त हैं, वे ही यहाँ दवा लेने आते हैं। मरेल मछली के मुख में डाल कर दी गई दवा के खाने के 45 दिन तक रोगी को एक तालिका के अनुसार ही भोजन करना पड़ता है, परहेज पूरा न रख पाने पर दवा बेअसर रहती है। प्रत्येक रोगी को दवा की छह और खुराक दी जाती है, जो घर जाकर 15-15 दिन के अन्तराल में तीन दिन सुबह लेनी होती है। दवा के चमत्कारिक प्रभाव की पुष्टि अनेक रोगी करते हैं। विशेष बात यह कि बत्तिनी गौड़ परिवार यह श्रम निःस्वार्थ भाव से कर रहा है। रोगी से कोई शुल्क नहीं लिया जाता।

कई शताब्दियों से प्रतिवर्ष दमा(अस्थमा) रोगियों को बत्तिनी परिवार द्वारा दी जाने वाली विश्व प्रसिद्ध निःशुल्क मछली की दवा के वितरण के लिए इस बार एन० चन्द्रबाबू नायडू की सरकार ने व्यापक तैयारियाँ कर रखी थी। मृगशिरा कार्ति की शुरूआत के अवसर पर नगर के नुमाइश मैदान में 8 जून, 2001 दिन शुक्रवार की सुबह 8.30 बजे से शुरू होकर दवा वितरण कार्यक्रम शनिवार 9 जून की सुबह 8.30 बजे तक जारी रहा। लगभग 8 लाख रोगी तथा उनके साथ आनेवाले लोगों के लिए नगरनिगम विभाग, वाटरवर्क्स विभाग ने आवास और पेयजल आदि क सुविधा उपलब्ध कराई। इसके साथ ही आर एंड बी०, आर० टी० सी०, रेलवे और चिकित्सा विभागों ने भी अपनी ओर से पूरी तैयारियाँ कर रखी थी। राज्य के मत्स्य विभाग ने अस्थमा रोगियों के लिए आवश्यक छोटी मरेल मछलियां उपलब्ध कराने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। इस बार नुमाइश मैदान में मत्स्य विभाग ने 42 काउन्टरों के द्वारा छह रुपये प्रति मछली की दर से बेचा। इस बार निजी व्यक्तियों द्वारा मछलियों की बिक्री प्रतिबन्धित थी।

इस प्रकार बत्तिनी गौड़ परिवार ने वरदान में मिली चमत्कारिक मछली की दवा का गत डेढ़ सदी से दमा रोगियों में निःशुल्क वितरण कर जहाँ हैदराबाद का नाम विश्व के मानचित्र पर अंकित किया है वहीं वर्ष भर में इस एक दिन के आयोजन से आन्ध्रप्रदेश की इस सर्वभौमिय नगरी ने सामाजिक व सांस्कृतिक सद्‌भाव का वातावरण उपस्थित करने में सफलता पाई है।

सम्पर्कः रीडर, हिन्दी विभाग, रामलाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय रेल देशवासियों के अन्दर एकता का अलख जगाने में अग्रसर

भारतीय रेल और राजभाषा पर चैन्नै में संगोष्ठी

प्रस्तुतिः आशुतोष मनुज, चैन्नै

भारतीय रेल भारत के विभिन्न भाषा-भाषियों को एक सूत्र में पिरोने तथा देशवासियों के अन्दर एकता और अखण्डता का अलख लगाने में एक अहम भूमिका निभा रही है। ये विचार हैं **विचार दृष्टि** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** के, जिसे उन्होंने **भारतीय रेल और राजभाषा** विषय पर विगत 25 अप्रील, 2001 को चेन्नै में आयोजित एक विचार संगोष्ठी में व्यक्त किए। **राष्ट्रीय विचार मंच** की तमिलनाडू शाखा की ओर से चेन्नै सेन्ट्रल स्टेशन के विश्रामालय में आयोजित संगोष्ठी में **भारतीय रेल और राजभाषा** विषय पर अत्यन्त मार्मिक एवं रचनात्मक आलेख का पाठ करते हुए मुख्य वक्ता सिद्धेश्वर ने कहा कि आजादी की लड़ाई हमने हिन्दी और हिन्दोस्तां के नाम पर लड़ी थी पर आजादी के बाद हमने हिन्दी को राजनीति का तिलक चन्दन लगाकर उन लोगों के जिम्मे कर दिया जिनके सम्भ्रान्त मन के कोने में कहीं-न-कहीं अंग्रेजी भाषा के साथ अंग्रेजियत छिपी हुई थी। हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में भी इसकी खानापूर्ति हो रही है, क्योंकि हिन्दी तुलसी की भांति पवित्र होते हुए भी घर के अन्दर जगह बना पाने में अभी तक असमर्थ है। किन्तु ऐसी स्थिति में भी रेल मंत्रालय स्तर पर गठित **रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति** अपनी नियमित बैठकों के माध्यम से न केवल राजभाषा के भारतीय रेल में कार्यान्वयन के सवाल पर महत्वपूर्ण सलाह दे रही है बल्कि राजभाषा के कार्यान्वयन के प्रत्येक पहलू पर हमेशा सतर्क है। यही कारण है कि भारतीय रेल के हर क्षेत्र में राजभाषा के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार में और तो और दक्षिण भारत के रेलों में भी एक गति देखने को मिलती है जो निश्चित रूप से राजभाषा के सुनहले प्रभात का संकेत है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित तमिल एवं हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर **डॉ० एम० शेषण** ने विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि हिन्दी के प्रयोग के दौरान हमें अपनी उदारता का परिचय देना चाहिए। उन्होंने भारतीय रेल के विभिन्न कार्यालयों से हिन्दी में प्रकाशित पत्रिकाओं की रचनाओं के आधार पर प्रत्येक वर्ष एक **वार्षिकी** प्रकाशित करने की सलाह दी। **विचार दृष्टि त्रैमासिकी** की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि अब वह समय आ गया है जब इस पत्रिका को खुले तौर पर सामाजिक परिवर्तन की बातों को प्रकाशित करना चाहिए। इस पत्रिका को तहेदिल से रचनात्मक सहयोग प्रदान करने का उन्होंने आश्वासन दिया। अपने अध्यक्षीय भाषण में मंच की अध्यक्ष तथा **विचार दृष्टि** के ब्यूरो प्रमुख डॉ० मधु धवन ने कहा कि हर हाल में तुलसी-सी पवित्र हिन्दी को हर घर के आँगन के बीच जगह मिलनी चाहिए। क्योंकि समाज को सही दिशा देने तथा अपने स्वाभिमान की रक्षा करने में हिन्दी हर तरह से समर्थ है। अपने उद्‌गार मे स्टेल्ला मारिस कॉलेज, चेन्नै की हिन्दी विभागाध्यक्ष **डॉ० मधु धवन** ने मानसिक प्रदूषण से मुक्त होने की बात को पत्रिका में स्थान देने की सलाह देते हुए इसे मासिक करने की बात कही। इसके लिए उन्होंने हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया।

संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए आकाशवाणी, चेन्नै के पूर्व सहायक केन्द्र निदेशक **इंदरराज बैद** ने कहा कि हिन्दी मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का माध्यम है। इसलिए हमें आज बड़ी ईमानदारी से इसे लागू करने का प्रयास करना है। स्थानीय जैन महिला कॉलेज की हिन्दी विभागाध्यक्ष **डॉ० विद्या शर्मा** ने कहा कि सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं में हिन्दी को स्थान मिलना चाहिए। चिन्ता का विषय यह है कि हमारे घुटनों पर प्रहार कर हमें दौड़ने को कहा जा रहा है। इस अवसर पर उपस्थित **डॉ० संतोष दीक्षित** ने कहा कि हिन्दी भाषा के साहित्य को विश्वस्तर पर बढ़ाया जाना चाहिए। समाज-संस्कार में होनेवाले आक्रमण को सिर्फ रचनाशीलता ही बचा सकती है।

प्रारम्भ में मंच के सचिव तथा दक्षिण रेलवे के उपमुख्य राजभाषा अधिकारी **आशुतोष मनुज** ने मंच की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए संगोष्ठी के विषय-वस्तु को प्रस्तुत किया तथा दक्षिण रेलवे द्वारा राजभाषा के कार्यान्वयन में किए जा रहे प्रयासों को लोगों के सामने रखा। बाद फिर उसके मंच के राष्ट्रीय महासचिव **सिद्धेश्वर** ने विगत तीन माह में मंच के द्वारा खासकर दक्षिण तथा पश्चिम भारत में किए जा रहे कार्यकलापों पर विस्तार से चर्चा की। संगोष्ठी में और लोगों के अलावा एस० डी० एन० बी० कॉलेज की **जयलक्ष्मी सुब्रह्मण्यम**, तिरुच्चि के राजभाषा अधिकारी **सहदेव सिंह पुरती**, दक्षिण रेलवे के **आई० एस० उपाध्याय, उमाशंकर कुशवाहा** आदि ने भी भाग लिया।

संगोष्ठी के मान्य अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत जहाँ **डॉ० विद्या शर्मा** ने किया, वहीं पब्लिक लाइब्रेरी, चेन्नै की **आर० पार्वती**, मंच की कोषाध्यक्ष ने उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय विचार मंच, आध्रप्रदेश इकाई का हैदराबाद में गठन

राष्ट्रीय विचार मंच, आंध्रप्रदेश इकाई का गठन हिन्दी प्रचार सभा, नाममल्ली में सम्पन्न हुआ। श्री सिद्धेश्वर ने उपस्थित कवियों, साहित्यकारों को सम्बोधित करते हुए मंच के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। डॉ० ऋषभदेव शर्मा ने अध्यक्षता की। नेहपाल सिंह वर्मा ने संचालन किया। मंच के गठन पर हुई चर्चा में एम० उपेन्द्र, डॉ० रोहिताश्व, प्रो० रामबुझावन सिंह, डॉ०राजेन्द्र गौतम तथा प्रो०नेहपाल सिंह वर्मा आदि ने भाग लिया।

सर्वसम्मति से प्रो० नेहपाल सिंह वर्मा को राष्ट्रीय विचार मंच, आंध्रप्रदेश इकाई का संयोजक चुना गया। एम० उपेन्द्र, गोविन्द अक्षय, रत्न कला मिश्रा, विजय विशाल, श्रीमती मंगला अभ्यंकर(दक्षिण मध्यरेलवे के राजभाषा अधिकारी) एवं श्री अरुण कुमार मंडल (अधीक्षक) समिति के सदस्य होंगे। डॉ० ऋषभदेव शर्मा को विचार दृष्टि के ब्यूरो प्रमुख के रूप में मनोनीत किया गया।

प्रस्तुतिः प्रो० नेहपाल सिंह वर्मा, हैदराबाद

मंच की उड़ीसा शाखा भुवनेश्वर में गठित

विचार कार्यालय, भुवनेश्वर

विगत 5 मई, 2001 को साढ़े सात बजे भुवनेश्वर स्टेशन स्थित विश्रामालय में आयोजित विद्वतजनों, रचनाकारों तथा केन्द्र व राज्य सरकार के अधिकारियों-कर्मचारियों की एक बैठक में **राष्ट्रीय विचार मंच** की उड़ीसा शाखा, भुवनेश्वर का गठन किया गया जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी व कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए:-

अध्यक्ष: डॉ० आनन्द प्रकाश, कृषि वैज्ञानिक, 114 सी,सत्यनगर, भुवनेश्वर-751007 (फोन: 520925), **उपाध्यक्ष**: 1. शशि भूषण मिश्र, मंडल कार्मिक अधिकारी, खोरधा, 2. राजाराम, राजभाषा अधिकारी, खोरधा मंडल, दक्षिण पूर्व रेलवे, खोरधा, भुवनेश्वर, **सचिव**: एस० भुवनेश्वर राव, सिनिया ऑडिट ऑफिसर, क्वार्टर न० सी-1/11 यूनिट 4, ए०जी० कॉलोनी, भुवनेश्वर (फोन-402539), **संयुक्त सचिव**: उपेन्द्र, राजभाषा सहायक, राजभाषा अनुभाग, खोरधा मंडल, खोरधा, भुवनेश्वर, **सदस्य**: उषा रानी, राजभाषा सहायक, राजभाषा अनुभाग, खोरधा मंडल, दक्षिण पूर्व रेलवे, खोरधा, भुवनेश्वर, विचित्र मल्लिक, वीजनटेक, टेलीफोन बूथ, 16 ए, स्टेशन स्क्वायर, यूनिट 3, भुवनेश्वर, एन० एन०दास, राजभाषा सहायक, राजभाषा अनुभाग खोरधा मंडल,दक्षिण पूर्व रेलवे, खोरधा, भुवनेश्वर, **कोषाध्यक्ष**: मिथिलेश शर्मा, बी० जे०-49, बी०जे०बी० नगर, भुवनेश्वर-14(फोन-433114)। सर्वसम्मति से इस कार्यकारिणी को यह भी अधिकृत किया गया कि वह विभिन्न क्षेत्रों के आवश्यकतानुसार चार और सदस्यों को मनोनीत कर ले। बैठक की अध्यक्षता **राष्ट्रीय विचार मंच** के राष्ट्रीय महासचिव **सिद्धेश्वर** ने की। प्रारम्भ में उन्होंने मंच के उद्येश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच संवाद स्थापित करने, सौहार्दमय वातावरण का निर्माण करने तथा राष्ट्रीयता की भावना को फैलाने के लिए ऐसे मंच की आवश्यकता है। सर्वसम्मति से **विचार दृष्टि** त्रैमासिकी के ब्यूरो प्रमुख, भुवनेश्वर के लिए मंडल कार्मिक अधिकारी शशि भूषण मिश्रा का चयन किया गया।

आखिर कबतक गिरती रहेगी औरतों पर यह गाज........
मंच की प० बंगाल शाखा द्वारा कोलकाता में विचार संगोष्ठी

प्रस्तुतिः राजकिशोर राजन

भारत सरकार ने वर्ष 2001 को **महिला सशक्तिकरण वर्ष** घोषित किया है। इसी को मद्दे नजर रखते हुए **राष्ट्रीय विचार मंच** की प० बंगाल शाखा ने कोलकाता में **भारतीय महिलाएंः कानून में प्रावधान** विषय पर विगत 26 जून को एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष **सोमदत्त शर्मा 'सोम'** ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि महिलाओं की वर्तमान दशा के लिए जितना जवाबदेह पुरुष है उससे कम जवाबदेह आज की महिलाएं नहीं हैं। सामाजिक कुरीतियों में सुरसा-सी, चाहे बढ़ती दहेज की समस्या हो या वेश्यावृत्ति सभी की पृष्ठभूमि में नारियाँ ही अधिक दोषी दीख रही हैं। इसलिए मात्र अधिकार दे देने से नारी का कल्याण सम्भव नहीं, बल्कि महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति स्वयं सतर्क रहना पड़ेगा, हर क्षेत्र में पुरुष वर्चस्व को चुनौती दे अपना स्थान बनाना होगा।

बी०एन० कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष **प्रो० रामबुझावन सिंह** ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज व देश की प्रगति के लिए महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

संगोष्ठी के निर्धारित विषय **भारतीय महिलाएंः कानून में प्रावधान** पर **विचार दृष्टि** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** ने एक आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि पुरुष प्रधान भारतीय समाज की सामंती व्यवस्था में नारी के प्रगति पथ पर बढ़ते पैरों में जंजीर डालकर उसके हर कदम पर न केवल बाधाएं खड़ी की जाती हैं बल्कि पुरुष उसके साथ दरिंदगी से पेश आ रहा है। आजादी के 54 साल बाद भी महिलाओं की आजादी की छटपटाहट आज बरकरार है। औरत आज कहीं **दीपा मुर्मू** बनी तो कोई **रूप कुँवर** तो कोई **नैना सहनी**। आखिर कबतक गिरती रहेगी औरतों पर यह गाज?

प्रारम्भ में मंच के सचिव **राजकिशोर राजन** ने उपस्थित प्रबुद्ध जनों का स्वागत करते हुए विषय प्रवर्तन किया। आयोजित संगोष्ठी में धनबाद रेलवे मंडल के राजभाषा अधिकारी **नरेश कुमार शर्मा**, पटेल सेवा संघ, कोलकाता के अध्यक्ष **राजेन्द्र राय** केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के **यमुना राय**, **अरुण कुमार सिंह**, **आत्मानन्द सिंह** तथा **सीताराम सिंह** ने भी भाग लिया। संगोष्ठी के दूसरे चरण में सम्पन्न कवि गोष्ठी में महिलाओं की दशा पर **राजकिशोर राजन** ने एक विचारोत्तेजक कविता सुनाई तथा **सोमदत्त शर्मा 'सोम'** के भजन के बाद मंच के कोषाध्यक्ष **अनिल कुमार सिंह पटेल** ने उपस्थित अतिथियों व सुधीजनों के प्रति मंच की ओर से आभार व्यक्त किया।

सम्पर्कः सचिव, राष्ट्रीय विचारमंच
1/ए, राजेन्द्र एवेन्यू, **कोलकाता**

अतिथि साहित्यकारों के सम्मान में हैदराबाद में साहित्य संगोष्ठी

प्रस्तुति : प्रो० नेहपाल सिंह वर्मा, हैदराबाद

गीत चाँदनी के तत्त्वावधान में 6 जून को सायं 7 बजे हिन्दी प्रचार सभा, नामपल्ली के सभागार में देश के विभिन्न भागों से पधारे साहित्यकारों **सिद्धेश्वर**, (पटना) **डॉ० राजेन्द्र गौतम**(दिल्ली), **अवध बिहारी श्रीवास्तव** (कानपुर), **प्रो० राम बुझावन सिंह**(पटना) के स्वागत में हिन्दी प्रचार सभा में साहित्य गोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ। **डॉ० ऋषभदेव शर्मा** ने अध्यक्षता की और **प्रो० नेहपाल सिंह शर्मा** ने संचालन किया। उर्दू शायर **असर गौरी** विशेष अतिथि थे। संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए **विचार दृष्टि** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** ने राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में लघुपत्रकाओं की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला।

कवि गोष्ठी में राधेश्याम गुप्त उज्ज्वल, ज्योतिनारायण, रत्न कला मिश्रा, राम उपेन्द्र, डॉ० ऋषभदेव शर्मा, प्रो०नेहपाल सिंह वर्मा, डॉ० रोहिताश्व, गोविन्द अक्षय, बलवीर सिंह, विजय विशाल, कविता वाचपनवी, सुधीर कुमार, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, असर गौरी के साथ डॉ० राजेन्द्र गौतम, सिद्धेश्वर, अवध बिहारी श्रीवास्तव, रामबुझावन सिंह ने काव्यपाठ किया। **गोलकोण्डा दर्पण** के सम्पादक गोविन्द अक्षय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उर्जान्चल क्षेत्र, सिंगरौली, सोनभद्र(उ०प्र०) में पटेल सेवा समिति की कार्यकारिणी गठित

राष्ट्रीय एकता को सबल बनाने के उद्देश्य को लेकर राष्ट्र निर्माता **लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल** के **विचारों व आदर्शों** को घर-घर तक पहुंचाने के ख्याल से उ.प्र. के सोनभद्र जिला के उर्जान्चल क्षेत्र, सिंगरौली में स्थापित पटेल सेवा समिति की कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी एवं सदस्य संस्था के उद्धेश्यों को कार्यान्वित करने की दिशा में अग्रसर हैं:-1.**अध्यक्ष** :भूल्लन सिंह, बी-58, एन.सी.एल., खड़िया, सोनभद्र 2. **वरिष्ठ उपाध्यक्ष** :डॉ. कुणाल सिंह, अंकुर क्लिनिक, शंकर मार्केट, जयन्त, सी 3. **उपाध्यक्ष** : दिलीप कुमार सिंह, आई-1307, अनपरा तापीय परियोजना, सोनभद्र 4. **महामंत्री** : बृजराज पटेल, एम-131, एन.सी.एल. , बीना, सोनभद्र 5. **उपमहामंत्री** : 1. मिथिला सिंह, एम-228, एन.सी.एल., बीना, सोनभद्र 2. लालजी सिंह, एन. सी.एल., गोर्बी, सीधी,**उपकोषाध्यक्ष**: दिनेश बहादुर सिंह, 6-ए-249, एन.टी.पी.सी., शक्तिनगर 6. **संगठनमंत्री**: 1. प्रकाशचन्द्र कटियार, यूपिको, शक्तिनगर, सोनभद्र 2. रामशकल सिंह, एम-37, एन.सी.एल., ककरी, सोनभद्र 7. ऑडिटर : आर.पी.सिंह, रेणुपावर कम्पनी, रेणु सागर, इ.आर.23, सोनभद्र, उ०प्र०

-बृजराज पटेल, विचार संवाददाता,बीना, सोनभद्र

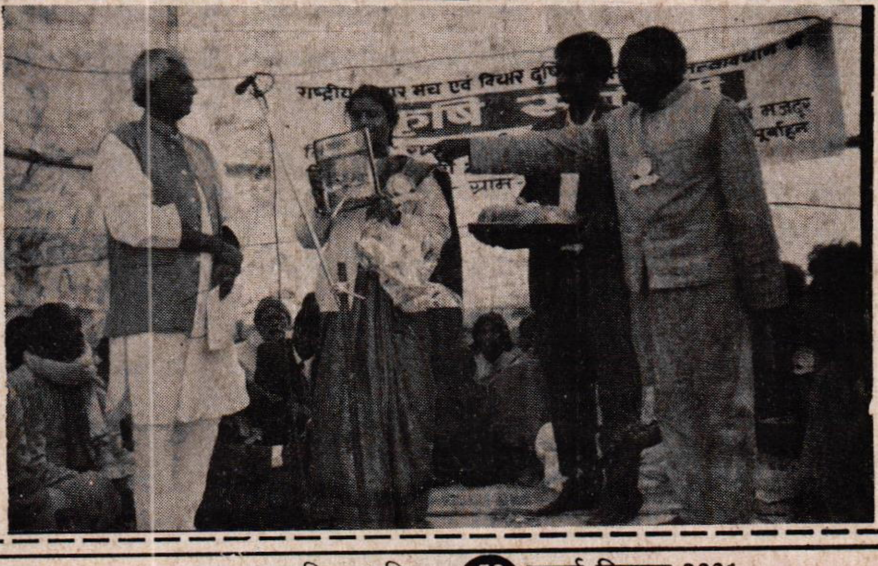

कम्प्यूटर क्रांति और साहित्य-विश्लेषण

❑ पी० आर० वासुदेवन

इसमें तनिक भी संदेह नहीं की इक्कीसवीं सदी में कम्प्यूटर का प्रयोग बहुत ही व्यापक स्तर पर होगा। **"फ्यूचर शौक"** के लेखक ने अपनी **"थर्ड वेब"** नामक पुस्तक में जो अटकलें दी हैं-वे बताती है कि कम्प्यूटर के सघन प्रयोग के दौर में आदमी सिर्फ अपनी कोठरी में ही बैठा मिलेगा उसके व्यक्तिश: सामाजिक संपर्क कट जाएगें तब मनुष्य स्वंयसिद्धि स्थिति में पहुँचकर अकेला उकताया हुआ थका हुआ और बेचैन होगा। आज भी तो अपनी सकीर्णताओं के पिजरे में बंद लोग ऐसे ही हैं। उनका साहित्य से कोई रिश्ता संबंध नहीं है। ऐसे लोगों का तो समाज संपर्क ही कट गया है। यदि गौर से देखा जाए तो मनुष्य की मूल समस्या उसके अपने अस्तित्व से संबंधित है। अपनी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए उसने समय-समय पर अपने ही द्वारा किए गए अविष्कारों को मनोपयोगी बनाने की कोशिश की है। कम्प्यूटर भी उसी श्रृखंला की चीज़ है। थोड़ी गहराई से विचार करें तो कम्प्यूटर अभी मानव विवेक का विकल्प नहीं बना है। उसका संचालन अनेक विधियों से अतत: मनुष्य के ही हाथ है। मनुष्य का विवेक ही उसमें प्रतिगुंजित होता है।

कम्प्यूटर वैज्ञानिक किन्ही राष्टीयताओं और राजनैतिक सकीर्ण दृष्टियों के हाथ बंधक हैं। वे उसका मानक विरोधी प्रयोग कर सकते है। गौरतलब है कि मनुष्य को भयभीत करने का काम कम्प्यूटर कर सकता है लेकिन वह स्वयं किसी अपराध के लिए स्वायत्त हाथ का विकास नहीं करता।

भारत के संदर्भ में कम्प्यूटर क्रांति अथवा कम्प्यूटर युग की बातें करना बहुत कुछ बेमानी सा लगता है। कम्प्यूटर पर चंद सुविधाएँ उपलब्ध कराने से कम्प्यूटर युग नहीं आ जाता। साहित्य तो स्थितियों के बावजूद लिखा जाता है, स्थितियों के कारण नहीं। विश्व के जिन देशों में कम्प्यूटर क्रांति शिखर पर है साहित्य वहाँ भी लिखा जाता रहा है और लिखा जाता रहेगा बिना प्रभावित हुए।

साहित्य का स्वरूप बदल सकता है और लोगों के प्रति एक नई दृष्टि विकसित हो सकती है लेकिन साहित्य का अस्तित्व बरकरार रहेगा। आधुनिक तकनीक के जरिए अनुवाद में आवश्यक गति आएगी।

लोकप्रिय साहित्य चाहे वह पुस्तकों में लिखा हो या दूरदर्शन पर पढ़ा जाए जहाँ तक मानवीय मूल्यों के ह्रास की बात हो उसके लिए जितना उपभोक्ता संस्कृति जिम्मेदार है उतना महाजनी संस्कृति भी जिम्मेदार है। माना कि कम्प्यूटर अपनी कार्यप्रणाली में मनुष्य से भिन्न नहीं है। लेकिन एक तत्व जो कम्प्यूटर में नहीं होता वह है मस्तिष्क में पाई जाने वाली कल्पना शक्ति और भाव प्रणता। लेकिन इस युग की त्रासदी यह है कि मशीन एक स्तर पर मनुष्य को निरंतर हरा रही है और उसे उसी तरह काम करने के लिए बाध्य करा रही है। फिर भी साहित्य मनुष्य और पूरे वातावरण के आपसी संबंधों का बैरोमीटर है और आगे भी रहेगा। इसकी प्रभावोत्पादकता में कोई कमी नहीं आएगी। व्यक्ति के भाव बोध आवेग और संवेग संशोधित तो हो सकेंगे लेकिन प्रभावित नहीं होंगे। मनुष्य की मौलिक प्रवृत्तियों में जो परिवर्तन हो सकेगा वह बहुत कुछ ऊपरी ही होगा। कम्प्यूटर युग में जो साहित्य रचा जाएगा वह निश्चित रूप से अब तक की साहित्यिक परंपरा की ही अगली विकसित कड़ी होगी।

कम्प्यूटर की सहायता से जो साहित्य रचा भी जाएगा वह अपनी यांत्रिकता के कारण विशेष महत्व का नहीं होगा। मनुष्य की मौलिक सृजनशीलता को कोई यत्रं कभी पूर्णत: प्राप्त कर पाएगा यह संभव नहीं दीखता। साहित्य संपर्क की निजी प्रतिभा प्रसत्त साहित्य की विशिष्टता का महत्व जैसे आज है वैसे ही भविष्य में भी रहेगा। यह भी संभव नहीं कि कम्प्यूटर युग का मनुष्य सिर्फ एक निर्जीव यंत्र बन जाएगा। कम्प्यूटर युग में भी उसके द्वारा रचा गया साहित्य उसके लिए प्रासंगिक रहेगा और उसकी नई जीवन पद्धति के अनुकूल होने के कारण नए समाज के लिए प्रासंगिक होगा।

इक्कीसवीं सदी में साहित्य का स्वरूप क्या होगा यह निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। कम्प्यूटर न तो कवि बन सकता है और न ही लेखक/शब्द और साहित्य भी कोई पुरातत्व की चीज़ नहीं बन जाएंगे। साहित्य अपने एक निश्चित उद्देश्य के साथ बना रहेगा। कम्प्यूटर क्रांति कितनी भी तेज क्यों न हो मूल समस्याएं तो वही रहेंगी। आमतौर पर जो परिवर्तन आएंगे वे अन्य किस्म की समस्याएँ पैदा करेंगे। लेकिन साहित्य हमेशा अपनी गति से समाज को अभिव्यक्त करता रहेगा। एक ओर से देखा जाए तो विज्ञान या प्रोद्यौगिकी अपने आप में कोई घटक नहीं है जो कि मानव मूल्यों के पतन के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है। विज्ञान की प्रगति मानव विकास का ही अंग है। यदि मूल्यों का ही पतन हो रहा है तो इसके लिए अन्य कारणों की ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

मूल्यविहिन समाज में तो साहित्य की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। कम्प्यूटर युग के महामानव साहित्य संस्कृति और मानव मूल्यों को कभी निगल नहीं सकते।

भारत में जो ठेठ देसी और वृहत्तर समाज है और जो अपने मूल चरित्र में ग्रामीण, कस्बाई और पारंपरिक है, इसी व्यापक समाज के जीवन अनुभवों, संकटों और स्थितियों को लेकर ही मूल्यवान और महत्वपूर्ण साहित्य लिखा गया है। भारतेन्दु, प्रेमचंद से लेकर रेणु तक इसकी परंपरा रही है। अत: दूरदर्शन के प्रसार उद्योगी के कम्प्यूटरीकरण और महानगरों के विकास, विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी में विकास से इस साहित्य की अस्मिता को कोई खतरा नहीं है। पंत, दिनकर, मिश्र, गुप्त, द्विवेदी, निराला, मुक्तिबोध या माथूर के असंख्य पाठक बाद में भी ऐसे ही साहित्य की खोज करेंगे। इसलिए विज्ञान या कम्प्यूटर इतना भयावह नहीं है बल्कि खतरा विज्ञान के वर्गीय और विरोधी इस्तेमाल से है। विज्ञान साहित्य का महत्व तब भी था आज भी है और सदियों तक रहेगा।

सम्पर्क: 5, टी०पी० कोविल स्ट्रीट,
ट्रिप्लीकेन, चेन्नै - 600005

तहलका डॉट कॉम

❑ डॉ०मोहम्मद उमर

कल शाम एक मित्र मुझे मेरे घर मिले
मंगल-कुशल के बाद वह ये पूछने लगे।
सत्ता के धारकों का कुछ कहिये हाल-चाल
सुनते हैं तहलका ने उन्हें कर दिया बेहाल।
यह तहलका है क्या तनिक मुझको बताइये
क्या कर दिया है इसने, इसे भी सुनाइये।
मैने कहा कि मित्र। तुम आंखें खुली रखो।
अखबार, न्यूज भी जरा देखो, पढ़ा करो।
बन्धु! यह तहलका है क्या जो है, एक वेबसाइट है
घपलों को पेश करने का इसको भी राइट है।
खबरों में आज छाया हुआ इसका नाम है
तहलका डॉट कॉम से प्रसिद्ध तमाम है।
बस इसके एक टेप ने यह गुल खिला दिया
एक ऊँचे घूसकाण्ड से परदा उठा दिया।
आई यह बात कैसी, यह उनकी ही अकल में
एक फर्जी कम्पनी के दलालों के देश में।
दिखलाया इस तरह से इस घूस काण्ड को
हैरान जिसने कर दिया है जेम्स बाण्ड को।
दिखलाई इसने लेते हुए घूस की रकम।
सुनाई लेन-देन की बातें भी दम व दम।
दिखलाया राजनीति के यह ऊँचे दावेदार
कैसे के नाम घूस है लेने को बेकरार।
एक सैम्पूल दलाली का यह इस जमीन पर
दिखलाया 'डॉटकाम' ने यह सब स्क्रीन पर।
सेना की जरूरतों के सामान की खरीद
इस देश में ले आती है दलालों की नवीद।
सैनिक बजट है देश का सत्रह हजार करोड़।
इसमें दलाली खाने की होती है जोड़-तोड़।
कुछ फौज के जनरल,कुछ लीडर व कुछ हुक्काम
हथियारों की दलाली में शामिल हैं बहरगाम।

किस्सा है असल में यह एक आर्म्स डील का
माजी में भी रहा है कुछ इस कबील का।
वो किस्सा-ए-बोफोर्स अभी याद है हमें
दलाली का बोफोर्स अभी याद है हमें ।
बोफोर्स ही का भाई है, देखो ये 'आर्म्स गेट'
जिसको तहलका ने किया, आज अप-टू-डेट।
संक्षेप में तहलका ने तहलका मचा दिया
ऐवान अख्तेदार को जड़ से हिला दिया ।
कुछ फौजी अफसरान भी आये गिरफ्त में।
पार्टी के रहबरान भी आये गिरफ्त में।
गो के वजीर दफा ने अपना दफा किया
नाचार उनके मालिक ने उनको विदा किया।
मैं जानता था लोग मुझे कर देंगे तंग-तंग
कहते हैं आज बात यह साबिक वजीर जंग।
इस काण्ड ने हिला दिया सरकार का ऐवान
बेदार किया हिज्ब मुखालिफ को जो था बेजान।
घूसखोरी, खुर्द-बुर्द और भ्रष्टाचार
होती है उनकी चर्चा खबरों में बार-बार ।
हैरत है इनपर आज क्यूं बावेला मचा है
यह सब हमारी ही कौम की रग-रग में बसा है,
बस चूक हुई इतनी इसकी समझ न आई
इस केस में भी कह देती शामिल है आई०एस०आई।
इन कांडों पे बावेला और हंगामा है बेकार
संतुष्ट रहो कि है यही इस राष्ट्र का किरदार ।

संपर्क : रीडर, उर्दू विभाग, यू० आर० कॉलेज, रोसड़ा (बिहार)

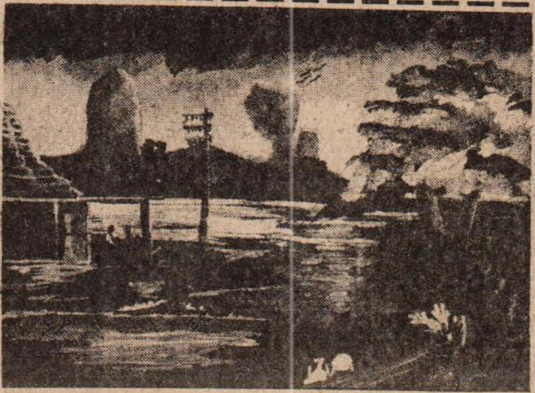

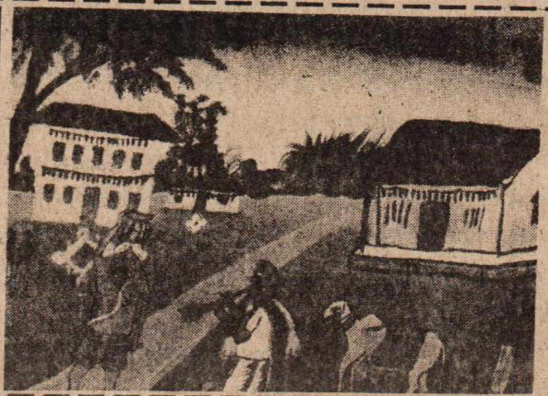

ग़लीच में ज़िन्दा रहने की कला

❑ गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव

हमारी आंखों के सामने
लड़की का अपहरण हो जाता है।
दबंग पंचायत के आदेश से
दलित महिला निर्वस्त्र कर दी जाती है
पुलिस की निर्मम पिटाई से
मुलज़िम दम तोड़ देता है
तंग आकर नवविवाहिता
आग लगाकर आत्महत्या कर लेती है
घोटालों के नामी गिरामी आरोपी
धुआंधार बहस के बाद
मुक्त कर दिये जाते हैं
और जघन्य अपराधों के सौदागर
ऊंचे-ऊंचे आसनों पर बैठ जाते हैं।
हम देखते रहते हैं
यह सारी घटनाएं / दुर्घटनाएं
रोज-रोज निर्लिप्त (?) भाव से
यह सोच कर कि
वह लड़की, वह महिला
वह मुलाज़िम या फिर
वह नवविवाहिता
हमारे घर के नहीं थे
या फिर यह सोच कर कि
हम अपने छोटे से संसार में
सुरक्षित रह रहे हैं
सुबह-शाम की रोटी
खाने को मिल रही है
क्यों व्यर्थ में इन पचड़ों में पड़ें
यह तो होता ही रहता है
और आगे भी होता ही रहेगा
हम या अन्य कोई
कर भी क्या सकता है।
लेकिन इसी प्रकार
अत्याचार / अन्याय की जड़ें
मजबूत होती जाती हैं
हमारी संवेदना की आत्मा
नित्य-प्रति स्वार्थपरता की तलवार से
लहूलुहान होती रहती है
और धीरे-धीरे
यथास्थिति को स्वीकार करते करते
ग़लीच में जिन्दा रहने की कला
हम सीख लेते हैं।

सम्पर्क: सदस्य (प्रशासन)
केन्द्रीय प्रशासनिक प्राधिकरण
अहमदाबाद न्याय पीठ
सरदार पटेल स्टेडियम के सामने
नवरंगपुरा, अहमदाबाद-380009

किसी ने एक दिन कहा था

❑ डॉ० किरणचन्द्र शर्मा

किसी ने एक दिन कहा था,
इस बार,
'नहीं खिलेगा अमलतास।
'खून से लहूलुहान धरती पर
नहीं फूलेगा कोई भी हरा पेड़
और .... दूर-दूर तक बंजर हो जायेगा
सब कुछ ....,
गहराती धूल
हवा, पानी और धूप
सभी को निगल जायेगी एक दिन।'
डूबने लगा था मन
और मैं,
भयभीत हो गया था -
अनचाहे आतंक से / पर -
.... यह क्या हुआ।
दूर-दूर तक छा गयी थी धूल
आकाश व्याकुल था बरसने को
और
घटाएँ छा रही थीं चारों ओर।
आतंक फैल रहा था अभी भी
लहू से सनी धरती को
ढके था अंधेरा आकाश
और मैं
भयभीत था अभी भी
बहुत-बहुत व्याकुल था मन।
पर तभी उस खुले आकाश के नीचे
उसी सबके भीतर
एकाएक हँस पड़ा अमलतास।
गहरी हरी पतियों के बीच
अंगारे से खिल उठे फूल जो,
उस लीलते वातावरण में भी
हँस रहे थे मेरी ओर।
आश्वस्त हुआ मैं
कनखियों से मैंने कहा
देख रहे हो तुम।
यह खिला अमलतास देख रहे हो
फैल गयी एक मधु-मुस्कान
और ....
एका-एक मुझे लगा
भयभीत नहीं हूँ मैं।
गहरे आतंकित पर्यावरण में
जैसे खिल रहा था अमलतास
मुझे लगा जैसे ....
कोई बता रहा है मुझे वहाँ
जहाँ
जीवन है और
लहूलुहान धरती के भीतर भी
जहाँ -
फूट रही है शस्य-श्यामला
फसल।

**सम्पर्क : डी० 766, जन कल्याण मार्ग
भजनपुरा, दिल्ली-53**

बुज़दिली का नाम न दे

❑ डॉ० यशवंत सिंह

किसी ने खंजर से लिख भेजा है-
परवाना हमारी मौत का।
ऐ खुदा! जल्लादों से कह दे-
कोई इसे अंजाम न दे।
बापू के बंदरों की तरह बैठे हैं हम
कोई हमें बुत होने का इल्ज़ाम न दे।
अंधा, बहरा, बेदर्द है हाकिम हमारा
कोई इसे बुज़दिली का नाम न दे।
गूंगों की बस्ती है, लंगड़ों की धंधागिरी
यहाँ
अब और किसी काहिल को लंगड़ाने का
अरमान न दे।

**सम्पर्क: 'नशेमन', सती स्थान,
मसौढ़ी, पटना**

विकासोन्मुखी शिक्षा में नाटक की भूमिका

❑ हरिवंश नारायण

19वी सदी के उतरार्ध (1850-1900) में समाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आन्दोलन के फलस्वरूप हिन्दी साहित्य में नई चेतना आई। भारतेन्दु इस नवीन आन्दोलन के अग्रणी थे। भारतेन्दु के समय तक साहित्य का माध्यम गद्य नहीं था। इस समय के लेखकों की दो विशेषताएँ थी:-

1. सब में हिन्दी की सेवा का उत्साह था।

2. सब की भाषा-शैलियां एक-दूसरे से काफी दूर थीं।

शैलियों में भिन्नता आज भी है, किन्तु भाषा का एक स्थिर स्वरूप मजबूती से विकसित हुआ है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने बोल-चाल की भाषा के आधार पर हिन्दी गद्य को व्यवहारिक रूप दिया। वे नाटक में इस भाषा के प्रयोग करने वाले पहले नाटककार थे।

नाटक एक ऐसा साहित्य-रूप है जिसमें रंगमंच पर पात्रों के द्वारा किसी कथा का प्रदर्शन होता है। यह प्रदर्शन अभिनय, दृश्यसज्जा, संवाद, नृत्य, गीत आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

भारतीय आचार्यों के अनुसार नाटक के तीन प्रमुख तत्व हैं:- 1. वस्तु 2. नायक 3. रस

किन्तु अब नाटक के छह तत्व माने जाते हैं :-

1. कथावस्तु 2. पात्र 3. कथोपकथन 4. देशकाल 5. उद्देश्य और 6. शैली

आजादी के बाद भारत की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ धीरे-धीरे बदलती गई, क्योंकि देश की जवाबदेही देशवासियों पर आई। आजादी प्राप्त करने में आन्दोलन का लम्बा सफर तय हुआ। इस सफर में नाटक ने अहम भूमिका निभायी। जब आजादी की लड़ाई चरमोत्कर्ष पर थी, समाज के हर क्षेत्र में और हर वर्ग में नाटक / नुक्कड़ नाटक/लोक नाट्य की परम्परा विकसित हुई। कारण था- समाज को एक सूत्र में बांधकर संगठित करना और संघर्ष की राह पर चलने के लिये शिक्षित करना। उस दरम्यान नाटक का जो भी स्वरूप सामने आया, वह क्रांतिकारी था, जिसमें देश-भक्ति, त्याग, बलिदान, समप्रण तथा बहादुरी की छाया थी।

उदाहरण के तौर पर **'भारत दुर्दशा'** नाटक को देखा जा सकता है। यह नाटक भी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा विरचित था। खड़गपुर के हिंदी क्लब **'भारती मंडल'** द्वारा यह नाटक सन् 1923 में खड़गपुर राष्ट्रीय विद्यालय में खेला गया था। नाटक के शीर्षक से ही पुलिस घबरा गयी थी तथा सदर अनुमंडल के अनुमंडल अधिकारी स्वंय बल के साथ नाटक देखने चले गये।

नाटक के प्रथम दृश्य का सार

एक संयासी-ब्रिटिश सरकार सभी तरह की सुविधाएं प्रदान कर रही है तो अभी भारत का सभी धन विदेशों में जा रहा है। ब्रिटिश सरकार उपर से देखने में साफ-सुथरी लगती है, लेकिन अंदर से मैली है।

दूसरे दृश्य का सार

पात्र-यह वही देश है जिसके नायकों द्वारा घोषणा की जाती है कि बिना लड़े सूई की नोंक बराबर जमीन भी किसी को नहीं देगा, वही देश अब इतना कमजोर हो गया है कि यहां सिर्फ मुर्दो को गाड़ने की जमीन छोड़कर कुछ नहीं है। स्वर्ग में बैठकर देख रहे लोकमान्य तिलक हमारी मदद करें! जेल की चहारदिवारियों में बंद बापू-राह बतावें !

इस प्रकार नाटक के दृश्य आते गये। **डॉ०श्री कृष्ण सिंह** नाटक में आमंत्रित थे। विद्यालय के प्रधानाध्यापक **द्वारका प्रसाद** तथा **डॉ० श्री कृष्ण सिंह** पर राजद्रोह का मुकदमा चला। स्मरण होना चाहिए कि 13 सितंम्बर 1923 को मुंगेर में एक आम सभा हुई जिसमें लगभग 250 व्यक्तियों ने हिस्सा लिया तथा **'भारत दुर्दशा'** नाटक को जगह-जगह खेलने का फैसला लिया गया। इस प्रकार यह नाटक एक क्रांतिकारी औजार बन गया। यह नाटक 40 वर्षों से हिंदी भाषियों के बीच पाठ्य-क्रम के माध्यम से पढ़ाया जा रहा था। पटना कॉलेज में भी यह नाटक 1906-1908 के आस-पास खेला गया था। समाज का कोई भी व्यक्ति नाटक से आन्दोलित हो जाता था। यही कारण है कि पूरा देश एक सूत्र में बंध गया। परिणामस्वरूप अंग्रजों को भागना पड़ा और देश को आजादी मिली।

आजादी के बाद जो समय गुजर रहा है, वह आर्थिक विकास का है। हमनें उद्योग, टेक्नोलॉजी, कृषि तथा अन्य संसाधनों के विकास में अपनी अच्छी पहचान बनाई है और विकास के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर क्रान्ति भी आई है। इतना होने के बावजूद, अभी भी विकास की किरणें पूर्ण रूप से उन गांववासियों तक नहीं पहुंच पा रही हैं जिनका सम्पर्क विकास की राह से टूटा हुआ है। उस टूटे हुये राह को जोड़ने के लिये तथा उस पर विकास के पुल बनाने के लिये नाटक/नुक्कड़ नाटक/फोक थियेटर का सहारा लेने की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

ग्रामीण क्षेत्र के विकास में बैंक की भूमिका अहम बन गई है। ग्रामीण विकास हेतु ही पूर्व प्रधानमंत्री **श्रीमति इन्दिरा गाँधी** ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया था। समग्र विकास हेतु उन्होंने सन् 1975 में 20-सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की थी। इन सूत्रों में समय-समय पर संशोधन हुये तथा 119 उप-सूत्र भी निर्धारित किये गये। इन उप सूत्रों की मदद से समाज के अन्तिम पंक्ति के आदमी भी अगली पंक्ति में आ सकते हैं। अन्तिम आदमी के पास मेहनत करने की क्षमता है, लालसा है, कूबत है तथा उनमें इरादें हैं। यदि उन इरादों को ठीक ढंग से पकड़ लिया जाय तो वे आसानी से विकास की मुख्य धारा में प्रवेश कर जायेंगे। इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति हेतु **सांस्थिक वित्त एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन विभाग** ने नाटक और फॉक थियेटर जैसे साधनों को विकसित करने की कोशिश की है। इस कोशिश में समाज के लेखकों/नाटककारों/थियेटर निर्देशकों की जवाबदेही तथा भूमिका बढ़ गई है।

समाज को शिक्षित करने, विकास के प्रति जागरूकता पैदा करने, अधिकारबोध की शिक्षा देने, संगठन बनाने तथा संघर्ष के लिए ताकत पैदा करने में नाटक/नुक्कड/नाटक/फोक थियेटर सफल औजार बन सकते हैं, इसमें संदेह नहीं।

सम्पर्क: एम/39, महात्मा गांधी नगर, बहादरपुर, पटना-20

....जहाँ धर्म और जाति की कोई दीवारें नहीं
वहीदा को लाइफ टाइम एचीवमेन्ट
ऋतिक सर्वश्रेष्ठ अभिनेता

दक्षिण अफ्रीका के खुबसूरत शहर सनसिटी में आयोजित **इन्टरनेशनल इन्डियन फिल्म अकादमी** पुरस्कार के शानदार समारोह के दौरान भारतीय फिल्मों की मशहूर अदाकारा **वहीदा**

रहमान को **लाइफ टाइम एचीवमेन्ट** एवार्ड से सम्मानित किया गया। जबकि पहली ही फिल्म से अपने नाम का डंका बजाने वाले करोड़ों दिलों की धड़कन **ऋतिक रोशन** ने **सर्वश्रेष्ठ अभिनेता** का खिताब अपने पास ही रखा है।

समारोह के जन्म की दूसरी वर्षगांठ पर जोहान्सबर्ग के निकट सनसिटी में आयोजित इस पुरस्कार समारोह में मानों सारे सितारे जमीं पर उतर आए थे। इन्हीं जगमगाते सितारों के बीच हिन्दी फिल्मों में मील का पत्थर माने जाने वाली गुजरे जमाने की **गोल्डन गर्ल** और अभिनय **वहीदा रहमान** जब लाइफ टाइम एचीवमेन्ट पुरस्कार प्राप्त करने मंच पर आयीं तो उपस्थित समुदाय ने उनके सम्मान में खड़े होकर तालियां बजायीं। वहीदा ने अपने उद्गार में कहा कि **उन्हें भी फिल्म उद्योग का एक भाग होने में गर्व है क्योंकि यहाँ धर्म और जाति की कोई दीवारें नहीं हैं।** हिन्दी फिल्मों की प्रख्यात अभिनेत्री **शबाना आजमी**

ने कहा कि वहीदा ने अन्य अभिनेत्रियों से अलग छाप छोड़ी है। सिल्वर जुबली **कहो न प्यार है** ने **सर्वश्रेष्ठ फिल्म** का पुरस्कार जीतकर जहाँ अपनी लोकप्रियता का सबूत दिया, वहीं इस फिल्म से सुपरहिट हुए राकेश रोशन के सुपुत्र ऋतिक रोशन ने भी **सर्वश्रेष्ठ अभिनेता** के अपने खिताब को बरकरार रखा। **करिश्मा कपूर** को फिल्म **फिज़ा** में उत्कृष्ट अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के खिताब से नवाज़ा गया। **जया बच्चन** को **फिज़ा** के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री व मेगास्टार **अमिताभ बच्चन** को **मोहब्बतें** के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

विचार संवाददाता, मुम्बई

विवादों से घिरी फिल्म "दमन"
महिला की दमन से मुक्त होने की कथा

श्रेष्ठ अभिनेत्री **रवीना टंडन** के राष्ट्रीय पुरस्कार से विवादों में आई फिल्म **दमन** का वर्ल्ड प्रीमियर शो पिछले 4 मई को न्यूयार्क लंदन, एमस्टर्डम के

अलावा मुंबई, दिल्ली और असम में एक साथ हुआ। फिल्म के संगीत निदेशक और प्रोडक्सन डिजायनर फ्री ने घोषित किया है तथा दिल्ली सरकार भी इस पर विचार कर रही है। उनका मानना है कि इस फिल्म का मुख्य मकसद घरेलू हिंसा की बुराई के विरुद्ध जागरूकता फैलाना है। फिल्म की कहानी एक ऐसी महिला की है जो विवाहेतर बलात्कार की पीड़ित है।

यह फिल्म एक निरीह महिला की दमन से मुक्त होने तक की यात्रा कथा है। केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रायोजित तथा राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा वित्त प्रदत इस फिल्म की अभिनेत्री रवीना टंडन को श्रेष्ठ अभिनेत्री राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है जिसपर विवाद उत्पन्न हो गया था। किन्तु **डॉ० हजारिका** ने इस पुरस्कार को सही ठहराते हुए कहा है कि रवीना टंडन को उसके कठिन रोल के लिए यह पुरस्कार मिलना ही था क्योंकि रवीना इस फिल्म के मुख्य चरित्र **दुर्गा सोकिया** में पूरी तरह समा गई।

हेमामालिनी चीन जाना चाहती हैं
अपनी नृत्यमंडली के साथ

हिन्दी फिल्मों की सुप्रसिद्ध अदाकारा तथा प्रख्यात नृत्यांगना **हेमामालिनी** अपनी नृत्यमंडली के साथ **चीन** इसलिए जाना चाहती हैं कि वहाँ कला, संस्कृति और सांस्कृतिक कार्यक्रम तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। फिल्म **शोले** में अपनी भूमिका के लिए चीन में बेहद लोकप्रिय हेमामालिनी राष्ट्रीय फिल्म विकास की अध्यक्ष की हैसियत से चार-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ चीन के महानगर शंघाई के दौरे पर गई हुई हैं। चीन की अपनी पहल यात्रा पर टिप्पणी करते हुए हेमा ने कहा कि वह तेज़ी से विकास कर रहे **शंघाई** शहर और यहाँ के लोगों के उत्साह से काफी प्रभावित हुई हैं।

"हम्माम में सभी नंगे होते हैं"

बुश की नाबालिग बेटी जेना शराब की शौकीन

❑ शशि रंजन

चोरी छुपे शराब तो अधिकतर पीते हैं। खास तौरपर अधिकांश प्रख्यात हस्तियां तो तनाव कम करने के लिए **अँगूर की बेटी** का ही सहारा लेती हैं। बड़े-बड़े राजनेताओं व नौकरशाहों के लाड़ले को अक्सर शराब के नशे में धुत्त अपराध करते पाया जाता है, ये सभी जानते हैं। पर **"हम्माम में सभी नंगे होते हैं,"** शायद इसलिए वे खामोश रहना ही बेहतर समझते हैं। बात तो तब बिगड़ जाती है, जब किसी हस्ती की अपनी औलाद ही घर परिवार की इज्जत को ले डूबती है।

बात जब दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका के मुखिया जॉर्ज बुश के घर से सम्बन्धित हो तो सबकी निगाहें खास तौर से उस तरफ बढ़ जाना स्वाभाविक होगा। अब देखिए, अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश की 19 वर्षीया **पुत्री जेना**, जो ऑस्टिन के टेक्सास विश्वविद्यालय में प्रथम वर्ष की छात्रा है, एक नाईट क्लब में पिछले दिन शराब और शराबियों के साथ पकड़ी गयी। यह मामला तब पकड़ में आया जब आस्टिन की पुलिस शहर की मशहूर ईस्ट सिवस्थ स्ट्रीट पर नाबालिग बच्चों को शराब के पकड़ने का अभियान चला रही थी। पुलिस ने बुश की पुत्री और 21 साल से कम उम्र की अन्य लड़कियों से पूछताछ की। उनका मामला दर्ज कर लिया गया है लेकिन गिरफ्तार नहीं किया गया। शुक्र है यह

अमेरिका है जहाँ मामला कम से कम दर्ज तो किया गया। शुक्र है यह अमेरिका है जहाँ मामला कम से कम दर्ज तो किया गया। भारत में तो वह भी नहीं हो पाता। खबर है कि जेना को एक सप्ताह तक सामाजिक काम करने की सजा सुनाई गयी है।

राष्ट्रपति निवास **व्हाइट हाउस** ने इस घटना पर यह कहते हुए टिप्पणी करने से इन्कार कर दिया कि वे इस बच्ची की निजी जिन्दगी की इज्जत करते हैं। पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति की अंधी दौड़ में शामिल होकर भारत की हस्तियों की औलादों की निजी जिन्दगी की इज्जत क्या इसी प्रकार नहीं की जा रही है?

आपको याद होगा कि कुछ समय पहले इसी प्रकार ब्रिटेन के शाही घराने के 18 वर्षीय नाबालिग प्रिंस एडवर्ड भी खुले आम शराब पीते पकड़े गए थे। शराब के नशे में एडवर्ड ने खूब हंगामा किया था जिसकी ब्रिटिश मीडिया में जबरदस्त आलोचना हुई थी। इस प्रकरण के बाद शाही घराने की प्रतिष्ठा पर भी आँच आ गयी थी।

विकसित देशों के बड़े घरानों ने यह कैसी संस्कृति अपना रखी है जिसकी नकल आज भारत के धनाढ्य परिवार के नाबालिग सदस्यों ने खुले तौर पर करना प्रारम्भ कर दिया है। कुछ तो विचार करना होगा कि आखिर हम जा कहाँ रहे हैं। पश्चिमी देशों की संस्कृति भले वैसी रही हो किन्तु भारत की परम्परा, यहाँ के मूल्य और मर्यादाएं तो प्रतिष्ठित और गर्व करने लायक रही हैं। क्या इस अपसंस्कृति से बचने के उपायों पर हम विचार नहीं कर सकते?

अमेरिका की प्रथम महिला 50 खुबसूरत लोगों में एक

अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश की 54-वर्षीय पत्नी **लॉरा बुश** को विश्व के 50 सबसे खुबसूरत लोगों में चयन किया गया है। किसी भी अमेरिकी राष्ट्रपति की पत्नी को पहली बार यह गौरव मिला है। अमेरिकी **पिपुल्स पत्रिका** द्वारा तैयार विश्व की सबसे खुबसूरत व्यक्तियों की सूची हॉलीवुड के सितारों में जुलिया राबर्टस, जॉर्ज क्लूने, जेनीफर लोपेज, हिदर लॉकलियर, एड हेरिस तथा रेनी जेलवेजर आदि हस्तियों शामिल हैं। इसके अतिरिक्त ऑस्कर अवार्ड से नवाजे गए क्रावचिंग टाइगर हिडेन ड्रैगर में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाली अभिनेत्री झांग जियी का भी नाम उस सूची में है।

देश की अन्य महिलाओं की तरह श्रीमती बुश भी अपने पर्स में एक लिपस्टिक, हेयर ब्रश रखती हैं।

नेपाल के शाही परिवार की हत्या की गुत्थी अनसुलझी

❑ सुधीर रंजन

काठमांडू के **नारायण हिती** राजमहल में विगत 1 जून की काली रात नेपाल के शाही परिवार की निर्मम हत्या से नेपाल ही नहीं भारत के साथ सारा विश्व स्तब्ध है। कहा जाता है नेपाल के **महाराजा स्व० वीरेन्द्र विक्रम देव शाह** की गद्दी के उत्तराधिकारी युवराज दीपेन्द्र ने नेपाल के पूर्व मंत्री **पशुपति शमशेर सिंह राणा** और **उषाराजे** की पुत्री **देवयानी** से विवाह से सम्बन्धित विवाद को लेकर अपने सभी परिजनों की हत्याकर खुद को गोली मार ली। हत्या की जाँच की गई समिति का भी मानना है कि दीपेन्द्र ने ही हत्या की। लेकिन इसकी रपट के निष्कर्ष सभी संदेहों का निराकरण करने में असमर्थ रही है। अनेक पहलू ऐसे हैं जो इस सारे घटनाक्रम को शक के घेरे में लाते हैं जैसे राजा और रानी का शव बिना दर्शनार्थ रखे ब्राह्मणों द्वारा अन्तिम संस्कार करवा दिया जाना, अन्तिम सम्मान के लिए किसी विदेशी राजनयिक की पहुँच न होने देना, नेपाल के प्रधानमंत्री व उपप्रधानमंत्री की पहले चुप्पी, फिर विवादास्पद बयान, मौके पर उपस्थित किसी गवाह का बयान न देना, पहले युवराज को हत्यारा घोषित करना, फिर बयान बदल देना, अन्य देशों के मीडिया प्रतिनिधियों को नेपाल में प्रवेश करने से रोकना आदि। यह प्रश्न अभी भी अनुत्तरित है कि आखिर युवराज दीपेन्द्र ने स्वयं को गोली कैसे मारी? युवराज ने आत्महत्या की अथवा उनकी हत्या की गई? सरकारी जाँच रपट में अब तो यह भी कहा जा रहा है कि दिवंगत नरेश वीरेन्द्र ने उस रात ऐन मौके पर अपने पुत्र दीपेन्द्र पर गोली चलाने का प्रयास किया था, जब वह शाही परिवार के सदस्यों पर अंधाधुंध गोली चला रहा था। दिवगंत नरेश वीरेन्द्र की बहन शोवाशाही के हवाले से सरकारी स्वामित्व के नेपाली दैनिक **गोरखा पत्र** में कहा गया कि जाँच पैनेल के समक्ष दिए गए बयान के अनुसार शोवा शाही मौके की नजाकत नहीं भांप पायीं और उन्होंने अपने भाई नरेश वीरेन्द्र के हाथ से हथियार छीन लिया तथा उससे गोलियाँ निकाल लीं।

इस पूरे मामले में यही सब तो सबसे जटिल और रहस्य भरे सवाल थे, जिसकी महत्ता को जाँच समिति ने अनदेखी की। जाँच समिति के निष्कर्ष में कहा गया है कि दीपेन्द्र ने अपने परिवार के सदस्यों की हत्या में तीन प्रकार के हथियारों का इस्तेमाल किया। किन्तु प्रश्न यह है कि आखिर नशे में धूत कोई व्यक्ति एक साथ तीन हथियारों का इस्तेमाल कैसे कर सकता है? जाँच समिति यह बताने में भी असफल रही कि युवराज दीपेन्द्र ने किन कारणों से अपने पूरे परिवार का सफाया कर दिया? यह जो चर्चा है कि दीपेन्द्र अपने विवाह सम्बन्धी फैसले से क्षुब्ध थे उस पर जाँच समिति बिल्कुल मौन रही। इसमें तनीक सन्देह नहीं कि यह समिति सच्चाई की तह तक नहीं पहुँच सकी। नि:सन्देह यह कोई अच्छी बात नहीं होगी कि शाही परिवार की हत्या का रहस्य, रहस्य बना रहे और इस रहस्य की गुत्थी अनसुलझी रह जाए। इन सभी परिस्थितियों के मद्दे नजर यह कहा जा सकता है कि नेपाल के राजमहल में की गई शाही परिवार की हत्या न केवल एक नरसंहार था, बल्कि राजतन्त्र पर गहरा और दीर्घकाल में विनाशकारी सिद्ध होने वाला हमला भी हो सकता है।

बेनजीर भुट्टो को भ्रष्टाचार के मामले में तीन वर्ष की कैद

विचार कार्यालय, नई दिल्ली

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो को एक झटका तब लगा जब विशेष भ्रष्टाचार रोधी अदालत के न्यायाधीश रूश्तम अली मलिक ने भ्रष्टाचार के एक मामले में जारी सम्मन के जवाब में उपस्थित न होने की वजह तीन वर्ष की सजा सुनायी। बेनजीर पर यह मामला राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो(एनएबी) द्वारा आय से अधिक सम्पत्ति अर्जित करने के सिलसिले में दायर किया गया था। बेनजीर के देश से बाहर होने के कारण उन्हें पुलिस गिरफ्तार करने में असफल रही इसलिए बेनजीर को घोषित अपराधी करार देकर उनके खिलाफ इस मामले में स्थायी वारंट जारी कर दिया गया है।

अपने पति के साथ बेनजीर पर भ्रष्टाचार के कई मामले दर्ज हैं लेकिन पिछले वर्ष अप्रैल में सर्वोच्च न्यायालय के उस फैसले को रद्द करके फिर से मामले की जाँच प्रारम्भ करने को कहा था जिसमें बेनजीर और उनके पति को दोषी करार देकर पाँच साल की सजा सुनायी गयी। थी।

क्या नेपाल में माओवादियों का शिकंजा बढ़ता जा रहा है?

❑ संजय सौम्य

नेपाल के राजमहल में हुई शाही परिवार की हत्या के बाद राजशाही की भूमिका भी कमजोर हो सकती है। वैसे भी कोइराला सरकार की शांति-व्यवस्था पर पकड़ कमजोर होती जा रही है और वह स्वयं भ्रष्टाचार एवं शिथिलता के आरोपों से घिरी हैं। नेपाली जनमानस की उद्वेलित और निराश मनोदशा से माओवादी उग्र समूहों के प्रभाव में आने की सम्भावना गति पकड़ सकती है। नेपाल में वामपंथियों की शक्ति को देखते हुए पिछले कई वर्षों से यह कहा जा रहा है कि अगर वे एकताबद्ध हो जायं तो उन्हें सरकार में आने से कोई रोक नहीं सकता। दूसरी ओर पिछले पाँच-छह वर्षों से नेकपा(माओवादी) की हथियारबन्द गतिविधियाँ लगातार बढ़ती जा रही हैं और खबर है कि नेपाल के 35 जिलों में उनका प्रभाव है। कई थानों पर माओवादियों द्वारा कब्जा जमा लेने की घटनाओं के बावजूद नेपाली पुलिस उनसे निपटने में असमर्थ साबित हो चुकी है। और नेपाल की कोइराला सरकार की **राजा वीरेन्द्र** से शाही सेना की मदद माँगने पर राजा ने इंकार कर दिया था।

नेपाल के मीडिया में माओवादियों को काफी स्थान मिलता है। आज के नेपाल में भूमिगत माओवादी विद्रोहियों का बढ़ता हुआ असर एक बड़ी समस्या है। नेपाल के माओवादी विद्रोहियों के प्रमुख नेता और हाल ही में नेपाल के दैनिक अखबार कांतिपुर में प्रकाशित अपने लेख के लिए बहुचर्चित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र बाबूराम भट्टराई अतिवादी और उग्रविचार के हैं। इन्हीं के लेख छापने के कारण **कांतिपुर** के सम्पादक **युवराज घिमिरे** को राजद्रोह के जुर्म में पिछले दिनों गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था। दिवंगत राजा का अन्तिम संस्कार **तेरहवीं** सम्पन्न होने के साथ ही वहाँ की सामान्य होती जिन्दगी में माओवादियों ने हिंसक वारदातें कर पुनः अशान्त करने का प्रयास किया। प० नेपाल की एक पुलिस चौकी पर दो सौ से ज्यादा माओवादियों ने हमला बोल उठे पुलिसकर्मियों को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर कर दिया और सारे हथियारों पर विद्रोहियों ने कब्जा कर लिया।

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि नेपाल में वहां की सरकार लोकतान्त्रिक संस्कृति की जड़ें जमा पाने में नाकाम रही है। यहां स्वतन्त्र मीडिया का अभाव है। राजतन्त्र की जनता से दूरी बढ़ती जा रही है जिसके परिणामस्वरूप राजा की सारी सद्इच्छाएं बेमानी होकर रह गई हैं। यही कारण है कि एक तरह से नेपाल में माओवादियों का शिकंजा वहां के हर क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है। एक तरह से कहा जाए तो देश के एक हिस्से में माओवादियों की समानान्तर सरकार के शासन चल रहे हैं। नेपाल के ताजा घटनाक्रम की वजह से राजशाही पर भी लांछन लगा है। नेपाल में **राजा कोई गलती नहीं कर सकते** किन्तु इस वीभत्स घटना ने सारी मान्यताओं को हिलाकर रख दिया है और पूरे देश में तनाव, हिंसा, राजनैतिक दलों में सन्देह और ताजपोशी के खिलाफ युवकों में आक्रोश को देखते हुए ऐसा लगता है कि वहां की सरकार की डोर विदेशी ताकतों के हाथों है। माओवादी ने आशंका जाहिर की है कि यह हत्याकांड वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था का अंत होने का संकेत है।

नेपाल की अकेली कुमारी कन्या जिसे साक्षात जीवित देवी माना जाता है

❑ ज्ञानेन्द्र नारायण सिंह

भारत का पड़ोसी देश नेपाल एक ऐसा देश है जहाँ की एक कुमारी कन्या को साक्षात जीवित देवी माना जाता है और उसे कुमारी के नाम से सम्बोधित किया जाता है। देश के महाराजा प्रत्येक वर्ष एक बार उसके पास जाकर उसका आशीर्वाद लेते हैं और देश के हजारों पर्यटक उसे निहारने प्रति वर्ष वहाँ आते हैं।

नेपाल की राजधानी काठमांडू में विराजमान इस जीवित देवी की पूजा यहाँ हिन्दू और बौद्ध समान भाव से करते हैं। उसके जैसी श्रद्धा और सम्मान देश में किसी और के पास नहीं है। वर्तमान देवी का देवत्व इस के अन्त तक सर्वाधिक श्रद्धा और सम्मान से युक्त इस स्थान पर बनी रहेगी क्योंकि उनकी आयु लगभग बारह वर्ष है और बारह वर्ष पूरा हो जाने के बाद उस देवी का देवत्व काल समाप्त हो जाता है। वर्तमान देवी 4 वर्ष की उम्र में आज से आठ वर्ष पूर्व जीवित देवी बनी थी। ऐसा माना जाता है कि बारह वर्ष की आयु के बाद कुमारी का शारीरिक परिवर्तन प्रारम्भ हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप ज्यादातर कुमारियां निर्धारित कार्यकलापों में कोई रुचि नहीं दिखातीं या असहज रहती हैं। जीवित देवी का देवत्व काल के दौरान कड़े अनुशासन का पालन करना पड़ता है। वह एक वर्ष में अपने आवास से तेरह से ज्यादा बार बाहर नहीं जा सकती। वह पैदल नहीं चलती। जब भी वह बाहर जाती हैं तो वह या तो किसी की पीठ पर सवार होती है या विशेष तौर पर तैयार पालकी में बैठती है जिसे दो बालक ढोते हैं। उसके बाहर जाने पर दो गणेश और भैरव के रूप में उसके आगे-आगे चलते हैं जिनकी आयु 14 वर्ष से कम होती है। यह देवी विशेष रूप से तैयार एक आवास में रहती है जबकि ये दोनों बालक अपने-अपने घरों में रहते हैं किन्तु इन दोनों बालकों को देवी के आवास के पास ही बागमती और विष्णुमती नदियों के बीच में ही रात गुजारनी पड़ती है। इसका तात्पर्य यह है कि ये दोनों बालक रात में काठमांडू शहर में ही रहेंगे।

वर्तमान देवी का देवत्व काल एक सितम्बर में समाप्त हो रहा है। इसलिए उस दिन एक उत्सव के तहत उसे एक रथ में बैठा कर सारे शहर में घुमाया जाएगा और इस रथ को सैकड़ों लोग खींच रहे होंगे। इस अवसर पर महाराजा ज्ञानेन्द्र विक्रम शाह, उनके मंत्री, विभिन्न देशों के राजदूत और उनके विदेशी पर्यटक नेपाल के वासियों के साथ जीवित देवी कुमारी की इस यात्रा में शामिल होंगे।

देवयानी : एक प्रेमिका जो बदकिस्मत निकली

❑ सुनीता रंजन

कांग्रेसी सांसद **माधवराव सिंधिया** और केन्द्रीय मंत्री **वसुन्धरा राजे** की बड़ी बहन **उषाराजे** तथा नेपाल के पूर्व मंत्री **पशुपति शमशेर सिंह राणा** की 32 वर्षीय बेटी **देवयानी** नेपाल के शाही परिवार के हादसे के केन्द्र में आ गई क्योंकि नेपाल नरेश वीरेन्द्र व महारानी ऐश्वर्य के बेटे युवराज **दीपेन्द्र** देवयानी से विवाह करना चाहते थे। कहा जाता है कि महारानी **ऐश्वर्य** देवयानी को अपनी पुत्रवधु नहीं बनाना चाहती थी कारण कि देवयानी का परिवार और ऐश्वर्य के मायके के बीच रिश्ते कड़वे थे। महारानी को यह भी एतराज था कि देवयानी उम्र में दीपेन्द्र से बड़ी है।

देहरादून वेलहैम्स गर्ल्स स्कूल की छात्रा रही देवयानी बाद में बैंगलूर के निकट रिशी वैली स्कूल में पढ़ी थी। बताया जाता है कि वहाँ की पूर्व छात्राएं देवयानी को **हंसमुख** तथा **अलमस्त** लड़की कहती है। 1993 में देवयानी ने दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज से राजनीतिशास्त्र में बी० ए०(आनर्स) किया और वहां भी चकाचौंध से वह दूर रही। दूसरों की तरह वह रेल से ही सफर करती थी। फिर भी भव्य व्यक्तित्व की मलिका महारानी ऐश्वर्य देवयानी के व्यवहार से खुश नहीं थी। दीपेन्द्र के चाहने पर भी उसके माता-पिता देवयानी से विवाह रचाने को कतई राजी नहीं थे। महारानी की नाराजगी पर दीपेन्द्र ने असंयमित होकर जैसा कि राजमहल के सूत्र जोर देकर कहते हैं कि युवराज दीपेन्द्र ने अपनी माँ पर लांछन लगाए और बड़बड़ाने लगे। तब महाराजा को नहीं रहा गया और तेज स्वर में अपने दो एडीसी को बुलाकर दीपेन्द्र को उनके कमरे में ले जाने को कहा। कहा जाता है कि अपने कमरे में शराब और चरस पीकर वहां पड़े मंहगे स्फटिक तथा चीनी मिट्टी के सामान तोड़ डाले। यहाँ तक कि अपनी प्रेमिका की तस्वीर को भी उन्होंने नहीं छोड़ा, उसे भी तोड़ डाला। खबरें हैं कि उस दौरान सेलुलर फोन से देवयानी के सेलुलर फोन पर अपनी प्रेमिका से दीपेन्द्र ने बात भी की थी। इसी के बाद तो सारी घटनाएं घट गयीं और क्रोध, प्रेम, शराब और चरस का मेल घातक सिद्ध हुआ।

नेपाल के राजमहल का यह कैसा रिवाज कि उसके शिष्टाचार के मुताबिक युवराज दीपेन्द्र को नशे की हालत में भी उन्हें रोकने की हिम्मत कोई नहीं कर सकता। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार वहाँ उपस्थित लोगों ने हैरान होकर युवराज का रास्ता छोड़ दिया। हाँ, वर्तमान नरेश ज्ञानेन्द्र के गरम मिजाज बेटे पारस ने दीपेन्द्र का रास्ता रोकना चाहा लेकिन दीपेन्द्र ने उन्हें धकेल दिया और फिर अंधाधुंध गोलियों की बौछार से वह सब कुछ हो गया जिसे सारी दुनिया ने अप्रत्याशित कहा।

अब सवाल यह उठता है कि जो बेटा अपनी प्रेमिका से इतना प्यार करता था उसके माता-पिता के इतना विरोध का एक कारण यह था कि महारानी ऐश्वर्य के पूर्वजों ने पशुपति के पूर्वजों से खूनी लड़ाई लड़ी थी। दोनों परिवारों के बीच 1940 के दशक तक भयंकर लड़ाई हुई, जब राणा प्रधानमंत्री पद के लिए उनके प्रमुखों-चन्द्रशमशेर और जुद्धशमशेर के बीच चुनाव हुआ। देवयानी की रगों में चन्द्रशमशेर का खून है, जबकि ऐश्वर्य जुद्धशमशेर परिवार से थीं। विरोध का दूसरा कारण यह बताया जाता है कि महारानी ऐश्वर्य ने हाल में अपनी पुत्रवधु बनाने के लिए एक दूसरी खुबसूरत लड़की **सुप्रिया शाह** को पसन्द किया था, जो रॉयल नेपाल आर्मी के ब्रिगेडियर जनरल(सेवानिवृत) प्रदीप विक्रम शाह की बेटी हैं। सुप्रिया की दादी **राजमाता रत्ना** की बहन थी। दीपेन्द्र की बहन श्रुति सुप्रिया के साथ काठमांडू के सेंट मेरि स्कूल में साथ पढ़ी थी। इसलिए वह अपने भाई की शादी अपनी सहेली सुप्रिया से कराना चाहती थी और यह उन्होंने दीपेन्द्र से स्पष्ट कर दिया था। किन्तु दीपेन्द्र ने देवयानी के सवाल पर किसी भी कीमत पर झुकने से इंकार कर दिया था। दीपेन्द्र की नाराजगी तब और बढ़ गयी थी जब 1 जून से कुछ सप्ताह पहले श्रुति सुप्रिया को राजमहल ले आई।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि दीपेन्द्र देवयानी से निरन्तर मिलते रहते थे। 2000 में सिडनी में आयोजित ओलिम्पिक, जिसमें नेपाली दल के प्रमुख के रूप में दीपेन्द्र गए थे, देवयानी ओलिम्पक देखने गुपचुप सिडनी पहुँच गई थी। दोनों को अक्सर लंदन में देखा जाता था। काठमांडू में दोनों को खुले आम मिलते देखा जाता था। 1 जून की रात्रि भोज के वक्त दीपेन्द्र के विलम्ब से पहुँचने का अंदाजा लगा लेने के बाद महारानी ऐश्वर्य का गुस्सा भड़क गया और बेटे से काफी नोकझोंक के बाद जो कुछ हुआ वह नेपाल के इतिहास में एक दुःखद अध्याय बन गया। प्यार को सचमुच अंधा कहा गया है वह शतप्रतिशत सही है। आखिर देवयानी के प्यार ने ही तो एक जीते-जागते शाही परिवार का अन्त कर दिया। क्या नेपाल के शाही परिवार में घटी इस ऐतिहासिक घटना से आधुनिक युग के माता-पिता पाठ लेंगे?

बुश के सर्वाधिक प्रिय व्यक्ति हैं उनके पिता

अमरीका के राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने राष्ट्रपति बनने के बाद अपने पांच महीने के शासन में पहली बार अपने पिता जॉर्ज बुश के बारे में सार्वजनिक रूप से वक्तव्य देते हुए अपने जीवन का सर्वाधिक 'प्रिय' व्यक्ति बताया है। स्लोवेनिया रेडियों से शनिवार को प्रसारित अपने भाषण में अमरीकी राष्ट्रपति ने रविवार को 'फादर्स डे' पर सभी अमरीकी नागरिकों को हार्दिक बधाई दी और कहा कि उन्हें अपने जीवन में पिता से अनमोल तोहफे के रूप में 'असीम प्यार' मिला है। श्री बुश ने कहा, 'मुझे इस बात का एहसास तब हुआ जब मैंने पहली बार अपनी बेटियों को गोद में लिया।' श्री बुश ने कहा, 'मुझे मिलने वाली सबसे अधिक महत्वपूर्ण उपाधि 'डैड' का सम्बोधन है।' अपनी पत्नी लारा बुश के साथ दिये गये संयुक्त भाषण में श्री बुश ने कहा, 'बहुत से अमरीकियों को यह विश्वास है कि उन सभी के पिता उनके जीवन में आए सर्वाधिक 'प्रिय' व्यक्ति हैं, लेकिन मेरे बारे में यह बिल्कुल सही है।' भाषण के दौरान 19 वर्षीय जुड़वां पुत्रियों जेना और बारबरा के पिता जॉर्ज डब्ल्यू० बुश ने पिता बनने पर होने वाली खुशी और माता-पिता द्वारा बच्चों के सामने सही उदाहरण रखे जाने को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा, 'मेरे पिता अब भी इस बात का ख्याल रखते हैं कि उनके सभी बच्चों को यह पता लगे कि वह हमें कितना प्यार करते हैं।' लारा बुश ने भी अपने भाषण में अपने ससुर के साथ बिताये गये यादगार क्षणों को ताजा करते हुए उनसे जुड़े कुछ संस्मरणों का खुलासा किया। उल्लेखनीय है कि श्री बुश यूरोप की पांच दिन की यात्रा के अंतिम पड़ाव के तहत स्लोवेनिया में है।

पृष्ठ-55 का शेषांश............नेपाल की कुमारी कन्या...

वर्तमान देवी का देवत्व काल अगस्त के अन्त तक समाप्त होने के कारण नई कुमारी कन्या की खोज प्रारम्भ हो गई है। यहाँ पुजारी इन दिनों मौजूदा देवी का स्थान दिलाने के लिए तैयारी में जुटे हैं। जीवित देवी बनने की शर्त यह भी है कि कन्या के माता-पिता काठमांडू के 19 खण्डों में से किसी एक में परम्परागत ढंग से बने पैतृक मकान में रहते हों, कुमारी बनने के लिए चुनी गई कन्या को कई कठिन और डरावने परीक्षणों से गुजरना होता है और यह परीक्षण इतने भयानक होते हैं कि बड़े लोग भी इनसे भय खाते हैं।

किन्तु इसका दुर्भाग्य पहलू यह है कि इतने कठिन और भयावह परीक्षणों से गुजरने के बाद जिस कुमारी को जीवित देवी माना जाता है और जिसके देवत्व काल की समाप्ति पर काठमांडू में शानदार रथ-यात्रा समारोह का आयोजन होता है जिसमें लाखों पर्यटकों को नेपाल की राजधानी आने पर करोड़ों डॉलर की आय नेपाल सरकार की होती है, उसी जीवित देवी का देवत्व काल समाप्त होते ही नेपाल सरकार लगभग उसे भूल जाती है। कई शिकायतों के बाद सरकार द्वारा स्थापित न्यास ने देवत्व काल समाप्त वाली कुमारी का गुजारा भत्ता बढ़ाना तय किया है। अब उसे पचास डॉलर प्रति माह मिलते हैं जो आज की मंहगाई को देखते हुए बहुत कम है।

सम्पर्क : दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

देश का नाम रौशन करनेवाले 181 खिलाड़ियों को विशेष पुरस्कार

मल्लेश्वरी को सबसे अधिक 6.75 लाख रुपये

विचार कार्यालय, दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में देश का नाम रौशन करनेवाले कुल 181 खिलाड़ियों को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में पिछले दिनों केन्द्रीय वित्त मंत्री **यशवंत सिन्हा** द्वारा नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह में सिडनी ओलंपिक में कास्य पदक जीतनेवाली के **मल्लेश्वरी को** पुरस्कार की सबसे बड़ी राशि के रूप में 6 लाख 75 हजार रुपये प्रदान किए गए। **खेल** मंत्री **उमा भारती** ने खिलाड़ियों की तरफ से आगामी पंच वर्षीय योजना में खेलों के लिए **अलग से बजट** रखने का अनुरोध वित्त मंत्री से किया तथा **खेल को** समवर्ती सूची में शामिल करने की बात प्रधानमंत्री से की है। इस अवसर पर थल, समुद्र और आकाश में साहसिक कार्यकलाप करनेवाले पाँच उत्कृष्ट प्रदर्शकों को पहली बार **राष्ट्रीय साहस पुरस्कार** प्रदान किए गए।

विशेष पुरस्कार पाने के बाद अव्वल निशानेबाज जसपाल राणा अपनी सुपुत्री देवांशी से चुम्बन प्राप्त करते हुए प्रसन्नचित्त मुद्रा में अपनी पत्नी के साथ

सड़क छाप चोर से विश्व हैवीवेट चैम्पियन बना हाशिम रहमान

विचार खेल संवाददाता, दिल्ली

मुक्केबाजी की दुनिया में प्रवेश करने से पहले **हाशिम रहमान** ने पूर्वी वाल्टिमोर की सड़क पर अपराधों के जगत से नाता जोड़ रखा था। ऑटो चोरी और नशीली दवाओं के वितरण के आरोप में उसे कई बार गिरफ्तार भी किया गया था तथा अन्य कई मामलों में अदालत में भी दस्तक देनी पड़ी थी। इन सबसे यह स्पष्ट था कि वह एक अंधी राह का मुसाफिर बन चला था। पर कौन जानता था कि सड़क छाप चोर अपनी इच्छाशक्ति की दृढ़ता की बदौलत हाल ही में **लेनाक्स लेविस** के हाथों से **विश्व हैवीवेट चैम्पियन** का ताज छीनकर मुक्केबाजी का बादशाह बन जाएगा।

नब्बे के दशक के शुरूआती दौर में रहमान ने अपने दो अस्थायी रिंका और तीन स्पीड बैग पर मुक्के बरसा कर तथा प्रसिद्ध मुक्केबाज **मैक लुईस** के नियमों को आत्मसात कर अपने जीवन को सफलता की कहानी बना दिया। बगैर तराशे गए हीरे की तरह के अपने प्रतिद्वंदी से अचंभित बटलर ने रहमान को रिंग में अपनी कला को निखारने की सलाह दी। बस क्या था रहमान ने अपने 82 वर्षीय प्रशिक्षक मैक लुईस के खेल के उन नियमों को आत्मसात कर लिया जिसे लुईस ने आज भी अपने जिम के दरवाजे पर जड़ रखा है-'**कोई नशीली दवा नहीं, शराब नहीं, धूम्रपान नहीं, किसी के लिए कोई निन्दनीय बात नहीं।**' मैक लुईस ने स्मृति को ताजा करते हुए कहा कि मैंने जो कुछ करने को कहा उसने किया। उसके पास पैसे नहीं थे और मुझे कुछ चाहिए भी नहीं था क्योंकि उसे प्रशिक्षित करना बड़ा आनन्ददायी था। वह बेमिसाल बनकर सामने खड़ा हुआ। हमारे कोई बच्चे नहीं थे लेकिन हाशिम ऐसा व्यक्ति है कि उस जैसे कोई भी अपने बच्चे के रूप में पसन्द करना चाहेगा। मैं उसे प्यार करता हूँ।

कभी सड़क छाप ठग के रूप में जाना जाने वाला रहमान आज विश्व हैवीवेट चैम्पियन बनकर करोड़ों का मालिक बन बैठा है। तीन बच्चों का पिता रहमान एक सच्चा मुस्लिम है। जमीन से जुड़ा साफ परिप्रेक्ष्य वाला और आध्यात्मिक किस्म का वहमाज आदमी हो गया है। खेल की दुनिया वाले खिलाड़ी इस रहमान से क्या सीख लेगें, जो बिना शराब, बिना धूम्रपान के खेलना पसन्द ही नहीं करते?

महानतम बनने की ओर तेंदुलकर अरबपति बन गए

❑ दीपक कुमार

क्रिकेट की मासिक पत्रिका **विसडन** के एक आकलन के अनुसार **मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर** का बल्ला अगर इसी तरह रन उगलता रहा तो अगले दस साल में वह 20480 रन बना लेगा और इनमें 81 शतक शामिल होंगे। तेंदुलकर इस समय औसतन प्रति वर्ष 12 टेस्ट मैच खेलते हैं। विसडन ने सचिन के 28 वें जन्मदिवस पर लिखे एक लेख में शीर्षक दिया था-**महान तेंदुलकर महानतम बनने की ओर।** विसडन ने लिखा कि औसत के लिहाज से सचिन अभी भी डॉनब्रैडमैन से कम हैं, लेकिन उसका औसत अन्तर कम होता जा रहा है। ब्रेडमैन का 28 साल की उम्र में 3849 रनों के साथ औसत 98.69 था।

तेंदुलकर जितनी तेजी से रन बटोरते हैं उससे कहीं अधिक गति से पैसे बटोरते हैं। पिछले एक दशक में तेंदुलकर भारत के सबसे धनी क्रिकेटर थे; लेकिन अब वे दुनिया के पहले अधिकारिक अरबपति क्रिकेटर बन गए हैं। अभी हाल ही में सचिन तेंदुलकर ने वर्ल्ड टेल के साथ अगले पांच साल के लिए विज्ञापन का करार किया है जिसमें उन्हें 100 करोड़ रुपये प्राप्त होंगे। यह करार जितनी रकम में हुआ है वह अगले पांच साल में पूरी भारतीय टीम की कुल आमदनी से भी ज्यादा है। यह तेंदुलकर की विश्वसनीयता है कि किसी ने उनकी ओर उँगली नहीं उठाई है। पिछले पांच साल में सचिन ने पेप्सी, एडिडास, एम आर एफ, होम ट्रेड सहित दुनिया के कई मशहूर ब्रांडों के मालिक हैं। निश्चित रूप से पिछले पांच साल के करार के दौरान मैस्करहेंस की कम्पनी को कमाई हुई है तभी उन्होंने तेंदुलकर के साथ करार का नवीकरण किया है।

आस्ट्रेलियाई खिलाड़ी तो पैसे के मुद्दे पर हड़ताल तक की धमकी दे डालते हैं। सचिन की तो सिर्फ अपनी मेहनत का पुरस्कार मिला है। जिम्बावे के विकेप कीपर बल्लेबाज विश्व का दूसरा सर्वाधिक अच्छा बल्लेबाज एडी फ्लावर सचिन के बारे में बताते हैं कि वे गेंद पर हमला करने में विश्वास करते हैं। बतौर कीपर मैन देखा है कि उनका संतुलन टाइमिंग और नजर सभी कुछ कमालकी है। सहज तकनीक से खेलते रहे हैं। मेरे विचार से सहज तकनीक ही उनकी सबसे बड़ी ताकत है।

दुनिया के सबसे अच्छे बल्लेबाज होने के नाते सचिन ढाई करोड़ डॉलर के आदमी हैं। सचिन जो अर्जित कर रहे हैं, उसके वे अधिकारी हैं। दुनिया में जहां कहीं भी जाइए, वह सितारे की तरह दिखेंगे।

सम्पर्क : ग्राम+पत्र०-बसनियावाँ, नालन्दा (बिहार)

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)

दूरभाष 65769, फैक्स 65123

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस, (रूपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज पटना 800004

दूरभाष–662837

आधुनिक आभूषण के निर्माता नए डिज़ाइन, शुद्ध सोने चाँदी के तथा
हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश, राजीव एवं सुनील

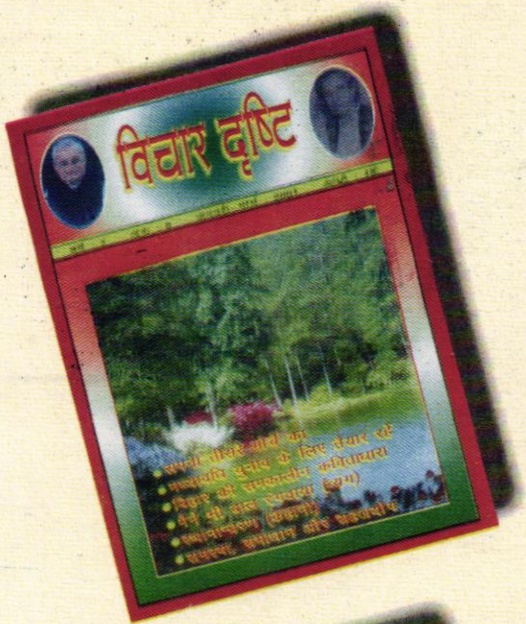
विचार दृष्टि

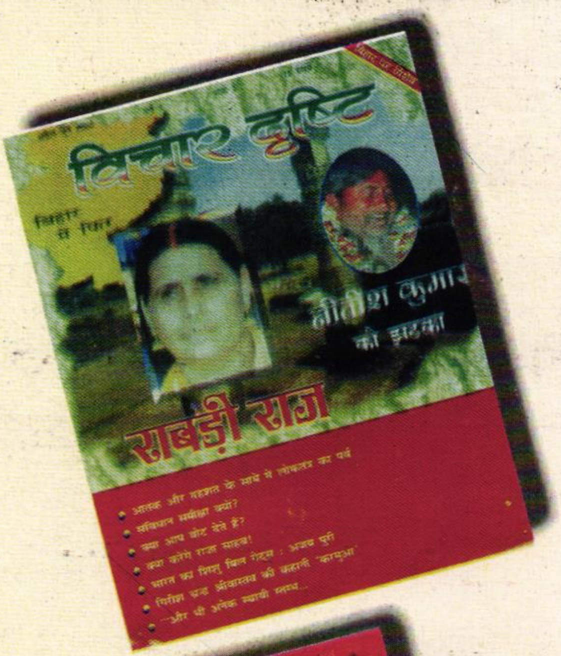
विचार दृष्टि
नीतीश कुमार
राबड़ी राज

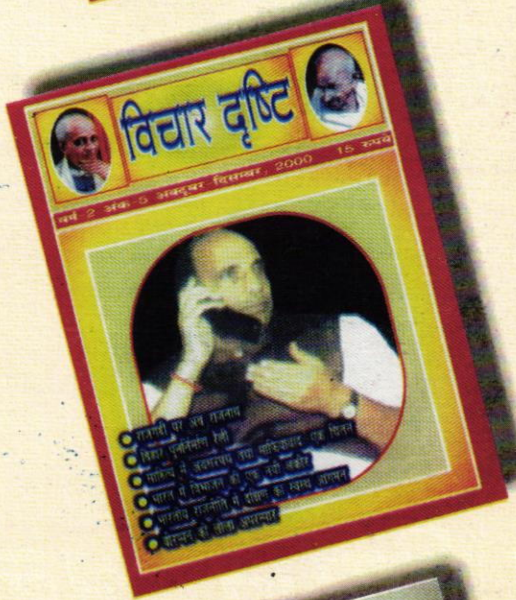
विचार दृष्टि
2000 15 रुपये
वर्ष 2 अंक 5 अक्तूबर दिसम्बर

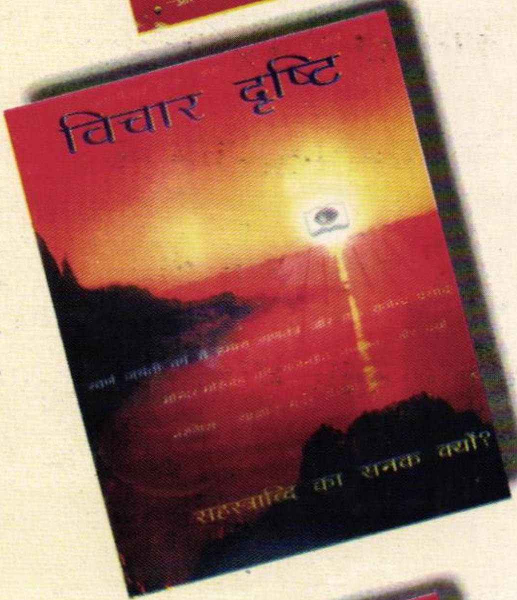
विचार दृष्टि
सहस्राब्दि का सनक क्यों?

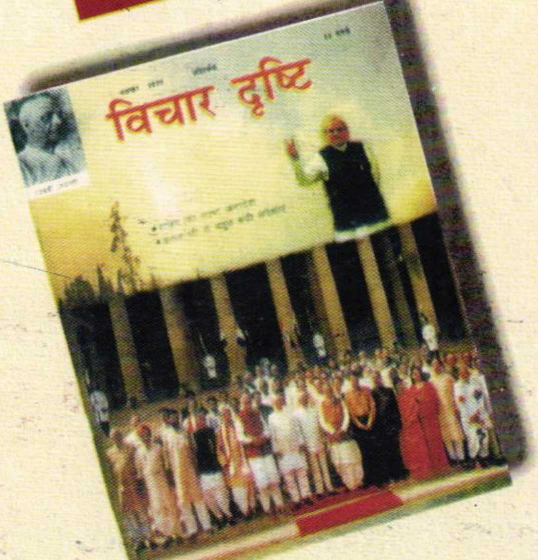
विचार दृष्टि

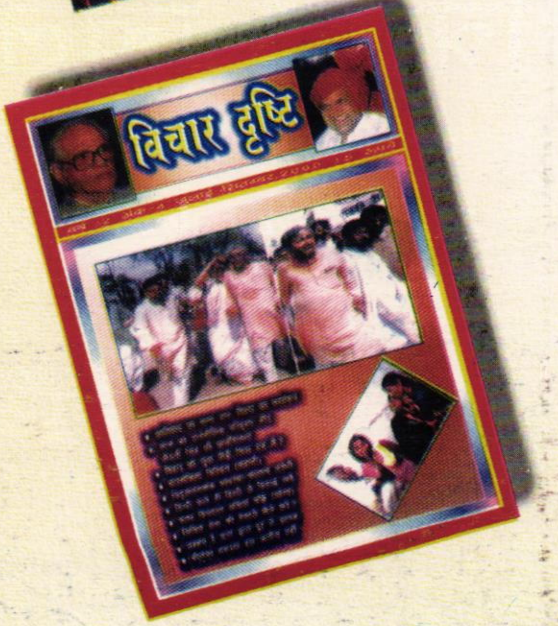
विचार दृष्टि

R.N.I.Regd.No.DEL HIN/1999/791

Soul and Vein of Electronic Existence

Distribution Products :

- Cabinets
- CD Rom Drives
- Floppy Disk Drives
- Hard Disk Drives
- Key Boards
- Multimedia Kits
- Zip Drives

intel. SONY

iomega. MEDALIST SAMSUNG Challenge the limits BARRACUDA

ACER CREATIVE CHEETAH Seagate

KUMARTEK COMPUTERS

U-208, Shakarpur, Behind Bank of Baroda, Delhi-110 092
Ph.: 011-2230652 Fax-011-2225118, (Mob.) 9810229265
E-mail- shashibhushankumar@usa.net
sudhir-ranjan@usa.net

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा ई-50, एफ. एफ. सी., झंडेवालान, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड, एक्स-47, ओखला, फेज-2, नई दिल्ली-20 से मुद्रित। -सम्पादक: सिद्धेश्वर